

नेन'बेन'ङ्गिस'ख्न'नविन'नुवे'न्नव'ङ्गिन' नुडेन'ग्रे'कुस'ॲवे'ख्रु'नुडन्स्।



अस्पाया विष्या क्षा अक्षेत्र विष्या अस्पाया के विष्या

सर्केन् निर्दरके सम्मन्य निरुद्ध ।	
कु'ग्र-कु'कुष'र्वश्र'वर्ह्र्न्'या	
ग्राम्याम्याम्याम् म्यान्यान् विष्यान्यम् म्यान्यम् विष्यान्यम्	गुद्धद
ন্ত্রি'বর্ডর'র্ম'বার্ম'ই'র্মুর'বর্ডর'বর্শন্ত্রী'ক্রুঅ'র্বম'বইর্শ্ব 1	3
क्रॅंशक्तितास्त्रस्थास्य स्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्य स्यान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्यान्त्रस्	
ক্রুম'ন্নশ'নিই্ব'মা	4
कूशः मिता वि.बूट ते थे तथ्य थे अधिर देर यर की मिता	
रवशःव€्राय	6
र्दिन् श्रुद्दात्र शात्र मुद्दारा देश स्ट्रित् ग्री मुत्य स्वर्शन्दा हैं	新 ·
हे द्रमय थ्रव अ हे निप्त इर या रा स्त्रीय या भी भूरा 1	02
न्धयाय्वन्याञ्चाय्वेव्यक्तिः श्रीः यान्द्रास्ययाः श्रीः भ्रीस्	16
स्यानेनामा स्वरमा ग्रीमा द्राप्त स्वरम्	
ক্রুঅ'ব্রম'শ্রী'শ্লীবা	55
रेव'शुरश'रावे'र्भेरा	12
ग्रिक्षामान्त्रीयान्त्रा कुषास्राम्य हे मा दिवामान सँग्रास है मा 2	32
عر <u>ة جي المنابع المنا</u>	63

र्थेव से रा

वि.क्वी. प्रक्रमा व्याप्त क्ष्में प्रक्षेत्र अस्त्र प्रक्षेत्र अस्त्र प्रक्षेत्र प्रक्

शेर-श्रून-न्यर-व्रह्य-न्वुह्य-नर्शेन्-न्यय-ग्रीश

देन'न्द्रें अ'वेद'न'क्स्थ्र'श्र्'य'द्र्गें श्र'द'द्र कुट्'क्र्य'देव'्येट'ट्र'य्रथ'र्छेग् इ'क्रु'व्युट्र' marjamson618@gmail.com

おおうつきていていきましていることでは、

क्रिंग गुन्स शुक्ष मिन का मिन

अयः व्या अयः भी विष्यः अर्थः विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयः विष्यं विषयं विषयं

(३व) श्रु ध ने म्नू ग ग स ह उ हूं ग है हे ध ग भे हैं म ख ठं मे हु हूं व ठं ध्रु ध्रु व ह म म से हू हूं म मे से हु श म से हो ग उ द्वा हिमानद्वाद्वाद्वारां स्त्रीत्रां स्वाध्यां स्वाध्यां

(३न) ख्रु खु डू स डू हु न न र हूं धः म न न से हूं कर न न म व हैं नदेश्यित नदेशों स्वर्गा स्वर्गा विवाद के हैं हैं न न र हूं धः म न न से हूं कर न न से हूं नदेश्यित नदेशों स्वर्गा स्वर्गा विवाद के हैं से म न हैं हैं न न से हूं कर म न न से हूं कर गुन के स्वर्गा म के स्वर्ण स्वर्गा म के स्वर्ण स्वर

(८व) ग छे प कु धु ५ ५ ५ ६ ५ न १ ५ कु दू न ग हू कु

(५५)न् न हु इ ये या थ थ रैं वे या या तु र र व व हू थ है र स थ हे हूं ने के ज ह ड या रें हे या क्ष व थ वे हू य हे ह ज क्ष ना। सर्दर्भेगान्त्रमास्वर्ध्याची प्रयोग्नियोग्नियात्राय्यात्रम्थात्र क्ष हे ह ज क्ष ना। सहर्द्भेगानेन स्थाने क्ष क्ष क्ष या थ थ रैं वि या तु ह स व ह ह थ है र सहर्द्भेगानेन स्थाने क्ष क्ष क्ष या थ थ रैं वि या या तु ह स व ह स व ह

तै तुर्यः संवेदः विदेश्यद् । जुर्यः स्वाद् । विद्यः उदः स्वाद्यः । सूर्यः विद्यः विद्

यदे हिंद यदे र कुष पदे पश्च राम इपादे रापदा में दे गुर विद सकें गा सिव्यान हे व्यापित व्यासित व्यापित व्यापित स्थान बेशन्त्रें त्र इस ग्राह्म । कुषान गुरु न्दें साम के साम हो निहान न्रीमायहेन्स्रियहेर्स्तिर्यूर्ये प्रायुर्धित्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र ग्विया वि:विदेखुगास्व अविव पदि सूर न उवा विस्य (६व) अर्गेव हैं। धि'यर र्क्षे'न वर रेवि र्क्षेत्र वर रेवा रेवि र्क्षेत्र राज्या नवि राज्या वरि सामा वि बुर्यायान्यताम् अरावर्यान् याप्याम्यान् । विरायाः स्व के या विरायाः स्व विरायाः स्व के या विरायाः स्व के या विरायाः स्व निव्देश्यायम् । विव्यायेत्रिन्य अर्दे न्यो म्यायेत्र यदर श्रुद्र नर्गे द्वेद नवर हुं हैं सिंग । सद वुद रेंद पव अर्केग फुं ह्व धरानस्याय। क्रि.स्रेर.खरार्ट्ययायाक्रीयायाद्वेयायाद्वेयाया विस्रशाम्त्रेराविरासकेंगान्स्रम् गाठवामित्रं मित्रास्त्रे । । सामुद्रियस्या अर्गेवर्पयाथ्वरक्षर्भः क्षेत्राचित्रा विष्याथ्वर्भः क्षेत्राक्षर्भः क्षेत्राचित्राचेत्राचेत्राचे न्न । श्चानवे तनन सेवाय सन्नि रावे क्रिंग नि नि स्वानि । विश्वेत सेवे वि यः देवार्यः प्रशादग्रीटः श्रेवः प्रदे। । येवार्यः चन्दः वात्र्यः ग्रीः प्रश्नुटः वाव्रयः ह्रीः व्यव उवा । वाद र वाव या ग्राद र दि हैं वा वसे वा । वा स्वया द्या संवे । र्श्वे द्राकुषायद्राद्राय्या । क्रिश्च क्रेर्य स्ट्रियाश्चायः स्ट्रियाश्चित्रः स्ट्रियाश्चायः स्

कु'न्र'कु'कुय'रनश्नहिंद्र'य।

विश्वानाई न्यदे न्वान्य ग्री न्द्र न्त्र म्यान्य न्यान्य न्याय न्यान्य न्यान्य न्याय्य न्याय्य न्याय्य न्याय्य न्याय्य न्याय न्याय्य न्याय्य

क्रेंनशःदेःस्रासेद्रायश्यद्राप्त्रायः भूत्र्य्यस्यवार्यायः पदेःद्वद्रशःशेःकुषः र्सेदे-इ-र्ने के श्रेन्या मुख्या श्रे मिंद्र से खुना न ह्रा नदे कुया न तु दस निर्मादि हिर्गी नक्ष्र्वाम देवारी के विष्मु न्रावहरू मदे वर्षे निर्मा येग्रयान्यान्याये न्याये विष्यान्याये विषया विषय यगासे। ने प्यत्यवृत्ति वित्यसेया न न्ता प्यत्यम् न नुस्य स्वि वेत् सि वे षरशरादे में र पहें व श्री हिंव पा सरद श्रुर नदे सु य में केव में विवा य रवा सुरा राया दे द्वेता की दें द्वाराया ग्राम्य वारा रेवाया राया सुरा र्वाया रेवा ८८। वक्कर्रर्रा युर्भेर्रे पात्रेवाश्रास्थ्याविवाश्रास्था वश्रावाद्यः वी'श्रश्राचक्ष्रश्रश्राचर'यह्दायश विवा'सर'वदी'हेद'ग्री'वादुद'रवश इट. बट्र वर्ह्नेट्र सर् चि.क्षे वसवाश्वादि खेला ची. श्री सवा के च वक्के श्रेट्र ग्री ग्रवश्यवश्यक्तरम्था ग्रवयः रु. सेन् प्रवे के न्दर पर्नेन् मु. यः वेदशः र्शेन् डेट'अन्नद'अश्रादि'ॲन्'न्न'नु'अ'य'न्नट'दर्जेट'सदे'ळे। दनन्र्हेय'ग्री' सम्रायास्यासायसामिते नतुन् हैं स्रोते न इन्दिन स्रोते विषा । स्रुग्ति क्या अ.भूश.सपु.पच्या.श.स.स.स्या.स.स्ट्रा.स्ट्री.सशा सं.सश.कर. मदे भें त प्रमाय के र प्रमाय वित प्रमाय के र के र प्रमाय के र प्रम इयायराम्योदानवेरमाव्यान्यत्र्र्त्र्र्त्र्र्य्याव्यान्यः विष्याम्यान्येत्र्

वुर्-च इस्र राया प्रति विवा वी रावार्षे द्रायते विवा खेरा या गुव वी रा नगुर-विद-वर्त्र-प्राथक। सद-वेकानगुर-नवे कुषाचे विकाक्त व्याचे नरःग्राम्यःभीरः। ने न्यारीयः निविदः विदः सहस्या न्यो न्यो स्यो । याश्र श्रुट्रायम्यात्राहे श्रृं वर्षी क्यार्य श्रे ख्रायहें दाया याश्र श्रुट्रायम्यात्रा मेव विवा मुहान प्रशास है सामा हेते न क्षां विवा मुहान यशहे सहें स्रा देवे महाराष्ट्राण्य सम्भान सेव विषा हुत न यस सहें स थ्वा देवे महारायार्थे वास्तरान् सेव विवा सुहारायश है सहे राष्ट्रव है। वर्ने खे. ज. त्रिंस् क्र श्रुम्प्र वर्षे श्रुम्प्र वर्षे क्ष्य क्षेत्र वर्षे व श्चीर निवे विश्वा विश्वा विश्वा निवे स्था निवे भुग्राशःग्रीःवित्रःवेशःश्चुरःववेःश्चवःराधेवःर्वे।।

म्यास्याविष्याः स्थान्य स्थान

वर्देन् प्रवे र्ह्में थ्व न्या यी शन् श्रन् यन श्रुदे।

ने प्यरः क्रेंब्र संवि हैन के वार्तराय है। अवे वाहेब्र नरा सुरस्य केराय न्यूगुः(अन)बेशनहें ५ प्राप्ते। धुषायुष्टित्रन् कुषार्यानकुष्याया युर नवे अवव अन्त न उत् श्री न वैं न अन्त व्या के वा विकास र्यानु तुराक्षे वे अदे हु वार्षा धेरानु वे विरायवे यथा यान्त्र ही । यह तुरा ग्रवश्यादिके। गर्थे उद्गर्भह्नदे स्थ्या द्रान्य वर्षे द्राव्य स्थित मदे-तृषाय्यकार्ष्ययाया नवटःश्री-नयत्-मदे-स्यान्नी-विन्ना-उद्गर्थे-सदे-श्चेषास्तिःहेप्यन्वसासुःर्वर्गन्वते स्तेष्वः श्चेषानिष्यः वर्षानिष्यः वर्ष्णनिष्यः वर्षेष्ठः मदे नुषा इर श्रेर सर्वा ववा वी हु वश्व वा श्री श्रा शुकर श्री वेवा श्रा पर प दे नर्वेद्रासुरायारेगामिता के त्रीया पर्देद्रामित या देशा है या शुः इदामिता ल्येट्रि.क्य.स्य.स्य.हे। विस्था.क्री.वैट्यायायाहेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेया याययार्झे.ट.प्रहेशाशुः शुराप्ते स्ट्रिन ग्रीयात्र शुर्या भेटा हितुः प्रहेशातुः रमाग्री:भेटाप्रेच हुन्यायायया सेटाटे सूरानु ग्राम्याया नुःरमाभेटा र्रे ग्वित् विग् मे नुर्रे विन हु त्रुर्भ धर श्रुर् तु मुल श्रेर् नु न्नर नभूर नर निया सुरया परि द्या नर्या स्या र्येत स्या स्या श्रुवा या स्या र्येत स्या र्येत स्या र्येत स्था रायेत स

स्राची श्री र श्रे प्राच व्यव्या है । कुर्ने अला श्रेष्ठ विष्ट हिये व्याया प्राची श्री । श्रेष्ट श्री प्राची श्रेष्ट श्री प्राची श्रेष्ट श्रेष्ट श्री । श्रेष्ट श्रेष श्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष्ट श्रेष श्रेष्ट श्रेष श्रेष्ट श्रेष श्रेष्ट श्रेष श्रेष श्रेष्ट श्रेष्ट श

ने प्यट गुन् अधिन है अदे गहेन पर्ने हेन पहिरम से र अपमा गुन इस्रमाग्री नित्र द्वा सर्त् । सक्रमाग्र देव न्युन हे सामा सास्या न्युन न्युन हो वर्त्तेट्रास्त्रेत्रकुर्भूट्राग्रेष्ठ, नवेरळेश नर्स्ट्रा युर्गा युर्गाम् सुर्वेट्रायः ग्वर्यास्त्रे सुर्य्या शुः सूर से रहे दे सुग्। गुः वयः (४व) रग्रर शुः इयः सरः र् रु रु विश्वारात्रश्रेषात्र्वारात्र्यश्रात्रवार्येरात्रहें प्या कु व्यापात्रार बर-दर-वर्षुत-मदे-श्रेर-वीर-भिर्। वेद-खुल-दुःश्वन्य शः से श्रेद्ध-दर्वेद-निर्देन्। यदे । यद्देवे : के अ । निर्देश की : देश निवाद । विदेश या निर्देश या निर्देश या निर्देश या निर्देश या निर्देश । विदेश या निर्देश या निर् यश्रभूरक्वयायायवर्षायाव्यक्षेत्रेतिवयायाश्रभूवव्रवयाया क्रुंदे-गुव-८-इय-धर-कुय-धदे-बेय-य८र-ग्रे-श्रुं-इय-दुग-इ-इ-प्रिदे-थयायन्तराष्ट्रीः धेंत्रान्तराषुत्रायास्टाष्ट्रीस् निष्ट्रीकार्याः भवायम्बर्धाः सिक्किक्षेत्रस्याः র্ষবাশ্যমের ই ব্যাশ শ্রমা তব শ্রী ইব র্ডিন্ম শ্ব্যক্তন্য নির্মা শ্রমের ८८.४.अळू.अ.श्चायायद्व.शूर्यर्थरायश्चर.५.५.५.५.५.५.५.५.५.५.५ हे दिवा वी कुय अव वाहे या य श्रद्धा वी श्रु के रायहे वाया या से दाय के सा

यगुत्रवहेत्वेशयश्रार्थेत्रिः चायाय स्टाचुरियो क्षेत्रया स्वाचुरियो दिस्या र्रे प्रिंद्र शुः ह्रें वा शहे। वे द्वा हुन् ना देन शुर् राया थर है सुत्र शुर क्रियायाययायाववर र सुराया न्याय से न्या वी दिं अप्यत् न इन्त्वाची नरन् दे हिराह्म नुराधि दें मुना श्रूर है दिर श्रुर नवे गुन हु न बर में वे अर्के द श्वेन शे भु शु भ हवे अर्के द श्वेर हे जा वेन वक्के सेन् नन्या में मा इप्टर्कें न्यो इसायम् (४न) श्रूया हे स्यायदे इते यान्वायान्वियायाव्या कुःश्रेवाक्यायळवाउवासेग्नायाया यश्राम्यायर कुषावि नात्र न्यायायि सम्याया स्थापि । <u> न्तुर वे से ख्रम कुषान वे साम निरम्दे सामसाम प्राची पर्टे ख्री सुर</u> रेट्यान्यान्यान्यो नेयायकेषायी यत्त्र के यहेन तु यह नहीं।

यर्ने त्या देवे हेव स्ट्रें न स्ट्र

दे'त्रश्रावण'वे'न्ग्दे'नर्न्,'न्यामदे'ळॅश'ग्रे'नर्न्'केदे'र्क्षे'नकु'य म्रे नदे रहे या नम्भवायया वहिषा हेवा म्रे न में निष्य में नामे र सदया उवा म्री स अलाना अर्केना नी नवर सेंदे न्ययान्य स्व संदे नें व नु न सेंवान ता नहेत वया अर्क्चेनान्यवाग्रीमान्याग्रासंस्विते ह्यान्यक्यायम् वन मुराक्चेया ॻॖऀॱॾॣॕॱक़ॖॖॆॻऻॺॱॾॺॱय़ॸॱॻॻख़ढ़ॺॱॿ॓ॻॱय़ॱक़॓ॱक़ॖॸॱॻॊॱॸऀॻऻॺॱढ़ढ़ॱॻॖऀॱऄ॔ख़ॱॻऀऻ र्राय्रेन्यरे केंग्रायायवर्त्याया के या पुर वहें विदेशें विद्या की या प सिवः विचः हुः र्वे विदेश्ये राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या मॅर-५-५गुर-ले-गुःगडेग-य-५यद-में विश्वासायुग्यासायनुगानी वेर्र्यस्थि। वर्गुर्र्भवते निर्मे के वर्षे के का ग्री सुवे सामव सूर् पुर्मे के निर्मे के भुदे क्लिंग्याम् ग्रीशर्मेयापदे कुप्टें व ग्रीमा त्याया भुष्ट से प्राप्त सह यःनश्रुवःहें।।

यदे से दे र न न न मुना हु न हु न न न न र से र से न से र से न से र से न से से र से न से से र से न से से से से स नन्गि हेन् उव मी न्यय न्य से के अया मुर्य नुर्य में र से दे मुन विवास स्ट्रिस श्री क्रिया सारि प्रिया यहिं स् राष्ट्री स्ट्रूट प्रस्तु स्था से सारी वार्षे न्वायः हें त्या सर्यः न ह्युत्रः हे। हैं हे वेवा संदे नर्वो ह्या या यु संदे हें र ॻॖऀॱऄॗॖॱक़ॖॕॸॱढ़ॻॖ॓ॸॱय़ढ़॓ॱॺॖॱॺॿढ़ॱॻ॒ख़ॱॸढ़॓ॱॺ*ॾ॔ॸ*ॱय़ॱढ़ॺॱॸॿॖॸॱढ़ॾऀॻऻॺॱय़ॱ बेर्'यदे'वर्द्रि'ख्दे'ब्रि'ल'वर्वेर्'हेर्'हेवशःश्रृंद'वर्द्रियःवेदे'र्दे से सर्वेव्' हु'नग्र'नदे'ळें शक्तुय'रेग्रथ'थूद'शुश्र'डु'इ'ग्रशुश'रु'र्चेद'रा'सघद'र्ग्' मैशासी वरामाब्य माश्रुसार्श्वे राजदे माश्रदा के वातु प्रदेश श्वाप्त स्वार्थ से वि नुदेःसुरःवसुवावकाःध्वान्तेः इतरःश्वरःसरःसहरःसदेःवःस। नगःसदिः वर्षिर वें उत्र श्री अर्ग् गुर वें र्ग् । त्र् । त्र् र क्ष न क्ष र प्र र स्र स्र स्र स्र वें वे र र स्र र स्र अवदः न्वाः भेरः वीः भ्रुवाः अरः ग्रुशः दशः तुः दः सेनः सशः शः केतः सेवैः विरः धुना गुन हु हिन सर सह र दे।

ने प्यतः से वाश्वः श्वरः त्रवाः से 'त्रवातः से 'त्रवा

न्याः स्यायः क्षेत्रः शुः पळन् 'व् 'वेन' क्षेत्रः ते 'व शुनः ((८न) नवे 'क्षून्यः येन' प्रयाया तुनः याव्यः ग्रीः भेषाः थ्वाक्ष्यः स्ययः स्ययः भेषा ।

नन्सभित्रभ्रम्भित्रभ्यत्रित्रभ्यत्ति । क्षुत्रभ्यत्रभ्यत्ति । क्षुत्रभ्यत्रभ्यत् । क्षुत्रभ्यत्रभ्यत् । क्षुत्रभ्यत् । कष्त्रभ्यत् । कष्त्

देश्वरः विश्वः विश्वः

ने स्परः त्रुप्ता स्वेदः यदः निवादः वदेः यदः श्रुप्ता स्वेदः स्वादः स्व

नदुरःश्चित्राचावायक्रक्षेश्वत्या देशाशुः सक्तायि नश्चित्रम्या ग्री स सर्ळे के दे ते है दे ते से के ते से ते से के ते से के ते से के ते से ते से के ते से ते से ते से ते से ते से के ते से गर्विव तु न्यय प्रदे गश्रम्य । वेन ग्री खुय देने यम कु गम न्य दि नम् धुवान्दर्भे वार्भेग्राम् वार्म्भवार्मित्राम् वर्मानुद्रानम् नुमान यदा स्टान्द्रियासदेग्वर्देन्यसेन्डेन्डेन्लेश्रः श्रीह्यानुस्यान्या स्यायान्वराषरायदेवःसरासहरासवेःगुरायवीयाःसेःयवीयाःनीःवर्हेर्न्यः द्रमायमाम्यत्याद्रया द्रिया मृत्यायम् मायास्य वास्याया स्थायमास्य विद्रायी नर्देन्द्रम् त्रमेषायम् निर्मित्र केषा में मित्र उद् ग्री:ब्रिन:नु:ब्रुग्रथ:प:(१०४)यथ:वसेय:नवे:नेग्रथ:ग्रुन:खेन्। ग्रेडें:नें: वे ध्रमान्यस्त्रिते श्रम्था हेते विश्वेष व्यथा ग्री दिन ने सव्योगान से नामस न्तरावश वार्याहिंदाग्री वर्षे वर्षे वर्षे यद्या स्था स्था स्था स्था विवा स्थे दे <u> न्वा वी खुं या वाव अ ख़ार्थे न्या शुः हैं वा या यदे । यहे कि वा से प्री से गा स स्वी ।</u> हुं त्रागानि निर्धे उद्यो नुर्देश्य स्थान वेश सदी नगाद दिया स ५८। अहे नगद द्वाय सँग्राय स्था उत् की वें रस द ५ रें कें गो ब्रे उ.८८. यग. स्रेव. स्रेव. स्रेव. स्वा. ५८ स्वा. ग्. गर्टेट. ८ सर. १० : वव. ग्री. रेग्रायासुरा कुलानिहे अदेगाहेत् कु स्ति से से स्वारा

हेते अद्यात्र त्य अ वित्रायि पाश्य दियो श्रूट पश्चया या या हेत् व्या वित्र केव्रस्ति कुयाप्रस्य सुरवयायाय दिवाया वास्य की सर्वे वर्षे या दे स के दिर से दिवा अपी अस्ति लिया श्रद्रामस्त्राम् क.मी.क.वे.श्रेयः न्या श्रेवःमी.लेया दे.लटः श्रृदः गणदःरे: इट ग्वार्यःरे। वर व्या दिट श्रूट श्रूट्या श्रूट हे नेट द्र व्यायः ळ्याची प्राया सूर्या से सार्ची या यहें दार्गे सासु सुरास सासु नुरासु नवे वर्त्ते.य.गीय.क्ये. सूचा.वाकूट.क्र्यायात्य. सूच्या.क्ये. व्याच्या.क्येट.ये.क्ये. र्श्वे द्रायते मे व मे व मे व स्वाय मा दे द्राय में दिया हु से अद्राय द्राय स्वाय स्वय स्वाय स्व ग्रवशन् श्रुयाया श्री वा सार्ने गायर प्रदेश्वर प्रदान राषे भी सा यात्रियात्रात्रात्रात्रित्रत्र्यात्रयात्रात्रात्र्यात्र्यात्रात्रात्रेत्रात्रात्र्यात्रात्र्याः सरायहेषाः(१०न)हेदान्नराधुषाःषीर्यायन्यानवेःस्यान्। गुरानवेः दॅर-वित्रक्ते से र-वर्गा से दे-र्गव वित्र वित्र व्याय स्ने रस्ने र-वर्गुर मासुःत्वे सूरावाद्यावर्गाते मान्यावर्गात्रे सूर्वे स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप

यर-रुन्-तर्गे-वे-श्रेव-विर-गिने-श्रुग-मिने-रि-रुव्य-ठव-य-सूर-र्नेर-ग्री-ग्वर्याः सुवाः निवि र हेर्वि । प्रवि । स्र शु । न्यव । प्रया । स्रे वि । स्र वि । स्र वि । स्र वि । य न्वीरमा वसवामायवे मुवामा हे मारेवामा वसुर नवे हे तुः विवादर। वयग्रासः र्स्रेवः सवे चित्रः स्वर्या ग्रीः रे प्रग्राम ग्रीया रावह्रतः स्वि स्व गर्वित प्रस्था प्रदेशे स्था शुः ११ राजि । इति । श्रीत लर्। यर्चन्य मुस्य विष्युर्वे स्थित् है रहे के निर्मा में स्थान स रेग्रायात्र्ययान्द्रित्यराष्ट्रियात्ययात्यात्यस्ययान्त्रीटार्साचुटारान्ते। न्वायमार्ममान्ययानमार्वेदासेदे सुवावसमासुसुर सुमारे नवि'यशमी अ'सदे'विस्रम् थे'सद्द्रम् मरेर्से म्वस्रमी वह वर्षा उद्दर् गठेग। धे र्श्वेत्रत्वार्से विं कुरे य र्वेट त्र राय्ट राय्त्र याहिया श्रुट विवा धे प्रेय भूदे र्भ्रेव से न्दरम् शुस्र स्वार्भ हिते स्थूर उत्दर्ग निया निया है न \$51

 नकुःयःबेशःगुःनःवशःश्रयःवयम्यःयशःग्रेत्रुत्र्न्यशःग्रेःग्रेट्रिंयःश्रेः यशयन्याया विवा नक्ष्यया है। येवा स्था वर्षे नया सुर्धे न वा वा विवेर भ्रेव संस्त्री श्रें न्द्रिं वर्षिर सर पेंद्र न्या वर्षा न वर्षिर वर्षिर वर्षे वर्षे वर्षे नुर-र्षेट्र-प्रदे अळ्द्र-ध्रुव-विवा-तुर-वा यन-ग्रीश-ध्रु-पर्दे दे-श्रुव-पर-न्वीत्रात्रश्चायाया यन्नगरवहेत्रयरेषो नेयायळेवावी वेर वेर ग्रीश श्रूर प्रापश्चिर द्या क्षुरी ग्रुट में दि है त्य ग्रिव द्या प्राप्त या षरः सुरः वी 'धुवादी सर्वे 'रेश शी 'र्धे द 'हद सावादर्वे सामा सुराव वर विदा षराञ्च न्यासितान्यारे पदी खूत सिते सह या सूना वा कन्या रादे छः नेयाची न्नरार्धे कृषारान्यायहुर्पा धूरासहित्रम्या भूरि रेयारेवि हे यान्वेग्रान्याः भूरायान्यरात्रे। नड्नाव्याः म्वाव्याः व्याव्याः वित्रःवे नश्चित्रः यश्चित्रः वित्रः वित्र धुग्राराश्चित्रप्रसाम् सम्प्राप्ति साम्प्रसाम् सम्प्राप्ति साम्प्रसा विभागवद्यानरावि ग्रुभागवेगावसार्वेरसामसा हे गवद्यावि गर्ददार्वेर म्याश्वा नेनः श्र्रेव र द्वा विषय विषय हो। वर्देशस्य वराध्य या स्वास्त्र वर्षे या के से या ने वर्षे सु कुष की देव

श्रेन वि नर्दन में न्मा अन्तर्दन कुम हेते श्रू अ श्री गुरा नर्दन में ने ८८.भ्रा.चद्रव.सेर.क्षेत्रातात्र्यश्वात्र्यश्चात्र्यश्चात्र्यः व्याद्रात्रः वन्यस्य मुल रें नर्गे र्या वें न्त्र विन की में नाय विने दें न्या सूर पिस्रयात्रयात्रात्र्या स्रयात्रस्ययाध्यात्रेयात्रीत्र्य्यम् प्रस्तित्र्यात्रेत्रात्रात्र <u> २,८७४.७७४.५५.भू८.५५२.७४.७.७५५४.५५८५५५५५५५५५</u> निराध्या देया ह्वें दार्थ शाक्य श्री दाय हुरा। श्री सेराय सक्या से देश यह दार्श ८८.लर.कै.चश्चुत्राचा.क्या.वर्शाचायश वैट.यपु.च्या. श्चेर्याची:वें र्याप्यप्रदाती स्थान्चः विक्तायर पश्चेता हे चीः गुरादया हुः वनाः कर्रायम् तुर्तुराना बरमा ग्रीः नातुरान दुना स्रे स्थूनामाना बेरानहनः वयाकुःयानश्चुरानार्गेदाकुःक्वमानुःहिरानाकुःश्चेवाहेःयायमारेदानीया नहें न्या हैं से स्थ्यान सहैं न् नुस्याय स्थान हैं न्या वहीं न्युया

त्रुच्नित्त्र्यः व्याप्यः व्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्यापः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः

शुः ने त्यान क्षान्य त्या के त्या क्षान क

श्च-क्रियाम् । त्रियाम् । त्रियाम । त्

क्रियाम् ने निर्माय क्षेत्र विश्व विश्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विश्व क्षेत्र क्षेत्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र

यद्भरःग्रेःकृतः विकला निकला निकला निकला निकला निकला निकला निका हुँ सः निकला न

क्रियाशास्त्रित्योः श्रोत्रायाः स्त्रियाः स्त्रियः स्त्

ने प्यतः कर र र रे त भी श्वाभा हे के त रे वि र भे त भा भी सश्वास्य र् चुर्न्न प्रश्नम् न्यते कुष्र रेग्राश्व भूग्य ग्रम्न श्रम्भवश्य शुः र्हेशः <u> थ्व मी मुय में या मुद्द विदा विदे वया द्या या के या मी द्वा पहे या पी द</u> मश वि: हे : विंग न दव दि । दे : लूट न व व : कूट कि व व : कूट के व व : श्चर वी प्यर विवा वी सेट र श्वर में र ख्वा कु या वारो र खी अर्के र हेवा अर्दे में न स हैं न से हिंद से सी में निया में हैं हैं स हिंद कें र से र (१३व) इसस यानदाययाननयाने। गर्रास्त्रयाथ्यस्य विशेष्ट्रेत्रिक्षायाद्युरानदेः खरानस्व मु सु वयायावराययानस्वायायया रेसी नेयायास्य निरानस्य ग्रम्। देशक्रम्प्रविद्या विष्यम् विद्यान्त्री प्राम्प्रविद्या विद्यान ग्रभरः नरः नम्ग्रथः त्रथः सर्केरः यः द्रान्य रुषः ने विष्य रुषः विषयः । सबुराक्त्यार्से न्गुरार्के नकुन् दुःयासूर् दार्केन्न्र त्यानन्यापदे यदा र्कें भूर पा सक्त रु कुर केर । पेरिश शु न श्री पा नश में निकु है । श्री नर र्'नब्ग्राश्रा

देनःश्रॅं त्र-दुं त्यः यः यं द्वे ः हिं ः हिं ः श्रुवा यः दिः हिं त्या व्या या विद्या या विद्या

ने इससायान इंदाधूर म्यामारा निरामर से द्वीर सुर न्रामर द नन्नान्। । नर्द्वासीने न्द्राह्में वास्ताने हेते स्रुक्षा विष्णुक्षा वुदानर्द्वा ने नरःश्रॅंदिवःस्रावरःसद्रः नहिष्या देःदरः वर्षेदः नवदःश्रॅंद्रः प्रवरः ग्वेरायाश्रमायम् ग्वराधेताके नहीता के नहीता स्थान स्थान स्थान स्थान सर्हें विन हु निवेश प्रश्ने मुदेरि ने वा श्राधित प्रश्ने श्राप्ति में स्थान हिन नर्डे अःचदेः त्रः अदेः रेग्रायः अहिं रासुग्रयः सुः चत्राः चात्रेग्रयः प्रयः सुयः धरःह्रियाः धरेः द्वरः दुः शुरु द्वरः श्रुवः दुः श्रुवः दुः श्रुवः श्रेवरः श्रेवरः श्रवः श्रवः श्रवः नुसुर्यास्त्रिन्। हुरान्यासेरानुसुर्यासेरानुन्नियान्। यावयाळेस्रसासु। नससामानवरामें निसे मानिसामी म्बार्या विकास मिल्या के स्वार्थ के स्वार्थ में मिल्य में स्वार्थ में स्वर्थ में स्वार्थ म नर्याम्बर्या । श्रे के सहिंगा प्राणिव ग्री ह्रा ह्रा श्रुप्या हिंद प्यन श्रेया ग्री गिष्ठम् में गिर्या प्रमासके नाम किया । या विषे पुर्या मुरा सूर्य पार्चे या या से या । है। श्रेमाश्रानुद्दात्र्शुश्रायदेख्यात्रः विवानी कुट्या कुश्रा हु। श्रेमाश्रादेख्यात्रः विवानी कुट्या कुश्रा हु। श्रेश्या विवानी कुट्या कुश्रा है। श्रेश्या विवानी कुट्या कुश्रा कुश्रा

देन्यश्वराष्ट्री।

देन्यश्वराष्ट्रीयाय्याः श्वर्त्वा व्याप्त्रा व्याप्त्र व्याप्त्य व्याप्त्र व्याप्त्य व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्य व्याप्त्र व्याप्त्य व

योश्वरम् योश्वर्त्तविष्ठे । विष्ठ्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स

भूत्र्या भी किया श्राप्त कर्त्र के स्ट्री विश्व क्ष्य क्ष्

ने ख्रिन्द्रन्य स्वर्धे क्रिं स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये

र्श्वेदःच वदःवविः अर्थेदः द्रग्रम् श्रीः श्रुशः श्रुशः गुरुः अविः गुरु विः वः क्रिंग्राचीरमाशुःशुःद्वायमायरमात्रमात्रीःभ्रेंदाद्दायुःवनुःवन्यायाचनु वन्यामा वर्षायानावेयामायार्थास्य मान्यान्य विष्यामायाय्य विष्यामाया श्चिर-५-भू-विद्या न्ग्र-विर्यान्युयनिष्यानिष्यान्यः बेर्पिके केर मेवि विष्य क्रिन्य ग्री प्रिंच के क्रिन्य विष्य क्रिय के क्रिय कि विष्य के क्रिय के क्रिय के क्रिय नभूम नेवे के कुषानवे श्रुवारा नवे निर्माण नया वित्र उत्तर्भ वित्र वेद्रायायाद्यरावसूरावार्याविषा वुरावार्षे सार्द्रासूसार् द्वीरसायदे स्वी न्ययःगुत्रः प्रवादः सँ अः देतः सँ रेते दे तु अः यः खूते वतु नः हेते रेते अभागानः (१८न)नशःभुः विश्वानिष्यः विद्या असी दे स्वर्थः कुषः सेविः तुः यः नेवान्यः न्नरःनभुरःनशःनर्हेन्। यरःनगवःनवेःश्चयःयःश्वः र्वेज्ञाशःवग्रेन्। यःन्रः ग्रिग्राम् अर्ग्याम् द्रिया स्त्राम् विष्या स्त्राम स् यदे-दे-दिनेदे-हे-य-दे-ज्ञान्न न्यान्न न्यान्य विष्या स्वरं निदे न्या स्वरं ग्री:कुष:र्से वस्रारुद्र ग्रीशर्द्र द्वर से द्रायर गुरुष्र प्रायर द्वर प्रियर धुगा न कु ८ ग्री . व्यव . प्रवास्त्र न वा श्रुव . क्री या न य र . प्रवास य य य न्तृयानुः त्वाराने यो सेवे व्यो म् नियानु या स्वार्या स्वर्या स्वार्या स्वर ग्रिम्याद्यास्य मुन्त्र्यास्य विद्यास्य विद्या र्रेदे न्वालु सूर न्वा नदे । वि द्वा सूर स्टर्डे राम स्टर् न्वा त्य सूर्व रूप म्बिम्रा श्रुं याया हायमित मित्र स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान

ने न्यानवारिते थूं नर्जे न्या वीया स्ट्रिते क्षु स्वा बीया सुन्त रायायस्यायाष्ट्रम्पीत्र्रित्वित्रात्र्यायायात्र्यत्यायास्या सर्वे नर्व ग्री में ज्ञान निष्य क्षा सूर्य प्रते न्यम न्यून प्रम हिम हिम বর্বাম্যব্যা মহাই ক্রুঅ ই হরম্ম তব্ গ্রী ক্রমের দুর্দির গ্রী খ্রেম ক कुलार्से अर्वे विश्वास विवाय सामे नियम सुवास दे नियम विवास दे । <u>इ</u>.पर्युवार्षिट्रपार्श्वराप्तरायहेग्यास्याग्ची,ट्यट्यीयानुयावेग्,पुर्षेट्र नवे (१५व) के दर्शे पेंद्र न १ १ इर में न्यर न मार्थ न से न साम न स हरानश्रुत्रायिः देवालु वार्शिया गुरुष्य तुत्रा श्रुरायेवा ग्री श्रुरेशा न वरा सेवि थि। वो ५८ १ वड अ र्ह्मे द र्रो अटवा अ ५ १ हु अअ त्यद ही : कव र्वे वा र्रे र्रे दे थे वो र नन्निक्ता नव्यास्तिन्। स्वार्थित्वस्तिन्। स्वार्थित्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन्। स्वार्यस्तिन् हे नह्रस्य प्रमा कुय में गुव थे ५ स्ट ५ न स्य से ५ सम् ५ माय स्य से ५ 71

हे नड्व विद्या हेव नन् निर्ध्या के हे वे द्वा श्री शादर्श न क्रिंट नर कर्डमाप्पराभेत्रप्ररामभाषान्त्रप्रा हैं निमन् ही पर्वे पर्वे प्रदेश्वर हैं निम वळ्यारावे भ्रिस्तु। कुषाश्चित्रख्याया बुरावी विस्रयाह्मसारास्त्रपाराया वहें वर्षायाधीयो विरेषें वर्षवर्षवर्षा वर्षे के का का विर्मान के विरम्भ वर्षा अर्गेत्रस् तुरस् पृथ्यते वित्र क्षत्र यो गातुर ग्रायर प्रदे विवाय प्रायहे यादर्यवासमा र्सेटमाह्मयाग्री संवाद्यासम्बन्धयाने स्वाद्यासम्बन्ध वर्देन पारुवान्या वेंन भे । अन्ते वित्र शे कें त वन प्राप्त या भेर *चे* ने नार प्रत्या के र में प्राप्त के ना का रेगा में प्राप्त के से का स्थान के प्राप्त के स्थान के प्राप्त के स न्नर-तु-होन्-प्रवे-न्र्रेश-से-न्र-न्यस्यास्यम्स-ध्यानु-धि-मो-र्स्रेनः धरानग्रायाद्यास्थ्री नलुयानु पळे नान्यान्य द्याप्य स्थान में निष्य स्थाने स्थान विवायाधीया सेवाया शुरामकु व्या शुरु सवि दिया स्ट्रिन खूदे सेवा सदे र्भरावो त्या श्रुप्ता है व्रुणा राह्य हिंवा या श्रुप्ता क्रुपार्थे खुवा या ग्रीप्त सूत्र पर्देश गाःत्राःमा हेनासःनगदःनःमङ्गेः हानासः श्रीःनस्त्रनः वर्षेत्रा रङ्गाः स्यसः ग्रैअ-रेश श्रुव-रअ-वात्रेवाय-ग्री-अर्रे क्रुट-हे-तु-इ-वार्रवा-र्ट-वर्य-रा नक्षनशन्या नन्याः उत्याः र्वेतः (१५न) र्यः वेतः वेतः । । सः स्र अः या वरः नः

ह्यारायायहर्माया । कु.माराध्ययार् हितायाधित। । यावरासीय हिरार्टा सहयानधिता विशार्तेन रु.गार्चे नवे गार्श्वरात्र साथार्चेन हे मेरिर् येनअन्तर्भ। कुषः र्ह्मेन् पिरुशः ये ज्ञान्य स्त्रान्य स् धे गो न्दरक्षु इसमार्श्वेन प्रदे रहेवा सहन प्रमासम्बद्धाः प्रदे न्ही न्द्र सुर ग्राम्त्रित्रम्, वित्रभून्यके वर्षावि वित्रक्षे भूत्र थेवा सेवा श्रास्त्वा धर-८में रश्च रशः क्रेंत्र में रागशुरशः धर्म क्रेंत्र श्रेश्वः वह्यः द्रधयः द्र्या प्रद्रा याग्रीयानानन्नामदे बुग्राहेदे कराग्रीयाधे न ग्री विरायान सुनाम वर्चरानु सर्देव पुरक्षयाते। प्रच्या पर्वा प्राचित्र विष्वा विष्व विष्व विष्व विष्व विष्व विष्व विष्व विष्व विष् नदे सेट.रे.ल.रेट्यासंद स्वीता पड़िया क्रिया वह्या हेवा पार्वेय वी य्रीचे न्यहेर् दें स्था स्वाया ग्रीया सक्षेत्र सम् मुः स्नुन्या स्रेगा । इस् दें गा गुःसूःम हेःह्या यःप्यश्नाहित्यया ठःकःहःवः वःवःहस्ययः सेः द्वीयःयः वर्दर्भन्त्रेष्ठ्राते न्युर्भान्वे ग्रम्याये नेर्श्यायुर्मान्यायायम् वर्ष्ट्रायान्ते नुसाद्यान्तु केत्। सानुष्यान्ते नुसाद्यान्त्रास्यार्थे वार्षाः वेदेःवा बुवायः ५८: वहःवाययः वरः ब्रेट् : यदेः खुयः हवायः वेवायः वेदःयः हेर्यमिति नमून नर्डे यान कुन्य स्नित्र या कुन न्या कुन न्या कुन न्या कुन न्या यविवाशःग्रीःसर्देःकुन्देःभुःस्वादेवाःस्वाधाःकेसःनुःसःवश्चुन्द्रसः

स्वायार्थ्य निष्ठ्व सार्वेद सं के देव से अपन्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स

मश्रान्ति नियाण देशम्य स्वर्णम्य स्

स्वाकान्त्रेन्। विकास क्षेत्र (१६२) त्यत्रे त्या स्वाकान्य स्वाकान्त्र स्वाकान्य स्वाकान्त्र स्वाकान्

दे दशक्तुवार्सेशवर्त्ते नाम्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थित स्थान्य स्थित

मदे म्या मान्य मान यश्रास्वायाये निवे द्वित्यामान्या निवे विष्या हित्या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स कुषार्थे । शुःतः सातः वो । सरः वे सा गुः नः न्या । सरः न्या वः नवे । हुः वसुषा ग्री स नित्याने। वरायवे निश्वायायान द्वाप्त्र मान्या मित्या मित्र प्रिता प्राप्त प्राप्त मान्य वसग्राम्यते सञ्चराञ्चन देवा त्या कु सर्वेदे त्याया ग्री ग्री न त र्शेव वर्षा श्रामित्रास्तरेर्देग्। पुः इत्पन्तः श्रुवः श्रुटः सेतिः ग्रामः पुः श्रुटः यायहः वद्यवश्राष्ट्राक्षेत्रः स्वेत्रः स्वित्रः विद्याचित्राः विद्याद्वाः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्रः स्वात्र मॅरिन्ने निर्दे नुष्य तु। कु अर्के दे ही दाने प्यह्मा अन्दरमान्य के ते निक्र निक्र निक्र निक्र निक्र निक्र निक् नुःय। कुःर्नेन्द्रैःरङ्केतःनुःयाद्र्ययायायाः (१०४)मुयाद्राः सुराःसेययः न्यदःसबदःसरान्यव्यार्यान्यां विष्यार्यः विष्यः यें वर्षे अर्के न हे वर्ष इते वर्षे में वर्ष में वर्ष में में में वर्ष में वर्ष में वर्ष में वर्ष में वर्ष में न्तृगः बुनःगशुम्रः ग्रीः देदः नश्रेषः श्रेषः यः देः ददः नहमः पः नश्रूम्यः हे । कुषः र्रे वास्या अरायरायी द्वारी श्वारा मात्र शहू रायदे दें र वेर वेर वीर नहरानमूत्रपासूराभूवापिते प्रोति भेति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वाप्ति । स्वापति । स रेते क्रॅट में यस प्रायम्य सार्थे में ज्युर क्रुव द्रम्स है। क्रुय में दे क्रेव মক্ষম্ম-শ্ব-দ্বম-শ্বা

देः प्यदः नगायः गाद्यस्य श्री गायः ययः यय। हे दर्गी वः हे गायः वयः यशे विदः द्वा विदः श्री विदः

बेशमंदे सुर नश्रू त्री नर्र है दे तु अमास्य अस्त दक्षे ना से र मदे-निवादः क्रेंत्र-नुः क्रेंन् निवादे नुकालानियः क्रें। वसवाकायाः सर्वेवाची विश्वेतः यशःग्री:पह्या:पःगुदःग्रथःग्री:स्रवःग्रुशःपरःपकरःपरःग्रेट्ःपदेः वनशःशुः हैं : श्रें : विं निहेर : उदः श्रें : श्रुं या देया हिं । वहुं द शुः वा देया । नुगार्ये द्रायार केंद्रे नेया अहर प्राया वर्षा प्रवेष केंद्र प्रवार उद्या विष्यत्रश्यः इन्दे । उत्तर्वा श्रीः दे । दे । विषयः दिष्यः विष्यः विषयः र्शे क्रियासदे क्रुयारा भ्राचिवा में टाई ग्राचार्ये न क्रुत्या विवास सक्त न्मेदेशस्याः स्वाः स्वाः स्वाः स्वः प्रतः न्यः (१००) व्यः स्वाः व्यः स्वः । व्यः स्वः । खुङ्गयः दे : वें नः वेना : वें नः यथा क्या यें राधे : न्या की : व्या ने राधे : व्या ने राधे : व्या ने राधे : व नहनःसम् वसम्भागम्भः चित्रः चित्रः चित्रः मद्देः सूत्रः पदेः क्रिंभः मनः चुनः बेन्'ग्रे'शेन्'न बुन्'न पाहे स'र्षेन्'स'न इंत्र' सेन्'श्रुव'य देत्'न में स'रादे'

खरानक्ष्रम् में क्षान्यायाययाय में प्राप्त क्ष्याय के वार्षि के वार्ष्ट के वार्षि के वार्ष्य के वार्षि के वार्षि के वार्ष्य के वार्षि के वार्षि के वार्ष्य के वार्य के वार्य के वार्य के वार्ष्य के वार्य के वार्ष्य के वार्य के वार्ष्य के वार्य के वार गहेशायशर्दिन् बेरावर्धेशायान्त्र तुना हुः श्रेंदानाय। देः सासेन् प्रवेश्वेरा शुन् शुभागविष्यायम्। तुन सुग्यायाय स्विः खुवा शुन् सुनः खिनः खावतुः थायम्यान्यानु नयासेते कुषासे ते सामायने के नुन्ते के सामे न्यी। वर्चे र न सुत्र सुत्र रहें गुर्य पदि द्वार सुग् द्वार सामा धीर र दें दिर वदे सुर्य बॅं ख़ु गडिम | देव सें केवे दर्गे र अहें द्या कुष न है अवे महेव द्या र लें नक्तर्भिःक्र्रिक्रिः क्षेर्या क्षेत्रा क्षेत्र क् मुर्गेट हे वधुय छूट गुर्ग द्विय गी विद्र वें या या या यह द्वार हु है क्यायरावित्रवित्वर्धेरायवे वदायहित्। क्यायात् रस्यावेदायात् व न दुःगिहेशःमदेः भुः नहुदः श्रें गशः क्ष्र्नः सदेः खुरः नुः गुरः मः वशा भुः गुहेगः गिहेश।प्रनः हु निवेशन्। कु निवाकी सुव सुव स्वा अ सिवे प्ये व हिन् ही : न्द्रभःम् वस्रभः उन्।पनः येत् क्रीः में न्नः सुन् भः ग्रीः सूनः खुं यः सूनः प्रतृनः नर-नर्गेरशन्य वहागिन्द्रेव सेवे से शास्त्र मार्थ न सूत्र है। याद्रशः भूनशःशुःर्नेन् अवदःविवाग्रीः कुवार्यम् गूमाश्रा विष्ठानार्वशासम्बाधाः राया थे र देर निर्मात्र वर्षा कृषा से हिर की सुवाप्य स्वि देर निर यश वर्षिर वेश श्रुर नवे कुष में (१४व) अळव दिने दिर व्रव विदा ह

उव्रची धुवावस्यायाया स्याप्ता व्याप्ताया स्वर्था स्वर्था स्वर्थाया स्वर्थाया स्वर्थाया स्वर्थाया स्वर्थाया स्वर्थाया यक्षेत्रकुषार्विदेख्यान बुदानाधेवामभ कुषार्वे हित्री जुर्वे विष्ठेरा ठव अदे श्रूषा पर पर्वा पार देन भी हें से साम हें न भी ता भी हैं न चित्रयाराक्ष्यायम्ना द्वान्वाची श्रुषाया इयया हिन्या श्रुम्तिन । दे क्ष्र-भे ने न स्थाय वर्ष न विषय कर्ष के स्था में विषय के निषय के लिया नयःभूत्रत्रुश्र्यायय। नयःरेदिः हे तन्यायात्रुतःभूगान्यास्यार्मात्र्याः धर विश्व सुरशात्री या ग्रीशाक्ष्य विवाल वर्षी वर वाशुरशायशा थु गरेगागे राष्प्रात्यः तु न स्वा

योः सण्यन्त्र वित्राः स्त्र त्यां स्त्र स्त्र त्यां स्त्र स्त्र त्यां स्त्र स

यः अह् २ वश्र श्रुं याद्रयायो श्रुं यः यश्रेट्यः है। व्रेट् ग्रीः श्रुं यः यदे त्रिं स्त्रें स्त्रें याय स्त्रा श्रुं याय स्त्रा स्त्रें स्त्

र्रे के नित्र वित्र के महिना क बेर्पियन्वार्ये सर्वेर्प्श्चेत्र वर्षः भ्रम्भेत्र वर्षः नर्जे में त्यमा भू र्के नामा मदे रे में मार्थि रे में में में में मार्थि के मार्थ के मार्थि के मार्थ के म न्ग्रां निक्तां निक्तां निक्तां क्षां क्षां क्षां क्षां निक्षां निक्षा यरयामुयारेंद्र्यूरयाम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्याम्या ठंव न्व नी क्रेंच सम्म नि वें र नु र क्ष क्ष्या (१६व) भे ने स्था नै दुइदेखुर नहेर्श्यम्। देव में केदे नर सह र नत्व सी मार्च न दूर सर्वि:न्गुवे:धें:गुन्:इससःभ्रवःहेंन्सःसु:सहंन्ने। वि:नर्द्वःवःनक्षनःगुः वर्ने भून र्वेन कें नुः र्वे राज्य राष्ट्र पान तुरान हो । ने हिरानुः र्वे राज्य राज् र्वेत् पुराश्वर्भेत्। नगव नहमाश र्केश खुम्राश्वा । इर थे भुः अपिर में न्नद न उंद में प्रकेश किंश न वेदश द में द रें न न शुंश ही हेव'णट'र्ख्यामा छिन्'सर'यसमामार्थिहेव'णट'नवेटमासु'मार्सिया । यद्वालयाक्त्रायदेःभ्रायाद्यायान्यायायवेत्या । यदयाक्त्यायः क्रुश्रायम् अह्रम् पाणी । निर्मो त्वनु व र्श्वेष्ठ परि पश्चिष्ठ पान्म वम् अह्रम् । डेशःशॅग्रायायाध्रवः ५:५वेषियः प्रदेश्वस्त्रवः ग्रुः ५८:५३ व्याः हे वे ५:५: नहरमा देवे के भ्रेमानु सके गान्स्य नरामासुसाया सूरान से वहान गशुस्राचुरक्षे। सदस्रामुस्राद्राचुरक्तासेस्राद्राद्राह्मस्रासाग्रीसाग्रीवासा हेन्। तस्याश्वाराश्चित्रान्यस्याश्चाराहित्यस्यात्रश्चात्रस्यात्रश्चात्रस्य स्थात्रस्य स्थात् स्थात्रस्य स्थात् स्यात् स्थात् स्यात् स्थात् स्थात

नर्भूर-नदेव-द-र्-अवर-र्गु-नकु-न्गु-नकु-ह्ना । न्यर-र्ग-रेदे-हेर में न्यायम् अस्य अस्य विद्या न्यायम् म्यायम् म्यायम् म्यायम् स्यायम् स वर्यम्या कुलार्से न्दान्य इंमार्से विद्या निर्मान विद्यान विद् बर्भाया ब्रीयाचा अवराग्री इत्यर नेत्र होई नित्र अनुरायान न्त्र भून भून हु'वर्ड्डे न क्रूँट नर्ड्ड ना रा सर्डे ना रा नवि न वर्दे द सुदे खें नुद समय द्वार र न्नरः सेन्यरः वन् निर्देशस्त्रानि वार्षेषा निष्या स्यापरा निष्या ही रिषा हुःहते कुषाया वनया शुः पर्देयादी । विदः पर्देया चर्छे न कुद् सुद्या शुः पर्देया शुयानकु र्षित्या दे त्या श्रूट ये न न श्रुवाया प्रदे श्रेट र र शें प्रवा न हे ट न ह गठिग'नकुगश'ग्रट'र्'अ'नकुगश'मदे'श्च'दतुट'न। अर्देर'र्देशेद'र्सेदे' मुयारी यह गा अम्बि न दुवे में हा हिर न से न दुस्य मा मा स्था उत् ग्री:क्ट्रिंट्य:श्रु:(१०व्)वर्स्य:प्र:क्षेत्रु:बिया:पर्द्धयाय:व्या हे:क्विंद्यव्याट्य: वित्रः स्रवतः न्वाः वर्देनः चवेः धेवः न्वः वः वः वः वः वः स्रवः स्रवः स्रवः स्रवः श्रुवायते मुवार्यसान्य स्त्राम्य स्त्राम् हेते स्रमार्स मिटाई श्रुवायदेव मदे हेर नर्भेग्रा शुः शुक्र गणिव मदे देन हेर लग दिर लेंग शुक्र मदे मुलर्से स्वायास्य स्वरास्य स्वायात्रया मुलेसे ज्ञाने निस्ति स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्व क्रॅन्स्रेन्स्रिक्ष देन्स्रिन्शे कुल्स्रिन्स्रिक्ष्यानाधेत

मशाहित् ग्री खू मिठेमा पर्ते क्षेया सप्ते क्षुया माधित मान द्वत से माक्षुत पर्देत नश्राभाषाः हिन्यासुः भूगुः सुः वी । दिः यश्रामी रेषान् शुरादामु । ध्राया प्रमेष रहेन। कुषा निवेदान भून राष्ट्र में ग्री'विश्वना'रा'ध्रेश'त्र्य'कुत्र'गर्डेन'र्ने'बेश'कु'त्रग'गी'भून'र्नु'यर्'श्रुर'न्या याशुरुरायम। भ्रुपाठेवायोगायासद्याव्यामायीमायहेरसायदेवाहेत वर्षिरः इतः भ्रेष्य द्वारः भ्रेतः भ्रेष्य क्षेत्रः भ्रेष्य भ्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत मदेख्याने मक्षा वर्षे नम्लुका ग्रम् वेन्ग्री कुषा मेदि सुवा केन्य मदे वित्रिं में का क्षुमानदे कुषा बनका ग्री मित्रे कि कि है का का नर्ते ना परि न्नरमिश्वायायायायाव्याच्या भ्राम्बियायीयायायायायायायाया पिस्रमासु दर्गे मिन्न व व निया सु निया सिन के से मिन के सिन के सि र्केन्द्रिः केन्वा अर्थित्य अर्थः न्या इस्य अर्थः वर्षः न्दःवर्देनःयःवर्द्देःववेःन्देशःयें बन्धेःनेश्वःयवेःनेवःयें केवेःगवः सर्देनः यवरावराव्यायविदावहर्याते। कुःहेदेव्यवयाद्या (१००)क्रेःसातुः र्बे निर्माण क्रिं मार्मे व निर्मा वित्र हे या द्या नाम ना हवा ही खुवा । खुवा वा हिन्द्रायम्बार्यार्यारे धेवाते। विन्यारे राम्या हुन्या के नित्र प्यायक्षेत्र हिन्या प्रक्षित्र हिन्या प्रक्षित १ भूत मी राम्या प्रते मात्र रासके मान्य प्राची । यह प्रति माधा प्री । यह प्राची स्व

नग्रमायत्र । विदानविष्टानविद्यास्त्रित्यान्यस्य । कुर्ने नविष् धे अर्वे नित्र नित्र वित्र उत्। दि अर्वे अपाउँ न पार्य दे पाइत मी नग्र-विश्वाक्षश्चरायाध्यर-तुर-त्रेश्वायः वर्षा । क्रियः विश्वश्चाव्य क्री स्थेः हे से पी या दी । जिया या या दे में स्वर्य र के कि से री । विष्णिया से हे खेया नुसर्रिसळ्र के। । समय निवेदे कुयार्रि गुर्न में सामे प्रायम मा क्रॅंश ग्री मुल में श्रॅंट नर्द श्रुय में दी। विट क्र्न श्रेयश द्विर श्रुव पाये व्यास्त्रा थित्रज्ञान्यमा पुरसेन्यते क्रिया से स्थिता विश्वार्श्वी न न से न वया तुःर्ळःधेमाःर्छटःश्लें नःरेटःदमोः नःदमाःयःश्ले मा । दर्गेवःरेवाःदतुः वसरमानकूर्रिन्दिर्द्रान्द्राम्याः भीत्। व्रिमानक्रियायमाः निविद्यत्या के अपनिवृद्या । विश्वान्य अभि अपनिवृत्या । विश्वान्य अभि अपनिवृत्य । क्रॅंशक्र-५-१ शुन्। । नगे वन्त होन नगुर ग्रुप्त वित्त सक्षेत्र स्था श्रुप्त । न्यार्केशन्त्रभात्त्वन्त्रभायाने सेटाकेन्त्रभावनन्। विकायार्वेदार्थेन् से । श्रेयशक्तं पदीर कवाश्वाश्वा । भ्रुवशक्ते वा बुद प्यादीर प्यादी विकास अन्यादर्वे व वियाद्वायत्य से स्थाय से व से दिन दे व व वर्षिर निर्देश हें वर्शेट्या श्रुट्या भीटा (११व) दे प्या गावेवारी स्रेवा । ज्ञ्यया दृरा स्रेटा हे

नुसाने मार्थे मार्थे साम्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स नुरःशेस्रशः इस्रशः ग्रीः ग्रीने ग्राया स्टेश्य द्वारा स्टेश स्ट्री स्ट्रा स्ट्रीयः विस्थरा शे दिव द्वा ने वाया स्या विषय के विषय से दिस्य से में दिसे दिन शे श्रुवामित मुवामित नहुन स्मानिमानमा स्मानिमानमा स्मानिमान वै। न्यवः सहरमः वसुवाः ध्वः शैः र्सेवायः र्सेवायः कुः हेवेः से न्यानः पुः गठिगाश्चुवायदेवायिः हेवात् नी दुडिये सेंगान्दावड्या है। सदग्यायास कुया पिन हु क्षेत्र प्र प्र प्र मु के हे प्यन पुरा श्रुरा हिना प्र प्र यह स न्वार्चेन्यः क्षेत्रः सप्तेन्यवे नक्ष्रन्त्। कुष्यः से के स्रीपावनः विवायः क्षेत्राचरार्चेश्वास्त्रव्याता वरावाश्वेशाची व्यवास्त्रिशा धुसा र्येटशः श्रुटि यहें श्रम्भात्मात्मात्मात्म भ्रमिष्ठेगाम श्रम्भाति । न'य'वर्देद'सवे'द्वद'मेश'सें'कु'सें'सेंद्र'सदग्रथप्रथा कु'ग्रद्रेस'ग्रे'

क्रियासी श्रमामिनार्वेर क्रियासी में अर प्रमामि क्रियासी महिम् यहं यावियाची कृषारी निविदे क्षेत्रारी तृष्टानकु प्यटा खुना केना खुना पदेन शेर्वायणम्। विस्रायके रेम्स्यान ह्यानि राम्यानि स्वाय शुः र्हे न विवाय क्षेर नर ग्रुय है। नड्द में दे सुवाधुः सुन ड्याय सेवा याडेया'अन्नव्यत्र'र्षेत्'डेट'सेया'याडेया'त्र्येत्य'त्र'र्षेत्'यात्र्र्दाची'सेया'ग्रह' स्वारी:श्रु:रेस्राक्ष्र्रार्वित्रवित्रव्यवात्राविवार्वित्रयाने वाहत्वत्राधेवाः हुन्दराधुनाशुरुरुद्धनायाश्चेतर्ते वेरानशा क्वितर्ने नावत क्यराग्रीरुद्धे या सर.सुषु.चर.रे.बचर्या.स्य.कूच्यायाचेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा.चेत्रा मैंगायाग्वरमीयाग्रेयायदेयवे स्वीत्राविष्यम्भित्राया त्रा देवे श्रे व त्र एया निवास हे त्रुस की सेवा हु न द्वा त्र स्र नन्नःसःसबरःवर्षेत्रःनेःभ्रःगठिगाःगव्दःनरःव्याग्यादाः। वेदःयःभ्रेरःसः वर्देर्-पवे नश्रुर्-ग्रेश रे उं अ ग्री अ ग्रु न अ हिंग अ प भ्रूर्-त्र ग्रु अ ग्रु म नु'नक्या निर'ह्नुस'र्से स'से देन'गडेग'से'रेस'ख़ग'न'सुग्रस'रे'र्रा'न' भ्रग्रम्भारम् अहेश नेत्रम्म कर नत्र मे प्रमुद्दा अन्ते न से ग्रम् वर्गुन'सर'न्गव'नदे'रेग्'स'सर'र्से 'वर्ग्वन'न दुग्'सभ। सग्रर'ग्रीभ'सूर' यानिर्नाययानुः यान्या विदाकुः यानश्चित्रः त्रयाः इत्येया स्वा

इस्रयाणी निः स्वाया राज्ये स्वार्थ स्वार्थ स्वाया स्वया स्वाया स् रे.विश्वास्थात्रीत्रा करार्बूराकुराद्यारेन्यात्रव्यात्रक्षेत्राच्यायाः वि नर्निहरू हेत् से निविद्य स्थर है ज्या है स्वार् कुर निविद्य है। गरियायादीवायम्। त्रारियाची के स्ति के न स्त्याद्वरावया कुयारी ग्वित इस्र ग्री क्विं से से स्टार र से स्टार (११६) न र र । स्वार श्री स स रे श्चित्रक्तर्तुः वित्रश्चा स्टर्गी मान्या ग्री द्वी से दिः पा वेसाय हैं है दिया सावेस यान्यायुरानुरासळ्यानीसान्या क्षेंगाव्यात्रस्यसायायार्यस्य सारे नहनः क्षे भें में न्दर् मुंदर्श हे अर्दे नुन यस सार्वे यान सम्मित्र म शुराक्षेत्राचरक्षेराबेरावर्षा माववात्रस्रशायसर्वेत्। सम्राम् श्रीवासे नहेना न्या सूर कुन प्रेत ह्नाया इसया ५८ म्यू त्र या दित्या प्रया ५८ विभानु निमान्य के विभाग्य के मिल्य के स्थानिय के स्थानि द्रिट्र प्रवेत कुट्र खुर्य प्रकृत्स्य वा ने पुरा खुरा है र बेर'नश्रा अग्रर'ग्रीश्रश्चर'त्रशायद्रश्राधितः क्रुं से विग्राधितः सर'ग्रेशेर'ग्रीः हेंदे-भु-न् चिन्रश-न्दः छ खुन्यश-ह्यायन् च्यायन् च्यायन् ह्यायन् ह्याय

ग्रैश्वान्त्र्य। त्र्रित्र्व्यम्ययाग्रेशाः व्यान्त्र्याः व्यान्यः व्यान्त्र्याः व्यान्त्र्याः व्यान्त्र्याः व्यान्याः व्यान्त्र्याः व्यान्यः व्याव्यः व्यान्यः व्यान्यः व्याव्

षे असे अस्ति अस गर्सेन्। निग्रःक्षेश्रःक्षश्रःस्वाय विन्तः ग्रेक्षः विश्वरात्रायः विश्वरात्रे । देवरहेवरश्रः यशः गुन् । कुषः सेंदेः सं ज्ञान्त्र । अः हे खुः धेशः सह । अिंदः न इतः स्रुसः सं दे। दिग्राम् व्यास्ट्रिय क्रिस् निह्ना । सर्वेट द्रासेस्स धिट दर्बिण । वियाश हे कित से त्याया । किया हो ८ (४४२) के शान वित हो ८ । । प्राप्त श इस्रयानगदायाद्वा कितासूर्वात्र्र्यात्वर्यास्यया । नगदासुन्स्य र्याविष्यत्यायाया वित्रुः श्वर्याये विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विषय विष्य विषय विषय विषय विषय व गर्भर-८७ वाचरमा भुगरा सेवासा । देव छेव ५ सा व्यापन । वाववा ह खुवा गश्यः कुर्या । द्वायः भ्रेट्टे सूर व्येट्य । अः सः रें सळर छै। सूर पठेवा गेंदर हें यश्वा

विश्वास्त्र प्रति प्रचार्त प्राप्त स्त्र स्त्र

वर्त्ते से र मुर बुद री र ब्या रें या यी या त्रा वा पर देव देश के हे रासयार मु: धुव: नु: क्रेन: नर्गे अ: यर: मु शुर्य: या वर्ने न: या व्रेन: य नमा कु:इसमानगायम्भार्भार्गुम्छेर। क्विंदार्भार्भारमाउदानी नक्कुर्मा वज्रूरः नवे के न न अर्क र स्वा नी यर कें उत्र विवा हैं से र ज्ञित ग्राम त न क्ष्र-ग्रुमाने साववेषावर क्षेत्र सेवि द्वराषायद सवे क्षेर वर्षे मार्थे द्वरावत नश्चेग्रायदे वया ठव द्व द्व नश्चेग्रायदे स्व या सद्दा स्व व सि सके र र्मेन्द्रायदेनर्भामार्श्रेषार्भाष्ट्रम्भारत्युत्यात्र्यस्यास्त्रःक्षेःत्रेत्रः स्वाप्त्यस्यः क्रसायायना है। बनसास्राम्या ग्री में न् न् ने ने ने निया वर्षा रेटानी राखें कु र्वे त्यारें ने का की ह्या वित्रार्थे वित्रार्थे वित्रार्थे न्ध्रेयात्रास्य स्वास्य स्वास्य विश्वास्य स्वास्य स्वा र्डेग'च्या'विट'ल'चर्लेग ।(१३व) ५२:५गर श्चेल'ल'५२:वग र्सेट। । हि नशरिः अदे हे दुः श्लेन।

श्ची त्रे स्थानि स्थान

म्ह्री ।

स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् ।

स्वान्त्रभ्यः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् । विश्वः स्वान्त्रम् स्वान्त्यम्यान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम् स्वान्त्रम्यान्त्रम् स्वान्त्यम्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्रम् स्वान्त्यम्वान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्वान्त्रम् स

ने निया में निर्दे त्या स्वार्म में में किया में त्र में स्वर्ण निर्दे स्वर्ण में विश्व स्वर्ण स्वर

इश्रायाश्री व्याप्त निर्मा के स्वाप्त निर्मा निर्मा के स्वाप्त निर्म निर्म निर्म के स्वाप्त निर्म निर

वेशःश्रीवाशःश्रुशःसम्। मेरिःह्रिश त्यातःसदेःत्यातःश्रेशशःशेरः र्स्र ग्राम्य विष्य के त्या के ब्रिं । सि.पिट.की.सक्चुत्र.क्षेट्य.शी.यबुट्या । वियास्यायाती.पाय.याह्रेटा मदे के व क्व की मान स्थान के निष्य के न र्रात्यः श्वापर हिना प्रते र्स्त्रे अ विश्वाया हिन् रहा नहा ने वाया अ राजह नाया निवा वाशुर्या स्था यावार्दिर वी वे स्वाप्तर व हेवाया पर सक्त वे से स्था वहेशनिवासम् वर्षिवासंविवात्यवासेरासे हो वारावसूर दशा गेरि हॅ.वाहेशचेट्रपर्व्यापया हॅर्चर्चम् इं क्रें रचे केर्च्या हैरा मश्रा विक्व कि सुवादि सेव से वाद मुखा दु र के वाद स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत यथा द्र.बर.गी.अक्ट्.पर्ट.श्रेच.श्रुट.धिया। न्यर.क्षेयाया.ग्री.र्ट.पर्ट.श्रुट. मी रु अ भरे रे इस भर तर्मा द्वा अर्के दे से र र पूर्य सुदि न त्या सा

८८। देवे हेर कुष रेवे से ब्रट वें प्रमार्थे देश हैर हैर हैर वा ने प्राप्त स्थान वः अः न्ध्रनः श्रुवः पविः पविश्वः याषे अः यथा व्यवः न्वन्ते। न्यनः वार्केनः श्रूनः नर्वायायायम्या द्वार्या द्वार्या केत्रे विषये सकेत्र सकेत्र महितायम् वसवारायिः रे विवा देवे वर वर्षे र र कर ज्ञान वसव द्यार जी रे व गर्गया यय में र में रे य कि यर्टिय यात्र में ज्ञान (१८०)य प्रम्न म्चित्राची प्राप्ताचा वात्राचा हिंदा न वात्राची स्वाप्ताची स्वाप्त न्ययाचे द्या वसवानगरा की में त्या कुषा सक्वा ज्ञान तुरे सुराया विक्रा ते क्षेत्रयाः भेषायदे ह्याषायकुत्। श्रुयाषायः ते। भुयायायितः। राषाञ्च न्वायःवार्नेरादेवाःसा द्वेदेःवाधुःवज्ञुवाःवार्यराःकवा ज्वाःग्रेःग्रःक्रिःग्रःवार्नेरा ग्रम्भियायार्वेदावा अर्देरावावयायाय्वेरावेरावेर्डिनयान् मुन न्दा अत्यासङ्गत्दन्यान् कुन्ने याद्वात्यमा विद्वासे वे व्यवस्त्र वर्देस्रमान्त्रेन्याः भुत्रा क्रें नः भ्रेगाःमान्ननः याः स्नानाः न्त्राः न्त्राः न्त्राः न्त्राः न्त्राः न्त्र व्यायाय वर्त्य व्याप्त व्यापत व गणुयः ५ : ब्रिग्रयः यः भृ द्विः स्री वि स् भू : अळ अया द : वर्ष स्री : क्रुं : या व्री : व्री

वुनःसळ्स्यरावः प्रदेवेः पर्ःसुरः। चुरःवः सःसेविः वृषः स। ग्विवः परः सुसः यारी त्या कु श्रेव दे तु विद्या यद्या याव या श्रे हो न याव या राम विया स्था हो । यदा ना शः श्चें हो न यग प्रते श्वर्ष प्रतः न शें न शः शः न हा न प्रतः म्हा शः न हें न प्रतः । शःश्चें हो न प्रमा प्रते श्वरं प्रतः न शें न शः शः न हा न प्रतः । इस शः न हें न प्रतः त्रेट्रप्रदेष्ट्रप्रभा र्वेषायर कुष्यर्थे प्ययः पुरुष्य मुरुष्य सुरुष्ट्रिय व्यवस्त्रम् विराध्या स्त्रम् व्या श्रुवस्त्रम् विराधितः लय.जया.रट.शुय.जया.यार्च्य.तर.ग्रीट.त.जा याल्य.र.वि.पर्यया ।यालया र निर्दित्वया स्थार निर्वादक्षा र ज्या व्याप्त मिर से। सवयःवर्वा मी मिर्ना विषयः विषयः विषयः श्चेत (१५व) नगे क्या इर इर इसे यर वर्ष के स्था पिराया मिराया मिर्मा मिरामें की क्यानिया नेयान मिराया क्रम्यास्त्रुम्यार्वेवन्ते। रुपार्वेवन्धीःयार्व्याप्यमापमः इस्यायहेषाया स्राचन्त्राचि हे के स्राचि स्रो स्वाप्त स्वापत स् मे । प्रमास्यामी हेव। इ.ह्या र्प्याप्त स्वाय स्वाय स्वाय हेया हे हेया सर्ळे नश्नश्नरादे हेट.र् नाद्वा लगापट नहेग्रा हे कु नय की है इस्रयान्त्वायान्यस्याम्यान्यस्य स्र्यान्यस्य स्र्यान्यस्य स्रियान्यस्य स्र्या इस्रा शे दिर लयर द्वो त्र्व शे दे दर सर् सु द शे त्र त्र त्र सु व त्र स् मुश्रास्तुरावर्द्यायाश्रर। वार्षिवाः श्रेशाद्येवः श्रः ये : इस्रशः देरः

बिट त्याद बिया प्रकेश मार्था वि यह व श्री राष्ट्र या राष्ट्र र व्यायाययाङ्ग्रेयायायादादाद्वाययाय्यायायायायाया न्द्रानश्चन्रायरम् व्या कुष्यम् त्या बुर्यायया दे सम्बन्धि द्वान्त्रम् याग्रीयानहनामान्या शुक्राण्यसायसार्दिन् हेर् तुम् क्रांसिक्ष प्रस् उद्विद्रश्याया विषया स्था कुषार्थे श्रा विषय द्वित स्वर देवा पुर सर्वे प्रयास र् र्वेत्रत्राम्रोरेन् की र्रेर्म्यार्त्रास्यायायय स्थानायाय स्थान्य द्र्या मित्र विकास के वित्र के विकास के नर्जे नर्भ दें न् ग्री दानि है सा सु हैं के नि के ना मुस्य मा सूर हिसा सा र्हेदे है दुः अर्के न हे न दूर विवा हुन वन। के खदे वार्ने न या के प्रहुन के न न र्हे हे ते तहे अन्य जुना अन्य दे निरम्भ अर्थी हे ना नृत् (१५न) सदे । पर हिं कुदे संगु नग्रम श्रुनशः इसशः सम्म नदे कुशः नश्स्यशः देवे श्रेट पु नर्शेः नग्-दर्भानवर्गन्तेयाप्रयान्द्रम्थायर्के नश्नयः है। र्हेशःकुयः न्त्राराके के साथ के के सारा वी के त्या वसुवा सूरा वाई वा व्यवा विरावी सरा नित्यात्यान्तियायात्। सूर्गोर्ट्यान्तेयानेया इसरास विरायर यहेता सायदेशाय निया प्रशास्त्र में राहेंदे हिराह्मा वैनःसरःक्रियःसेदेःस्रुदःरुःग्ययदःदशःवेदःरुःर्चेशःरेःश्चेरःवेर्दःस्टः वदः

स.चूर.विषु.चेचा.क्षेर.री.श्रासचा.च्रि.क्र.ज.क्षेर.वश्राश्वर.रेची.क्रूचा.लूर.स. यःसहर्प्तरात्रा विषा पर्त विष्ठ देश विष्ठ मार्थ स्था विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विन् ग्रेश क्रैंव प्यया क् केव में विन हिन ग्रेश क्रेंव प्यया यवपन्या वनन्सेन्न्वन्यविन्द्रम्पर्सेन्तेन्यः धेत्रम्यस्य विष्ट्रम्यः विस्तर्भे र्ट्रा क्रिंत्र नया रेवि ख्रु नर्जे नया है नवित नर्जे या प्रिट यह त्या प्राप्त ख्रुया उत् गुन्नी प्रेन्नेन हो न न्याय क्रिन्न न या अया यम प्रेन्निम ने न अया यह न से अ श्रूषाचान्यो क्षे अप्रमुक्तान्ये मार्च मार नहेग्या थुः अ:श्रेव ग्रान्या प्राप्त व्व द्वाय ग्री न्यु न्द्वय अ में ज्ञीय प्राप्त हिन र् कुयार्से रूटा वी भ्रुकंट र्ट्रा अव्यापि श्रुवा या हे के दारे वे भ्रु विवा पिते र नर-दर्गेरशको। इब-दब-झूल-ग्री-श्रुद-र्स-नद्र-प्रति-श्रु-स-द्र-। यावशः केव नमु न ग्री श कु ने वै नक्ष वि ने स्थान सम्मान नम स्थित है से सम्भूष यदे प्रहेश या इससा क्ष्राचीं दा गुर्सा है। वया से दे खू न के कि सा गुरन र निवेद्दानिवादान्य निव्यादान्य स्वर्धित स्वर्धानिवाद्या निवेद्य । गठिग निया ग्री सुर ग्रुवा द्रशामित वर्षा मुया मिया में प्राप्त निया सुर्वि । निव र तु र ये ना य र ते र व र व र शे र शु र द र य के द र शे द र श ना य र व व ना य र शु र धेत्र'रा'य'ग्राशुरश'राशा दे'स'व्या'व्यश'राधेत'रावे 'न्स'व्यश'रास्य'

इंदि में ८ पुन्य अपे । इंदर्श हे मुन्न अपे । इंदर्श हे मुन्न अपे ।

ने न्या श्वापर हे वा पर सदे व नु हिं वाया पात हैं न्या हा नदे हिंवा वःभ्रः अधिवः इस्रशः वर्ळेषा यः ने। वर्षे : श्वरः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्टः विष्ट रे। यहुःइसःशः सः वेरायाह्मस्रायाः सुन्याश्याः वर्षे विद्याः वर्षे व्यायार्षे । वर्षे नक्षेत्रभाराये भ्राविद्यं वित्राचित्र । वित्राचित्र वेत्र वित्र वि प्रथमःश्रुः वे रहेमः वाहें र प्रदेश सर्व सा हो र प्राकृषः वे सा वाहिवास द्रमा रटार्चेत्र मुग्राम् केत्र से त्यापार्शेया या यह या है में प्रविद्रास्ते विया वशर्दिन वेर वुर न सेर कुर विश्व परि विश्व वश्व र दिन वेर वुर न ह वसरमाराष्ट्रमार्भेरासेरावरेते वर्षात्रम् वर्षा नुमासम्बद्धाः स्ट्रास्ये न्वार्यायायों द्रायर त्रायदे हात्युवा श्रीरा वाद्वाया उत्राय व मुदे कु सर्वेदे सर्दे य दु न भूत हु न क्या ही न्या य भूट न सम्बर प्या पि:शर्माहै। हासबीवापश्रिसारमार्चेवातु विवासारी विवासारी विवासारी विवासारी विवासारी विवासारी विवासारी विवासारी विवासारी विवास व नर्जेशन्य स्वरंग्या

दे त्रशः क्रुत्यः स्थाः श्रुत्यः यः स्थाः त्रश्रदः त्रश्रदः ते । त्र्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः व

इसरान्डेग्राय्यम् वरायराञ्चयाया इसराग्रीयानीरा(१६न)नर्डेने मदेः भूमका वि मर्द्ध न स्टामी का लिया भी का यहे न पु चिंदा राया वार्षि वा से का क्षें श्रुप्रशास्त्रशास्त्रशास्त्रशास्त्र प्रमानित त्यशास्त्रेतः ग्री तर्गा संस्थित स्था स्थार मित्र तर्गा हे सामग्री मुलासे शुन्येद्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्याः वित्रान्याः नशःतुग्रान्यः नकुः सुन् । र्शेन्याः ये। विष्वयः नशः ग्रान्यः नकुषेः तुरः १ सराः भून्। नेवे अर्द्धन दिना निर्मा ने ने न अर्धि न द्वेन में अर्थ प्राया प्राया न अर नर्जे में मान्यामा निर्मा के मान्यामा में मान्यामा मान अर्द्ध्दर्भः यरः में दः है अः कुदेः नर्ते चे स्थानशः यः क्रश्यः नगुगान्यशः रः श्रें केदेः याद्वा त्यया वित्र वित्र है। श्रुया राहे के त्र में त्रहेवा हेत प्रतर श्रुया प्यतः णुअः ग्रीः भे अः श्रुः अअः श्रुवः पदिः गार्द्धगः विष्णाः विष्टः केतः र्वे र र्हे ग्रायः परः गुनन्य। दे:श्रेन्द्रन्तुन्ग्रेन्न्रन्र्यंयानुन्नेन्ग्रेन्थ्रान्यन्थ्रेन्थ्रेन् गुन्यायन्य पान्य निम्नान्य सेन्य सेन्य प्रमुद्र प्रमे सेन्य सामा सहिन्ते।

लेबाश्राचिश्वाक्षेत्र्याक्षेत्र्याक्षेत्र्याच्याक्षेत्रः विवाद्याक्षेत्रः विवाद्याक्षेत्यः विवाद्याक्षेत्रः विवाद्याक्षेत्रः विवाद्याक्षेत्रः विवाद्याक्याक्षेत्रः विवाद्याक्षेत्रः विवाद्याक्षे

दे त्र अ.र. अदे वाद्वा त्यवा विर वी वाद्य विर प्र र त्र अ अर रे विद यानेवार्यास्थः त्रिवार्यारायार्द्धः वर्षिरः त्र्या यार्द्धः विद्यायरायायरायः यार्थः मुश्रुद्दान्य अवदायशाम् दिन्दिर्द्द्र । याद्दान्द्र यापित्र दुः गुरुष्यायः क्रूशः भी विद्र न्या पाद्र निर्देश है विद्र निर्देश निर्देश विद्र में विदर में विद्र म हें ने के न के निहें न निवादि का निवादि के निव क्रेंनश्रथ्वाग्रीश्वाभी नार्दाप्ताग्राप्ता ग्राह्या मार्दाप्ता ग्राह्या मार्दाप्ता ग्राह्या मार्द्या म गर्डें वर्षेर गश्यामी सेट र प्रेंगे द्वारा देव विगया विस्तर है। वहेग हेव-निन्दिया । हासबीवा नर्नः हित्यवियानः इससानित्या सुः श्रुवासर्वोः हैं श्री नवाय में वर्हे वा में वर्हे न हुं वा वा वो ने मा ने न्ययः भुः सें म्रम्रमः सें सं म्यूयः नः निव् नः निव्या निव्यः परः नेवः नरः श्चरमी मान्य कुर्य्य गुर्यं पर्वे परवे परिते परि

यह्री र.श्. कुरान्याः संत्री पार्टे वित्र इसमानत्वामा स्राम्याने श्रग्राहे केत्र से वहिगाहेत न्यर धुगानी सन् न्युर विरावस्य न्यायर नने नर ग्रेनियाया वि न न न हिं ते दे खूर हैं ग्राय ह्याय ग्रेन् ग्रेय वर्षिरः ग्रीःवर्षिरः वेरं गुवः ग्रायाः नुः स्वितः वन्नायः सरः सुरः गीः मुवः सर्वतः ग्रीशायहिर्पातिस्यास्यास्यात्वरा यहंशास्यास्यानहराग्री स्था वर्गुर-ग्राम्याये ना वर्षेत्र ग्री ना भी ना में कि ना मा से का मा मदे सके वा वा शुरा न्या मदे सु नहुत की शावा निय ने स्थाप सुवा की वा द्वा (१२) वन । वन । वन स्वर्थः स्वर्धः स्वरं चिन् पर्गोन् प्रयाष्ट्र प्रमान् प्रयायायायायायायायया केया केया क्षेत्रा क्षेत्रा स्व नडशानने वासी भूव वासा मुं केवारी वे मान्य मुं केवारी वे मान्य मान्य विष् क्रॅंटरम्हेश्रासेट्र बुटर्ट्र प्रह्मायदे वसुर्यासेट्र स्थान सकें मानी द्वीर्या यथा रटःसूरःखूत्रभीशःगुनःमदेःगवयःसेर्।मटःकेत्रभे नरेःनरः यानेवार्यायानी वित्रास्त्र त्राय श्रम्य श्री केत्र श्री न्या प्रतिवार्य स्त्री वा प्रायो न्या स्त्री व नमा समयः वित्रानसे वाष्ट्रवाची सामावि गुवाया कुवा नदे नसूव पायह नगर-रेवि:वन्न-नक्कु:इस्र-धर-रेतिन्ध्य-धर्मिन्वन्य-स्थित्।विश्य-धरे ळॅग्रागुत्र-नगदेःगर-५८-सूत्र-भदेःन ग्रुट्या ग्री-८-र्रे श्रेन हेदेःनर-५ श्चेंगश्राधराश्चरार्हे।

यरः श्रीयश्र क्रिक्ष्य श्रायक्षर स्थात् । विश्वास्त्र स्थात् स्थात्र क्रिक्ष स्थात् क्रिक्ष स्थात् स्यात् स्थात् स्यात् स्थात् स्थात्

अँदान विद्या यें न दुः ग्राह्म स्व क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र स्व क्षेत्र क्षेत्

यःवःच वर्षिः वर्षे स्थाने हे हि न्या र है स्वाया वु या वियः हु यवे या या ख्राया यरःश्रॅरःयरः नर्द्वः विद्या गुरः रे गुरः नर्द्वः नगुरः वे नर्गुरः वे नि वर्षामिनेग्रा नरः शें देव सामरः सन्रः नहिम्या सुरः पनः कुषः रेवाः कुषाश्चित्रन बुदाक्षे भेरनश्चुरायदे क्षेर् के सम्माया स्वर्धि सम्भावा स्वर्धि सम्भावा स्वर्धि सम्भावा स्वर्धि सम्भावा स्वर्धि सम्भावा वह्रमामित्रे सूर्र् । से विमय विमयो सेमा महित्र मर्रा समें यम नेमा रार्श्वेचार्रान्द्रेचार्रान्द्रेच्यात्रान्त्र क्रुव्या अवार्राह्य क्षेत्र स्टिन् स्टिन् र्रे निर्मु कुय र्रे र प्रेर्प्य प्रदेश्यर न सूत्र चुर न या न हेत्र तथा के र र र दिरमारादे थे 'धुयाची 'द्वा स्वाचीमा विसमा न उदारादे सर्वी 'यना सर्वेदः नमा वेंगाः भुभूभः नम्मया द्वीराषा सी ने सामभूत हिरान्सा मदि सेंगा ग्रीशक्षियासम् सहम् तथा अन् रहेगायायी ध्यान् क्षेत्रामदे हादस्या सहर्नान्ता वित्वुवाची सर्केन हेन हे खेरे हुन न स्वा हुन वी हवारा उदःदुयःर्रे विवायः स्वाया सहदःदया दःर्वेदःग्रे कुयःर्रे विवायीयः वस्रदःयः यान्यस्य भे द्वित्या स्वाप्तरं यान्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्य हुरनेश्रासर्केन्द्रेन्सेर्सेर्सेदेन्हेन्यान्नरश्नेन्द्रेन्द्रं (१४०)सक्र रस्य बेर्न्यम् यद्रन्तुः क्रुयार्थे राष्ट्राक्षेत्रे स्थान्यूत्र्रम्या नद्धंद्राम्याः वीत्रापाः ग्रेश.यट.पि.स्रे.पंशायटश.भेश.श्रेश.वे.इ.र्जं.पर्शेय.त.श्र्योश.टेतयो.तर. <u> न्यायः नवे हः वसुवासहन् केटा कुवारे साग्रहायाः निरावे उदादाके सा</u>

क्री.चनकार्य्या.धे.स्रकार्ज्ञा ।

क्रि.चनकार्य्या.धे.स्रकार्ज्ञा ।

क्रि.चनकार्य्या.धे.स्रकार्ज्ञा ।

क्रि.चनकार्य्या.चनवित्र ध्रुंच्या.चन्या.च

नकु'न्र्रस्य दुःइ'गहेश्रस्र ने'न्य (१६न) श्रुग्य महे' केत्'र्से रूट र्चेत यः विष्याची विषया ना व्ययः दिन विस् विष्या निष्यः विस्तर निष्या निष्यः विस्तर निष्या न वाद्वां वा वा विर वी द्वे दर वस्तर उर् वार्य वर वस्तर स्थान सुव है ह यग्रेव। क्रेंपाय। क्षेत्रम्। ग्रुयया ग्रुयम्। हिर्मिया क्रेंपा नहेग्रया देन्द्रमण्येन सर्थे सह्द्रह्मस्य ग्री ब्रुव्य या व्यस्ति वेरःश्रुःर्केष्वाराः वर्धेराःहै। वर्ष्यवाश्रूरः वीः वरः सक्तरासेरः वरः विवः नशर्दिन नेर वर्षेश मदे ख्रम् न कित्र ने वाप्य हो। विशनेर क्रिंत से के के र्रे निर्वि खुरा गहिरा रा गहिंगारा से न गावित द्वारा से न र्'त्र्क्रियाशाहे मे स्क्रियार्'या स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्याम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्याम्य स्राम्य स्राम स्राम स्राम्य स्राम स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स र्वेद्राधेशायी पुषा की द्वी । इंपाद्वा विष्युवा वी श्वाद्वा वा कुषा र्वेश श्रुवारानश्रुवारावे के यानविष्यया ने या शुर्गु मुना देव ग्राप्त वनरमः ब्रेट्सः ग्रेः स्रूटः देरः व्रवः सें विवाः रेसमः वृतः ग्रेमः नहनः सः नवः सें नवद्यायमिया देख्याकें या कुया दूर में दाहे या है या या प्याय सके दादे। लय.लेश.योश्रेश.यो.प्तर्यय.लेज.चता.श्रुष्टुःश्रेट.री.योज्येयाश्रासप्टुःरीय.लय. युरःवर्द्धरःकुशःशुःशुव्राद्यरशःहे नदःश्रःनहेग्राशःश्री।

र्या स्त्री । या स्वर्ध स्त्री स्वर्ध स्त्री स्वर्ध स्त्री स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

र्केशः हे नर्शेन् त्रस्य (१६न) म्यायाय स्था क्रिया में ति हिन् में मेर या नक्ष्र्य पित न्तु नक्ष्रेया प्रस्य प्रक्रमा प्रति ने ना मेरा प्रया क्रिया क्रिया मेरा या क्ष्रिया क्ष्रिया क्ष्रिया मेरा क्ष्रिया मेरा प्रति हिंगा मेरि मेया प्राप्त क्ष्रा मेरि स्था मेरि हिंगा मेरि मेया प्राप्त क्ष्रा मेरि स्था मेरि हिंगा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि स्था मेरि हिंगा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रिया मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रा मेरि सेया प्राप्त क्ष्रिया मेरि सेया मेरि सेया प्राप्त क्ष्रिया मेरि सेया मेरि सेया प्राप्त क्ष्रिया मेरि सेया प्राप्त क्ष्रिया मेरि सेया म

दे त्यान्य स्थान्य स्

हेश्यत्रेत्त्र्येयाची सर्क्ष्ट्राच्या स्ट्रिया सर्वेत्याची स्वाप्त्र स्वाप्

विवासासास्त्रम् स्ट्रिं स्ट्र

र्त्त्रिंश्वा । स्टर्मा वित्र स्वर्णा वित्य स्वर्णा वित्र स्वर्णा वित्र स्वर्णा स्वर्णा वित्र स्वर्णा वित्र स्वर्णा स्वर्णा

यविष्ठः त्रात्र्यः क्रियः भ्रात्यायः विष्याः यो स्वतः स्वतः

स्वाश्वाद्द्रा । श्रीत्र विद्या श्रीत्र विद्य श्रीत्र विद्या श्रीत्र विद्य श्रीत्र विद्य विद्य विद्य विद्य श्रीत्र विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य विद्य व

ने त्रभान्तिं त्र्यभास्य श्रें त्या के ना ने त्रभा स्वाप्त स्वापत स्वापत

र्ने विः अः वेन् विनः तुः निवे अः पदिः श्रु अः वन् अः श्रेनः अनः में हिः सुनः व्रु अः वर्षु वः मु मु य रे प्याप्त विष्य स्वया प्रवाद विष्य स्वर्य प्रवाद विषय स्वर्य । विषय स्वर्य । विषय । रेट ल हैन रेट ल द्या रें रा सूट रें के दे सु तु ने वा या हिन सूट वा स ग्रीभागायाग्याभार्याके मेग । पार्वे दामुया सर्वदाग्री भासदा से दापासमा न्नानिते मेर्पायावर्। र्वश्रामेर्पेर्श्याय द्वानी श्रामा मुराया श्रुराया यर्वः कुरः वीयः श्वेता वर्गेया वर्गेया वाष्या कुरः वीयः १० नदेः श्वेतः तुः होः ययः नगरना सुर्वा केंग्री केंग्रा से स्वार्ट्स केंद्र केंद्र से स्वार्ट्स स्वार्ट्स स्वार्ट्स स्वार्ट्स स्वार्ट्स स माम्रीतायायमेत्रा नार्देत्रित्र इताम्यास्य श्रीताम्य साम्यास्य साम्य साम्यास्य साम्यास्य साम्य साम्य साम्य साम्य साम म्रोत्यायमेत्रत्र्यायासे। इयार्याके यन्त्रम् यहार्या यहार्या यहार्ये स्वार्थेत नु नहिषाया हे ने निरायक्षेत्रया नवदान द्वारी हिषा पोदे ख्रया विष्टे पाद्धा नह्रव से शाक्षवा र्स्ट स्राथ में निया है व स्वाप्त में निया है

न्यर अग्रेव नवर । ज्यान्यर गो न्या यथर अपर (४१व) ज्या । अक्र थ र्रे श्रुम्या स्राम्प्रिम्भे विर्म्प्राचर द्रास्य विरम् कु प्रायमिर भी द्रम ग्री-देवार्यायः विवानश्चुद्रा यो प्यायात्र रात्रात्तु द्वारा स्थायात्र रात्रात्वायाः विवास स्थायाः विवास स्थाय गुरुष्यर्भर्भात्र्वित्र्यीः भेष्यर्भात्र्वेत्र्यात्रुप्यः भेष्याः भेष्यः वशर्वे र छिर र तस्यायायायाया विया हेरा वहर से हि यह व तिय हु नवेशायर श्रासहर र द्वाप्ति वेशाया सामा स्वाप्ति । येशायिः सहस्यास्या उत्विना विद्यास्य स्य स्वित्व देवे न द्वा स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स्वित स्व याक्रेट्रायमा कुःहे प्यमायह्याये विष्वेर्यायर स्रेते श्रूमार्से मेरिहे पशुः नवे क्रुेश ग्री निर्देश में निर्देश अद्याय सम्येवाय हेया क्रिंत सवे से विर विवार्षित् प्रमः नक्ष्रभः प्रभः प्रमः सुद्रभः ग्रीः प्रयः द्वो । न द्वेदेः पेद् न , न न प्रदेशः शुःक्टाबिटा कुयातुःने खूदे विद्याक्ष्मा सहे सामा विवा पुः सर्वे दान सार्वे व वयर। गठ्यायाणी:तुःर्वे याञ्चरयायदे यिव ग्रीयाप्रग्या विपवरायर वर्देव ग्रीश मुल मुनर्गेदश नद र्शे सुर रे ल न हे नश रुश देर गेंद ह्र्याये स्वाप्ता कृषानु निवासी स्वाप्ता विवासिया हिष्य हिंदा न निवन्त्रेन्द्रभागित्रम्य स्वत्यः भ्रीयास्य ग्रीत्रम्य हि.स्.स्वर्यः म्रीयाः स्तर्यः गशुस्रानु सुत्र पर नत्ना सार्थे ही से से एक न स्वर न से निह न निहा

न्तुरुष्य स्वत्वार्थः सुर्वार्थेष्यः द्यार्थेष्यः स्वत्यः सर्वेष्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्व

श्रुभःच। वेन्यान्त्रभःचित्रःक्ष्यान्त्रभःचित्रःक्ष्याःचित्रःवित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःक्ष्यःचित्रःचित्यःचित्रःचित्यःचित्रःचित्य

देः प्रायम् वर्षः ब्रम्प्रप्रम्थः प्रदेश्य प्रायम् वर्षः वर्ष्य प्रायम् वर्षः प्रवित्रः प्रदेशः वर्षः प्रायम् वर्षः प्रवित्रः प्रवित्रः

स्वार्त्त स्वार्थ स्व

मूर्ट् लूर् अर्प्त सर्प्य स्थान स्यान स्थान स्य

वेशःश्र्याशःग्रीःयाद्वयाःययाः स्त्रेटः यथा क्र्यः मुख्यः यह्याः यः वेशःश्र्याशःग्रीःयाद्वयाः ययाः स्त्रेटः यथा क्र्यः मुख्यः यह्याः यः क्ष्यः क्ष्यः अद्दान्त्रव्यक्षयः वित्रान्त्रव्यक्षयः वित्रः वित्

नह्रव ने शवश कुय में र ग्रेंय न न विव नुर न न श कु हे न के श र वि नगदस्य बिटा सहट क्वायायोश्य श्री शही शही यायदि स्वीत्र स्वाया ग्रु'द्रगत्रकेत्र'स्'ग्राव्दा रुअ'भ्रव्यादे'द्रगात्र'र्वेद्'रु'य्याकुव्य'स्'द्रगुर क्र.चैया.वे.म्.याश्वेत्राक्तयाचेयाया यर.श्र्.श्र.म.म्.क.यश्च्याया यर.चे. श्चर-तेर्-तु-र्येर-नदे-यस-तु-५-५८-सर्व-भेश-उद-विगाय-तेर्-ग्री-नरे-र्नेगादिशासमा नर्दर्भे गिलेगमा कुलानु वर्षा भेंता नर्द्रक्तिं वस्यमा ग्रीमानिसमान् स्ट्रान्यस्यान्याः स्वान्यस्य स्वान्यस्य दिन ग्रम् कुष्य तु त्रम् र्शेव पाव स्त्रोग्राय या श्रुष्य र्शे पदि । इस्र स्र स्य ग्री स लिन्याम्बुम्यम्प्रान्याचेनाः विन्यमार्मेन्युः विन्याम्बन् यावनः क्रूपाचित्राच्यात्राच् चित्राग्रद्याः स्त्राहेवाः प्रमुखाः वर्षयः स्टूदः नुन्त्रः स्त्रा नेर-ब्राह्मअ-व्रिक्ताहे वर-क्रायनर-च्राय-क्रियानक। व्रिता-र्र-क्रेअपन वर-मुयासमें मुद्दानभ्रमस्य द्याने निया द्वारास्य हितास्य हितास्य हितास्य हितास्य हितास्य हितास्य हितास्य हितास्य ञ्च-अ-देना-मुख्य-प्रयायदा बेर-प्रया श्चित्र में प्रत्या व्याप्यर

इययायक्रिययास्तिः हातास्या न्यानास्य । सूनयाने रास्याययासूरा सक्त्यानुमान्द्रमान्यायादेगाः हिस्स्या नुः स्रीः सदेः नुमः स्टानमून्यानविनानर्यापदेः भूनयास्। विन्तुः स्वानिन्तुः स्वानिन्त्रः स्वानिन्त्रः स्वानिन्त्रः स्वानिन्त्रः स्व थॅर्नरिरेरेर्रा महेर्द्वमा न्या सूर्केर केर केर्नु खें नय र्वे नर इ.ज.पाश्र्यास्थासराधियाम्। विराद्मियान्यास्या बूट्या धुवानु अँद्र निर्देश है अ शुः अदः निः कु निष्ना न अ विर्देश न स्वर निष् वर्गानन्ता रमवर्त्राम्बनायमायार्देशहेशस्यास्यर्भात्वरमा वीरा देवा के वा वी विवाय वर्षेत्र से दास वहवास सदी वर्ष है। दुः वर है। मितःक्र्याक्षेत्राचित्रक्षेत्रान्येताधेता धेता क्रिया विषया प्रिया परिनेत्र ग्रीश्रान्स्रें केदे द्वाप्तर्शेषाश्रार्वे द्वाप्तर्थे द्वाप्तर्थे त्वाप्तर्थः बूर-वी-तु-ब्रॅ-तुर-क्रु-नदे-खुर-नक्ष्रन-तेन-धर-दि-अर-विश्वायश्रर-तु-विन-धेंद्रअः प्रवे प्रु विद्र दे र रे अ विदे व दे विष्य या श्री वा अ द्रु या अ विषय व व गुन्ना शुंगा भी वें रामु गिन्ना मिन्ना मिन्न यान्वीम्यासदे श्रुवाध्व श्रुयासू मान्नर में रात्ते के साद्युरान स्व यदे यहा कु रायदे हे व छे द द्वा रायदे के व छे द दे व के व रायदे के र् र्शेट्टर्वि वे रिस्रास्ट्रिय विद्या

श्रेन्द्रम्म् अर्ग्नुवर्श्वर्त्तेवाते। स्रेश्वर्म्स्यर्ग्यीः धेवार्स्यन्ये प्रशः क्षेत्रः सहि । प्रस्ति । प्रदेश्यात्र स्राध्यः स्राध्यः स्राध्यः स्राध्यः स्राध्यः स्राध्यः स्राध्यः स्र न्द्रियोशासुद्राचसूत्र्वादेः(३३व)तुर्यादेरार्वे त्र्यात्तेव्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् विन्त्रमञ्जूदमाने। न्यो न्यान्य द्वेत्र सन्। क्रियार्वेत। सासुः सूरामा क्रासा ग्रेग्रास्य प्रत्य प्रत्य स्र हुँ न न्या के न बुन नु र द्वेय प्रत्येय प्रत्य स्था न्य र ने मु से सर्वे दित्ति के ला वह राष्ट्रीत प्रीय राष्ट्रीय राष्ट्री वाया ग्रीया नग्य व्रिंशः र्सेन्स्ययः ग्रीयः यहारि । सेन्द्रिन्द्रान्त्रा व्याययः सूदः वीयः ग्रम् क्षेत्र के वर्षे द्वर्ग वर्षे क्षेत्र सके वर्षे वर्षे क्षेत्र सके वर्षे के प्रमान कर्षे के प्रमान करिया सहयाहे सदाध्या दुश्व द्रद्या वार्यया सूदावी वर्ष दुर्दि दुर्द र्रेटिश वश्यावतःसेवःगश्रुः प्रकृयळव् कुयःसे रःगश्या अविरःगे कर्यः वुर-देवाशवश्याशवास्त्रद्या विश्वत्रास्त्राच्या विश्वद्या विश्वत्रास्त्राचा प्रतिविश्व म्बर्श्यायार्क्यार्स्त्र्व्ययान्द्राच्यावार्यस्था र्राष्ट्रियायार्श्याया खर नमून समन में नस्य राय ग्रुप्त मिय होन हो। कुय में कुय श्रे र पर नडर्भायात्वार्क्षारुकेत्रार्थे नदेवायम् देवे देशके स्क्रिंद्रिंदे के न विवा त्त्राचाश्रुव्राक्तीः नरायः दुरः दुः वह्नाः दर्गे वः यरः नश्चनाः दुः न दुनाः हे। वर्गेशःग्रीःमदःयःषःग्रःकेंद्रभ्यःग्रेष्य्यःग्रेष्य्यः व्यव्याव्युषः द्वायाः वर-८८-१३व-३वा-१२-८५-१५ वर-५-१३व-४४-३५-१३४-४४-४५ वर-वीयः नसूनमःग्राटः में द्रास्त्रेसः मादायमः स्याः चुटा देः सम्मादेदायः न उदादे। हे र्ह्मेन गुनर्के अ हो ५ प्यये कर र र्शे हुआ दे न सम र माया हो सम स्मार सर्वे न व के न व अवतःन्याःचीः त्रुःवः अर्वेः नः त्रुवः धरः न्याः धरेः खुं वः विव्यवः देः यः सेन् ः धरेः यः यापितः सुरानित् श्री शार्श्वानित्रं त्री शार्श्वानित्रं वा वित्रं न्वायः अगुरः श्रुन् मिये न्वायः श्रेरः वा चने श्रुन् बुन् नु प्रदेषे प्रेरः सर्देव-र्-अहर्-रावे-वावाका-स्रुव-गाहि-गावे-र्केर-पव-र्सेवाका-ग्री-ववाका-पर-वर्वी न प्रवेश्यानिव से स्वर्ध के से हैं। या निष्ट्रे व प्रवेश से प्रमाना या श्रूट्यह्र्य्यायाविव देया श्रीया सेवया है। देया तुः क्या नुः यह या अपवः र्भ्यामुलार्भित्यान्नो नान्य उन्हान्याम्ययान्य निम्नुन्त्यार्भे नायान्य देश्वेया यः विवानक्रिया विष्ठेशः प्राची श्रीयाश्वालः वर्षः केतः विष्टः प्रशास्त्रितः इस्रा गुरा पर्वे गुरा परे वें न्या प्राप्य स्वा के न्यो स कें स गुरा प्राप्य यव ने म व रामे प्राप्त म व रामे प्राप्त म व रामे प्राप्त म व रामे नु'यार्रे व्यान्य सावत्र'रे राष्य्र से राष्ट्री से दाया वर्ष या व्याप्य सावतः हेत्र दर नहेत्रपर नठशपानिदान केंशन शुरान श्रेन्य श्रास्त्र नवदा श्रेश्रीत

इस्रायान तृत्यान्य। नरं वार्षे प्रात्यावावीयानी भूके त्यानमास्त्र प्रात्मा के या यः भ्रेट् छ्याः श्रें याशः श्रें द्वायायः वियाः चुट य्ट्याः यशा शःयवि यदे द्वाः इयाः र्स्यायन्यायवे केन्न्। क्रिक्त क्री क्रिया क्रिय क्रिय क्र नःवह्रअःतुःश्चेरःवःकेःनवेःरेग्रथःश्यायःयाववःविगःविरःधःरे। कुवःर्यः *क्रेन*:न्नःश्रॅव:सर्केन:हेव:ग्रुन:पि:र्लेन:नवेन:नवे:न्स:शु:श्रॅव:यस:ग्री: वर्त्रेवानाः वर्षेत्रम्थाः श्रुवाद्यस्यात् । वर्षत्र सिवे द्वार्यस्य म्यान्य वर्षे श्रुवायाः ग्री नित्र मा सम्यादिया वर्षा नित्र में स्था सम्यास्य स्था सम्यास्य स्था सम्यास्य स्था सम्यास्य स्था सम्यास्य स विवा ने वया सूर नडं व में या बनया या यानया परे यह न पया पन हया सवयः(३८२)र्गःक्रूशः ग्रुःनरः विशः त्रुर्शं सवितः स्थः सुरः नश्रुतः पः देः भ्रे.जयार् विरायाक्षेत्रासद्दावया यरमास्यास्यायाः स्राप्तास्याः स्राप्तास्य स्राप्तास्य स्राप्तास्य स्राप्तास्य नेश्यळेंगानी क्रेंशन्यरायश्येत कुकु यळेंदे क्रेंट र्भु पहिर्या नेट वक्रे भेर केंद्रे रेग्र पर्हे व र्र र ध्रा क्रु केव रें अर्के ग्र गे रहें य ग्रुव नहेशम। नुशमाशुयान्त्रमान्यम्। नुशमाशुयान्यम्। नहेशमान्यम्। नहेशमान्यम्। नहेशमान्यम्। नहेशमान्यम्। यश्रभेश्रामदेर्भ् हे श्रुवायदेवरपदेर्भिष्ठः श्रृहेर्द्रान्त्रावेदा श्रूम् श्रू हेव-५८-वड्य-हे-सद्याय-ध्यार्थ-हे-हुस्यय-द्य-विद-५्न-ध्रेस्त-६र्ध्व-ग्रीश्रासित्रित्रम् इप्युवाग्रीश्रास्प्यागुराष्ट्रप्रित्रम् वरात्रम्

र्श्वनः प्रति श्री अर्थे हित्र व्याप्त विष्णे विष्

ने वस देश की सायस नु ख्वास है से नस पत्र वि विन् की खेल दे क्रेंचर्यार्से के प्रया के प्रया में अक्सर्या प्रया प्रया मुख्या ही स्वर त्रुश्रासदे तुश्रास बुश्र श्रें वा वी श्वें दार्थ तुश्र त्रात्य वा वा श्वें द खरामिंदरमास्य सेन्स्य स्थान स् इयशःग्रीशःनशुःनः १८ सहयात्रशः १८० नशः धरः कुः से १ पायः स्तिनः र्नेर्न् श्रेशः स्माप्तिरः नहनः समारुषः वर्षेतेः सुद्रः ननमः मार्वेदः सञ्चः क्र-ज्ञानमा देवमा स्वरायद्या क्रिया संग्रिन्य सम्मानस्य वर्षा प्रमानस्य कु: केव:र्रे: न्रावरुष: के सहयः वर्ष। (३५व) त्रवा: न्यर: अर्थेव: नवर: नुः नव्यामा सुरःमानवःरानानवःवहेवःग्रीःराकः सम्यामाने सेनमा नुमानेरः हे : र्ह्मेन :पार्ड्या :प्या :पिट :हेगा :पवे :नगव :नर्शे अ :न अ : प्यार अ :ह्य अ : नश्याशाही वरार्से मुदे प्याया सर्वेरा नदे सामर विवासिया या विवासी अर्केन्द्रेन्न्न्र्न्न्न्द्रिन्द्र्यक्ष्यायाविषाः हेषाः पाया वार्यः से सूर्यसः सुः यह्षाः

याया भ्रापर वे क्यं क्या विवा हे या याया वे या यत्या या निवा विवा म्ययः मुद्रितः एव या वर्षा ने व्याप्तर स्वाप्तर मिय वर्षा ने या स्वाप्तर स्वापत्र स्वाप्तर स् धुवान्यमान्त्रः इत्याने व्युवाः सूत्राच्याः वयाः वित्र न्युवायाः सुर वर्षा क्केंन'न्रेंद'र्नेन्'न्'्युद'रेन्'न्त्व्यायायान्त्वायायाः ग्री'र्वे क्कुयान्याया सर्वेग'न्सर्गी:र्र्नेन्र्रंप'णेर्णर्णर्णर्ण कु'सर्वर्संग्रेरे ख्यायायावेदाने वान्यायुर्विवायायुर्वा है यायान की याययायार मैश्रान्ध्रिन् लेश्राण्ये। वित्रुव्राचे म्यायायायाये हे स्यास्य प्रवादा विक्रुव्य गुर्हे वर्देव पत्रा । कु अळव से द पर मावव द मा कुमा । हे समा शुर नवे दस वर पहें व रा धोव वि । जु रा श्रुषा प्रवे श्रुप प्रज्ञा नगर में र ग्राम वा वा वि । श्चेत्रायान्या विष्याच्याच्याच्येत्र स्त्रित्याया ने ते ते न्याचितात्या श्रुदे नर्गे द न श्रुक्षे व श्रुक्षे द नदे हु व सुव उद भी द न श्रुक्षे द न श्रुक्षे व स्था दे न व न श्रुक्षे व स्था दे न व न श्रुक्षे व स्था दे न व न स्था दे न व न स्था दे न स् इयान्द्रभ्वायवे येग्रायान्त्र मुंग्री म्यूर पेव र्वे ।

दे त्रशःश्चितः द्वितः श्चितः श्चेतः स्वातः व्यातः वयः व्यातः व्य

ने त्र अध्याप्त से अपार्द्ध वा व्यवा विदः वी वर्षे द्वी वर्षा ग्री वर्गे दिया सहर्प्तर्पति वेत्र स्था भेषाया श्री देवाया प्रहेत्र विवा वीया रेप्त सुवया मश्राद्रिशः गुनाये व्यवस्थितः विष्यः विष्यः हिष्यश्रास्य विष्यः न्वीं अः प्रशा न्तु अः व्यु रः वळ रः वी र्नो र्से रः सूनः पः से वे र्नो र्स् वः वः व्यु स् धरःनेश्वत्रश ग्रोरःग्रीःसङ्गःदगेःश्चेरःयःदेवःदुःस्यादश दगेःद्ध्यः न्दाक्ष्व केना नुः श्रुवा निदः नुः श्रुवा निवा कुषा त्या दिवे खेला विद्या स्त्री स्त्र नक्षनशःहै। क्षेत्राक्षेत्रः श्चीः त्रयः श्चीत्रः वर्शे तः न श्चादः वर्षेत्रः वर्ते वर्यः वर्ते वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्यः वर्ते यर वर्ते त्याप्या ने दाय विदा के या से स्पूर्ण के स्पूर के स्पूर्ण के स्पूर्ण के स्पूर के वःवेरःवर्भा भ्रेःदरःन्वयःदयायवःगदेशःशुः हुरःषरःयःवेदा देरःशुः क्षेत्रायाशीया दायवाडेवावेंदायादेखाचेवावा देदास्टावाडेयाशीयावर्षे चुर्यायदे श्रेन्या वश्याची सेयया उदाव सिन्य श्रेयया नेवा चेरावा <u>५८। भ्रेश्रेशन इटल्यान उट्टारास्याची राज्यारा प्रेश कुषाची यात्रा ।</u> सिवरायान् श्रुवासात्र स्वरादे र स्वराधी । विस्ति वि नडर्भायायेग्रायरान्ध्रभात्रभासूरान्ते। सुन्ध्रेग्रभायागृह्य रेग्रभेरातुः

गुरामशर्षि गुर्ग गुरान्या रेपर्मा भेरास्व भीराध्व प्राप्त स्वर्भ साया द्ये ग्रम्भ द्रम निव्याम क्रिं पृष्ट् शु दे दे महिमा स्वापित वे म ग्रामा यक्षव उव विवा पें न स्था ने या नि या (३६४)राकुःस्रम्मानी लें यानशेयाध्वापानशानश्चरान्यशानश्चरान्यत्रा यदे सुरा उत् गुत्र की नर्शे द त्रस्य र की विद क्रुन र से किर कुर या द्रया नश्रमाय्यायात्राच्यात्रम् स्वाचीत्राचीत्राचित्रम् विष्णायम्। विष्णायम्। विष्णायम्। र्रा इसरा ग्रीरा द्वीया हु नर्शे राहे। हे दे स्याद मुद्दा यादाय यावव ग्री या शुरा र्षेट्रप्रश्चे रहें असी विद्युव केट्य विगव विद्याप्य प्राप्त स्था विषय । निना हो द रामर सम्भवता है। सद्दे श्रुमा सूना या खु द द वा खु हुना रामा निव ग्री:सर्वक्रुराम्पर्द्रास्त्रस्या मुराया देःसराद्युर् से रे र्रा स्रीरामि श्चिरः ख्वः नक्कुन्। प्रशः में द्वं पंत्रे हो अवरः ख्वाशः रे। बुरः निवरः सर्केनः हेवा क्षें नविरार्दे रेटा हिन्य रार्दे के विराम् कुरा न्या क्षेत्र <u> न्रॅंब् मुक्र देग्राक्ष प्राप्त व्याक्ष क्ष्र प्राप्त का क्षेत्र क्षेत्र व्याक्ष क्ष्र व्याक्ष क्ष्र व्याक्ष</u> नहिनायायाया अळवाक्षायदेयायाचायायाची न्यादेरा मुल'सेंदे'सद्यालस'त्। न्य'सें 'सेदे'हेर'मेंद्र'स्य'लूगु' श्रुन'रा'गरिं' वर्षिर-द्रम् अद्याक्त्र अप्ट्रिया ग्रीया श्रीय ग्रीया म्याय स्वर्मा या वर्षा प्रायन्त्र मा वर्षा प्रायन्ति मा वर्षा प्रायन्ति मा वर्षा प्रायन्ति मा वर्षा प्रायन्य मा वर्षा प्रायन्ति मा वर्यान्ति मा वर्यानि मा वर्षा प्रायन्ति मा वर्यान्ति मा वर्यानि मा वर्षा प्रायन्ति मा वर्यान्ति नरः ह्रेंत्रं म्यायाना कि कि दिन्द्र मार्चिम्य मार्चिम्य मार्चेत्रं मार्थ हे अदि दिया र्शेग्राश्रुशाध्रुन्पर्राउव धुन्पति। हें में ग्रुन्कुन केव में वन हेव नु चल्वार्यास्तरे सात्रु में द्वे राष्ट्रिया द्वा विदायम् विदासे द्वा विदायम् विदासे विदायम् र्यान्यस्यान्दरक्रेत्रस्य श्रीटाम्बद्धर् (३६न) इस्रयाग्री नदे मिलेम्बर् विद्धर वर्षिर-८८-वड्यासंदे-भूदे-भूद-वह्न्व-ब्रय्यय-उट्-वड्नेव-ग्रे-न्वाद-ह्न्व-स्र-्र-तिर्वे नेषा सरम्र-्र-श्रुम् श्रिन्यम् सर्केन्द्रित्न्याम् सम्राम् इते कुल सेंदे क्वें अर्तु में की से तर्थे के दे तुस्र मात्र साम्न स्थानि निर्मा मिलेम्बर्भार्यतेमित्रः सेराम्ब्रेयात्मा ब्रेक्षाः मित्रवार्धाम्बर्भाः मिल्या क्र.चल्यायाययाचीत्रःस्वययायस्याप्त्रःस्वयायायायःस्वरा दर्गे.चनवः विः मुयासरासर्वे नद्वाम् सार्वे न्युक्त मुर्गि मुर्गि मुर्गि मिराया सार्थे राष्ट्रा मिरावे रा श्रमा अन्या विवायार्थे सार्टा सर्केन पाय गुरानर न्याय नरान सम्राय है। हैगारार्श्वायायावादेवे कुष्ट्रम् बर्याग्री विवायग्वा यर्केन्यर र्रेयार्थेरार्रेटायहवाया अराधेरारेवार्ये के अन्तर्भुवा बुवाया ग्रीप्रध्य नर-निन्न नेर् रें प्रिंट नवसानु र्क्या ग्रेर निर्देश म्या सामेर

新门

ने प्यटार्स कुराश्चाया स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स विविद्यात्र्याच्याच्याच्याः यह्ताः विद्याः विद रेव में के से ग्राया का का विद्या यह ता विद्या स्थान विद्या स्था स्थान विद्या स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्था स्था स्था स्थान स्था यातिविद्यासदार्याराज्या प्रश्नेता श्रीया स्थिता स्थिता स्था । यहा नक्षेत्रभाराम्यन्त्रत्या कुषारेविःन्त्र्राम्भेराहरेत्राम्भ्रम् য়ৢয়৾য়ৢয়ৢয়ৢয়য়য়৸ঢ়ৼড়৾য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য় ब्रिटा मुं.क्टरम्बर्भागार्द्धवात्ववातिरम् मुंद्धित्रन्त्रःके वर्भाग्यः व्यापा भ्रीत्युनःश्रुभाराव्करः पटा दुभारेवे अपितः श्रूनः के भागश्रुभार्भे ग्रीभार् अ'विवा । नरे'नर'वालेवाअ'र'र्र्न्स्नुर'(३४४)कुन'सेसअ'र्ध्य सेरे श्रेन्यान बुद्य निर्मेषायान क्षियान मान्य स्थान क्षेत्र स्थान स्था ब्रायायाये सूराद्धयान्धे राव तुराधी नर्वे यार्थे ।

न्वरमान्त्र नकुन्नुगमान्य स्ति स्ति के सेन् हेते नर्नुगमा र्था।

ने ख्रिन्यन्य प्राविश्व निया क्षेत्र क्षेत्र

त्र्रम् मुर्ग्नित्त्रम् । स्वर्यन्त्रिः भ्राप्त्रम् मुर्गास्याम् । विवर्णन्त्रिः स्वर्णन्त्रम् । स्वर्यन्तिः भ्राप्त्रम् । स्वर्यन्तिः भ्राप्त्रम् । स्वर्यन्तिः स्वर्णन्तिः स्वर्णन्तिः

याद्यान्त्र त्यम् । विश्वान्त्र त्यम् अत्यान्त्र यात्र यात्य

ने 'यर सु न वे न 'र्रे म्या से व मी 'ये मा है न हमया सु न यय या या । नक्षेत्रभाराये प्रायः भूताये प्रायु पार्वे भागी नर प्रायु भागा स्रायु में त्रित् म्राया য়৾৽য়ৄ৾৽য়৽ড়ৼয়৽য়য়য়য়য়ৢয়৽য়য়ৢঢ়৽য়য়ঢ়য়য়য়ৢঢ়৽ नर नहेता शुगानी लें ला बसरा उर लें र ख्रुदे र नो क्रें र त्याद विग शुर इरशक्षा अविगविग्राग्रीयस्य हु गुरावस्य भूरायस्य विश्वर विग्रभःस्ते सुन्देवा से। ने स्मान्य स्वानिन निया प्राप्त स्था गुर्यायया वियान्यासूनानी नरातु त्रासून गुर्या वेद्या स्थाने त्या नहेन वशःश्वराप्ताः नुष्टाप्तिः कुष्यळवः मीर्या वयरा उतः वितः श्वरिः द्वीः श्वरिः विश्वर्या मुनाप्या नस्त्र नहें या ग्रीप्यों महो या विश्वर के विश्वर महाया था नश्रम्भे स्वानित्राचित्रम्भे स्वानित्राचित्रम्भे स्वानित्रम्भे स्वानित्रम्भित्रम्भे स्वानित्रम्भे स् ग्राट-र्रा राष्ट्रविष्ठ-राष्ट्र निष्ठ्र निष्ठ निष्ठ । यह त र्रे विःश्रें राष्ट्रे नर्द्व भ्रुप्तुः हे नर्द्ध्व नश्रृव राये प्रविक्रिं विक्रिये विक्रिये विक्रिये मुयारिते र्ख्या मुर्या (३४५) इसायर रेया प्रते श्रुयापित प्राप्त वा मी प्रत यद्वरःश्चरः विवादि स्वय्यायाय्याः विवाद्वर्णाः विवाद्वरः विवाद्वरः विवादि । विवयः श्वरः विवादि । विवयः विवयः विवादि । विवयः विवयः विवादि । विवयः विवय

ते स्वरास्त्र स्वराधिका स

सर्वेश देवे हे अ शुः र्त्ते प्राया विद्या प्राविद्या प्राये प्राय तु-तु-सम्भारत-तु-तु-विन्। नेमारता ग्री-इत्यान्न थ्वापार्या दू-नक्ष्मन्यास्य वृग्गाः महितान्य न्यान्य स्वाप्य क्षि प्रस्ति । यहार्य स्वाप्य स ग्विटाख्नाया(३४न) ग्रीन्द्रिन् राः भूतः गरेशः श्रुः नः अरः तुः र्रेव। वैः यहः तेः त्वाः गी शः त्यः यदेः र्रेवः नश्रुरः बिट-नन्द-१३व-ग्रीअ-गाहव-व्य-विनय-धर-ग्रीद-धर्य-धी-श्री-भी-भी-इयसःस्टः६यसःग्रीसःश्चेर्पःसरःसे तुसःसदे विससः वर्द्धःसे विगाप्तीसः नमा सेमार्सेट्य इत्स्मार्स स्मामार्थ स्थान निवन्ती के राम्या के नियम के न इट वट स्वायाय स्वयं सूर है दें र यह द वया क्या विस्या विस्य विस्य मान्द्रक्षिर हिर हे न रास के मान्यव गाव ही मान्द्र न मार्वे व सर सहिर

ते त्र शक्क वार श्रें वा श्राध्य वा तु त्र अदे श्र ह वा वा त्र वा श्रु व त्र व त्र व्य श्रु व त्र व त्य

ळेव सेवि कुयावस्य गुव हु दसायवे ळेंया ग्रे हेव ग्रे प्रवास स्यास ८८. ह्रेंग्रास्त्रे स्ट्राक्ष्य क्रु श्रास्त्र सहित्। क्षात्र क्रेंन्से केत्र से स्वास हेता नग्राग्वरः है। वें दूं नः केव में नै में उन्ता नगे हैं त्वयायानि है तमे र्शेषाश्राश्चारी कुषार पुर्वेद हे । बन देव सुद से द पदे न पुर हे दे विष यदर:विदःवी:तुय:यरःवाह्ययाहे। वेद:दु:वेंद्र:ग्रूट:वे्वा:वेंद्र:क्यायांग्री: स्यते द्राम्यते विषाः श्रुष्या अत्यतः। अतः श्रुष्यः द्राम्या यहः केषः विषः यः(३६४) धेः इते : ज्ञाना शः श्रुवः ज्ञीः वे रः तुः न उवः रे विः व ज्ञाशः धरः वश्वरः न शः ग्नित्र:इर्अ:हे। ह्रिय्याय:ळेव्र:येदे:ळें अ:ग्री:ब्रश्न:रं च्रमु:प्रश्न:क्षें यायर यहर्। सूर-वेर-विर-वेत-र्नेत-प्रयाकेर-रेवे हे सासु-वह्या-प्रया क्रॅंशःश्रुनःमदेःगोग्राशःसदःनुः ग्रुदःषदः। नुर्शःनेरःव्यःम्वाहः स्रार्शःग्रीःशःनेदः ग्री:रेट:खुग्राय:सवद:द्या:दे:सःसेट:सदे:यात्रद:क्ष्याय:रेया:सय:क्रट: नठन र्रेन र्रेन ग्रीयायकेययास्य र्यायायास्य नियायास्य कुन् श्रुवः व्रवश्यारः तुः वश्रुवः ते। वहिष्यश्यः सेन् रावेः श्रुव्यः तुरः कुर्यः नहनःवर्गायमः उवःषः श्रुवःषमः नृदः हे तनद्रमः नुः सः श्रुवः र्मेषः नुः सहनः मदेरम्ब स्वार् न्या निष्ट निष् र्धेग्रथःत्रवात्रीः ₹'यदेःवयात्, देवाः सॅरःववीटः यरः सह्तः दे। ।

देन्न्यान्द्रनाथना। क्ष्रित्यम् अत्यान्त्रक्ष्यान्यम् अत्यान्त्रक्ष्यान्त्रक्ष्यान्त्रक्ष्यान्त्रक्ष्यान्त्रक्षयान्त्रक्ष्यान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्ष्यान्त्रक्ष्यान्त्रक्ष्यान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्यत्रक्षयान्त्रक्यत्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक्षयान्त्रक

रे विवान्य मुदे प्रभार अप्तार प्रभार विवान के विवास के वि न्वो न नुष्या प्रशादक्ष स्था के प्यार पी न त्या थे ने न स्थादक्ष स्कु ने स र्रे प्यटाचग्रभावर्द्राद्रग्रदाचराग्रुराग्रहास्य स्वित्रास्ति व्यास्ति स्वित्रास्ति स्व यारःवर्भःगाःभःषः लेवः वान्वः इत्भःमः चिवः द्वितः हेवः हेवः हेतः हेतः सभः र्देव-श्रव-संयाक्षेन्द्र-भट-क्कि-धाया-द्व-संया देवे-ख्याया-श्रे-क्चेट्-संय-नग्रान्यत्र गासाय्य क्षेत्राने साम्री नसूत्र नर्डे यान स्यया सुनि विद्रा नर्दन र्रेश कुते र्केश प्दी सेदाद्या गुरापरा र्देत सुदाद्या सुरापासे गर्नेट्रायदे पर्दे के अधिक क्षा मुर्या प्रश्ना में अव पर मुग्या अपर डिटा द्विस्युवर्न्ट्रहेव्स्युव्वेश्यः कुव्यायीः अन्ते। वेन् अन्त्रः देयाः उर-ग-८८-देश-ग्रीश-धर-५ग्रुर-विश-स्रापश-धरे-८ मट-धे-तु-क्र्रित-विगशः নাধ্যুদ্ৰ নে নি নাম কৰি ।

ने प्यत् कुया हे र के व से र श्रू के या श्रू या या ये र यो प्यत् के या है या

गुव गिवेश से द ग्री प्रमान प्रमान दे हैं न द्वार प्रमान में है ते श्रुपार ग्रम्बेयर्से । वर्स्स्यस्य स्वाप्त स्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त र्शे त्याय विया प्रिं र ग्राट के र्शेट र व व य श्र श्र या श्र श मुहर व वे के य सु हे र नद्रन्द्रं मुख्यस्न नर्स्स्या वन्तर्या गुःद्विन्यस्य सुनात्यन् नासुस्र नुःद्विस्यः ग्रम् अरवग्रम्यम् स्रम्यविष्युम्यम् वेरम्हस्ययाग्रीयार्स्वाग्री यम्स्रियाम् वित्रभ्रे वय्ययाययास्य स्रिक्ष्यं न्यास्य स्रियास्य स्रिक्ष्य स्रियास्य स् यर्ने सेते सर्केन साने न सम्प्राणन व्याप्त के वा सेन सम्प्रा स्वा के वा निम मुन्न नर्तु वार्ष्य स्त्री न्वा निर्देश निर्देश नर से स्वा नर से स्वा नर से त्या निर्देश स्वा स्व अःविःनर्दनःसॅ:८८:पदेःगहेशःदॅवःगठेगःस८:गेः₹सःग्रदशःधेवःसःसः<u>मॅ</u>ः नर-न्यवः वें वाद्वाव्या वोशा विवेश्या हेत् नुः शुः विः वह तः वें चुनः विश्वः कर्नी मान्य सुराक्षिय के साहे नर्से द्वस्य मान्य स्था वे मारे मा ८८ व्याप्त प्राप्त के विनायाक्ष्रमञ्जानाने सुर्जेमाने। र्वेन की त्यसायन्य सी नुवासाम्यापायमा यात्यापवे होत् संयात्र्या मं इययाया यति मुदे र्षे हत् सुदासुदा सुया सुगार्श्वेष्ठार्थाः र्वं सानु सा वन् तन् राज्या वस्य सा उन् ति विष्ठा । प्रते (८० न)

कें राष्ट्रेन् उदाधिद न्यरास्त्री।

त्विर्धः शुन्त्वर्धः शुन्ति । विर्धः शुन्ति । विर्वः । व

स्ट्रिट्यं मुन्यं निवाद्यं निवादं न

लयः सुरा भी विद्यालया। पर इसरा लास के दिन प्राप्त विवास यदे वे प्रमात्र मुस्य व प्रमात्र व व राष्ट्र व व राष्ट्र व व राष्ट्र व व राष्ट्र व राष्ट्र व राष्ट्र व राष्ट्र ब्रू र अ त्यु र नवे मा शुर र नव त्याव विवा न शुरा ने निर्णे मुख रें ल र छे । नशः भ्रापर है। या उया विवा हेवा वी वा शुर्या स्था क्षेत्र प्रेर्व यह दाया व ग्रीशक्षेत्रमे मुर्द्रप्रवार्द्धद्भावर्ष्य स्था विद्रायि स्था विद्रायि स्था र्वेटावेश्वात्रायम् त्राचार्य्यावेषा हेषा पश्चिमान स्टिप्त स्टिप्त क्याञ्चरा अरामार्मा विवासिवा व कुंवानिवा ग्रान्यम् मान्यान्य विष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् नश व्रेंब रेंग्गुव क्रेंश व्हर र् नहेग्र र व्याय स्वापित हेंदर पर खुर र व्यें विश्वास्त्रान्ता श्रम् हे त्यारशागुव र्वेश्वास श्रुव सम् कृषा हे त्याम खुट हैं हे निर्देश्या के निर्मा के निर्मात के निर्मा के निर्मात वर्गेन्यः सह न्य राष्ट्रेण राष्ट्रेण यह से त्युवा कुवा सन्तर न हे ग्रस श्री

देश्यरःश्वर्थ्यश्वर्धात्रेष्वायःश्वर्धः द्वाय्यं विष्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

इं न इं त स्व स्थान हो आ वि स्थान हो स्थान हो स्थान हो स्थान स्था

न्गाक्षायमास्य सदी निवेदारमा की दिया सुरादेदा हो नुसुरानी कुषा सक्त प्रमुपा मासूर से पहल किया के सामा मासूर स्वाप से से प्रमा से स्वाप से से प्रमाण से से प्रमाण से से प्रमाण यविवास हे सुन्द प्रस्ति प्रमानि स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स् क्रियानवे नम्भून भारे न में के त्यालु गमा ने केंगान्य साने। इसामय नगरा नदे-न्वो र्क्षेग्रान्यून पदेन्यस्य प्राय्य स्थि र्रेय पुर्ने कु श्रेव कु य सक्ष्य.श्य.भें.इस.शं.पर्या.सपु.कु.सेर.ता.भेजा.विस्था.रसपु.क्ष्या ग्रीशःश्चित्राचितः हे 'चें मिर्देतः स्वे 'न्नदः से 'यदिन् 'सवे मिन्स सदयः रादे अर्था ग्री विस्रका ग्री उटा ने का नि के सिंद स्तर क्षुर न त क्सर्या ग्रीका हैंग्रायाने। सञ्जूर्मेनयाग्रीन्नराधुगाम्यरानवे नन्मार्थे हे नद्वराध्यान मङ्गान्ता बुरासुन्थःमधिदेश्चेन्यमबुराव्यान्यो येग्यार्थे। यळ्वाया रेदे दे अर्ज्यापर (८१व) दुर्यात्रा सुर हे क्या पर प्रार्थ यह । मः तुः भूगः तुः भूवः मदेः के दः दुः यहि गाः हेवः गुवः शुः रेदः मवः यः विवशः शेवः मङ्गान्यान्यति कुन्तु सहे या होन् श्री कुन्तु सुन्यते नेवाया सून्या श्रीया ह्यद्रायस्य त्रायायायाये वासार्ते वा तुः द्वाद्य स्वाद्य क्षाद्य स्वाद्य स्वाद नुरःनक्ष्रम्भः प्रदे सददः नद्गाः विः क्षेः श्चेंदः न उत् रयः पः उतः नेंदः दनद्रभः विष्यः सदयः वर्षिय। देः पदः सदयः नद्वाः वदेः सेः बदः सः वे सः सः सेः विदेः मॅं यायाविष्ट्रभाराव्याच ब्राम्हे याट क्रिंगिर्व्य वेदार् भारे देश क्रिंगि नवाःकवाशानवरारीं अर्धित्रम्यादशुराठे । अर्धित् छेरा । । । । । । ग्री पित्र हत्यी अप्राध्य अप्रेष्ट्र रायसम्बर्ध स्वाय स्व मुव केव न तृया गर वेंगा में दें तुरु सुमा पक्ष व ले र सेंग्र भूमा है देंगा मी अपनित से हि न की जा शुरेन ज में ही इन ने ने न से न सह नि स ८८। ज्रे.वं.च.भे.क्र्याश्चायात्यत्र्स्यात्रम् विश्वात्रात्रे विम्यायायाया र्रटायासर्रिस्यासासी स्थानया से पान सुर्मित्र स्थान सुर्मित्र सुर्मित् वर्ग्य ह्या म्याधिया मि.येगाश्याश्याश्येट.टे.श.तायध्रेयत्रश्यश्चीर. नदे ने न भून या न भून न सम्मान सम्मान न सम्मान सम्मान सम्मान न सम्मान सम्मान न सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान नवगामशर्गे नगरविदा नम् क्रेट्य स्थायविषाया नहेव वशा वशुरक्षे निर्मात्रम् (८१न) न्यादि बिद खेना श्रःश्वर श्री अन् न्यादि श्री

इसराप्ता क्षेत्र कुत्र कुत्र क्षेत्र क अन्यःहे निव्यक्षे वर्षः वर्षः विद्या ने न्यान्यः वर्षः से निर्मे निर्मेषा श्च-वार्ड विराधिका कि. भेट. टे. कुवा वर्षेत्रकारा स्वरूप रे. केर वर्षे र.व. यारशाउदार्ष्ट्रेरशा भेरारा प्रदेशशाद्ये यार्या स्वापिति वर्षे स्वा याक्षाम् मित्री में वर्षे वर्ष वळन् प्रमः गान्त के गाया श्रीया न सून न गाया न गात्र मर से मः न वना । सर्मे मः कैना सन् र्रेन राज्य समयन्त्रा त्या विन से मान्या ने केन में नि से मान्य में न वशुरमिर्ड नेर गुरा हे महरायाया है राशे मुयारे सेरा देव भी देर यासकें ना न्यवा अवयान्ना नी से समा ग्री में प्रमामा महा समा सुर प्रमास यर से वु रायदे विवास पार्य से रायद्य सि सामिस रायदे मुखा विस्रास समय र्या रदःसरःनदेःनदेःविस्रार्भः गुःनःस्रवदःग्रुसःसरःसहदःस्या धेदःदर्धेगः यद्रमान्याक्त्राक्त्रा व्रद्धिम्याक्ष्यक्ष्यःभ्रीत्रहेटाक्क्यानाने। क्रवासिने णिक्तियाविष्ठशास्त्र भारतित्र श्रुप्ताप्ता वर्गा ग्रीमा मुलासेदे नगादाया १९वासमा श्रीताया प्रेवा विमासदे दिवादता समुवा ধ্য-জুস-উদ্য

ने प्यटाविस्रशादी में दान्त्र में प्यास्त्र स्रास्त्र स् विया र वा के वा से त्या देव श्रिया द्वा स्वा के या शुः वा वा या या वि व द्वा द्वा प्रा विस्रमाळेत्रसंख्य विक्तित्र्यामानेरमी:विस्रमा मार्थरम्बरम्भानारुत्मी: विसर्ग क्यापस्य द्रो स्ट्रम्य की विस्तर्ग सर्दे (८३४) वेद विस्तर्य ह ग्री विस्रमा नर्गे दर्रे गायी के साविस्रमा है से सहदर्गमा ग्री विस्रमा नर वुवा फु खे नया दव या कर साविद केरा व वर या वु दवा या केरा व विराय गद्यात्रम्यात्रेत्रचेटान्ययाना वन्या ग्रीया श्रीटानवे नग्या विस्रया ग्रीस्या नवर सेंदे दिन सूर शेन हेदे नर नु हिन सदे नने श्चिन हो सुह रे गा केश केर कुषायानर भ्रम्था श्री श्रेषा र्ह्मिन श्री पाउँ र प्रदेश प्रमु र स्था रहर बर्-स्रुग्रास्याः स्रुग् सार्वसायदार्गाः सर्म् सार्वः नित्रः स्रिनः ग्री हिंद्र गुद्र हु देय न भूग्राय ग्विद प्यट भूद ग्री न रहें य खुग्र य न वि । न रहि यान्तरः श्रीः नानः हे स्था पार्त्रमा श्रीः भ्रीतः नत्त्र। यहं रमान्य स्थानिकः गहेश र्रे क्षर में हेर नकुर र्रे क्षर में हेर न इ गहेश हमा कु नुग कुलारिवेःगन्त्रनि र्वेत्ररेवेःग्रलानकुन्। ध्रमामासन्। यह्ता सूस्रानि सँग्राने न्यान्य मित्रा मित् यग्रापुर्देरादेशायाक्रयशायेव्यादेर्श्रेयाक्रिंशाग्री मुयार्साददे प्यवाद्राया व्ययः यर्गव्यः यः धेवः दे।

न्ययः र्वे वार्यायायीय। वायरः स्वायः ह्वायः वर्षः कु। र्वेर्न्तुः भ्रेनर्वेदः श्रेदः वायवदः। विश्वायि विभ्या केशः क्रियः श्रेदः वर्ष्तः म्रुयारिक्षेत्रम्ययात्वरात्रम् भ्रुपात्रेत्रम् स्रुपात्रेत्रम् क्रियात्रेत्रम् स्वादनाद विनापान रव से स्टानी सुनाय है के दर्श वि वि से नाय नाय दरा यथा वायर रूवाय ग्री केंग्र में मुन्ति मुन्ति न्या मुन्य मुन् म्यायायायायाया विन्यावित्येन्यदेविन्त्र्य्यान्। न्योयक्रेतिस्य ग्री क्षेट्र र् से के अपाउट साम दुर्मा मी विस्र सम्दर्भ ने मित्र स्ट्रिय नशन इन्जाधिव राष्ट्रमः श्चाना श्वामा वळवा (८३न) विव हासर हैं। वर्देदेर्न्साशुः कुर्नेद्रागिहेर्यास्य स्वत्यम् गातुस्य द्वास्य महेद्र ८८.र्षेत्र.सह.र्ष्या.ची.रसेट.क्ष्यात्रा.कुय.स्या.स्या.संय.तीलेका नन्ययाने। कें विदेशक्ताप्ययानुः यानकें याने के निर्मेदान्या न्ययः र्ने स्वा न्या मार्या दे क्या या मार्या दे द्या मार्ये प्राप्त मार्ये प्राप्त मार्थे मा वें प्रवाह इस्र ग्री स्वर प्राप्त विवास है किया वी सुरस्य निष्टि से प्राप्त किया वरःसत्रुवःसरःसद्य कुदेःगुरःगुःक्षेःरुरःहें देरःवेगःवद्यायःहे कुः र्ने न् ग्री स्थायक्ष्रयास्य स्था प्रवास्य स्थित प्रिया म्या स्थायक्ष्यया स्था हीः रेवः नुः नङ्गवः नवेः नुस्रवाः वीः वाध्यवः नव्स्रसः संवास्रः से होनः प्रवेः न्यर-त्रभुत्युःमान्न्यःसं नवनाः भ्रेत्रं स्र-नदेः धेः मोः भ्रूष् मुः हेदेः सं न्यरा

र्से प्राचित्राची द्वीत्राची द्वीत्राचित्राची व्यवस्था व्यवस्यवस्था व्यवस्था व्यवस्

ने प्यर नर्दं तर्रिते श्रुम् शर्शु वर्त्ते न गुत्र व्यायत् स्य प्राप्त न न न सुर्यायम् प्रतृत् निर्देशम् न्यायाने सुरान्दरम् वायायये नमून्यामेन सेन्या है। याम्यायमानिराने विद्वानिराञ्चेयानमानिरामाने वित्वायार्द्धेमायमा न्वीर्याने। न्युःभुःयान्राध्यानन्य्यायाने व्यापिते स्रेटायान्यानु द्वाराना स्थया नव्यामासुरद्वारान्दा न्योरद्वस्थारेरयरम्भाभेरियानत्वर् नरुन्ने प्रतुषान सँग्रायायायायाये पुषानु नुन्न नदे सँगा मुषार्ये इस्रश्राणी सह्तामा त्रास्य स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्व गुव्राच्यायाः श्री अवदास्यायाः स्ट्राच्याः । देव्यायेयाः स्ययाः श्री वाद्वाः यमामिरायाक्षेत्रम्भूत्राम् विमामक्षित्रास्त्रम् अस्त्राच्या पिट.पूर्या.ब्र्या.याश्रेस.(८८४)र्ह्य वर.ब्र्या.याश्रेस.स.च्या क्षिट.ब्र्या. गशुस्र निर त्यस गुन स्वा क्रिंग से से निव से स्वा क्रिंस गु र से र र्शेवार्था ग्रीराह्म स्वाप्तरायहेरा निता केटावी कुटावी कुटावी कुटावी कुटावी राज्यू ट्रिटावी रा गर्गश्राक्षराविरानवे में सकराग्री कुरवहें दावडे दान थे दाग्री स्नाम मशुस्रासदे त्यस रु. त्विम्यारा त्यस के रु. रु. न हे रु. पदे रु न हुर से सामित

यश्चरात्री ।

यश्चरात्री वश्चरात्री वश्चरात

बुश् श्वान्त्रे न्यर भ्रेयश्चे छ्वाश्वर्य स्थान्त्र । विष्य स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्यान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्य

ने भूम रहुष (८८न) नविव इस पम हो न पास धिव परि हे नशा ही .

विद्यास्य देवायायायवदः द्वाः स्ट १३ स्याः शुः हो दः पदे । सुवायाः गुवः हुः निरागी श्रेरार्थे सुरात्र सहरारे रामा करते रामा के ते पार्व विषय गर्षे न से द रावे द्विम् रायश इसामर कुया नवे मात्मार मिर विरावित ध्या नरे भ्रेर् छे ने ने न से लाया भ्रे मुं सबद द्या दय या रे दि नरे न या र्ह्मेन्स्यराधी पर्हेन् प्रति वुग् हु केन प्रयासन्य प्रत्य प्रति केरा क्षिय्रायर गुराद्या क्षुय्रया गर्दर या सञ्जू ग्राया मुता से र प्रदेग नद्वं तं र्रो प्राप्ते व्या व्यव्ये व्या व्यव्ये व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत अ'वर्गुन'मर'नगुर्या दे'हेस'नड'द'र्से'र्ह्से'प्र'वेस'म'कु'र्से' ग्रुदे'र्से'य'सूर्य' स्ना स्र से न सर्भ न हिंद हमस्य राष्ट्रिया वया स्ना प्रदे रे सर्भा न दुर्य है। नर्गेर्स्य त्रान्दर्से देव स्वान्दरस्य विष्य विष्य सुन हिना सर्भे।

ने न अर्भे द्वाश्रास्त्र अर्धे द्वाश्रास्त्र अर्थे ने प्राप्त के प्राप्त के

येग्राया ग्रीया मुन्ति । स्वाप्त स्वाप स्वार्भे त्यम् भे द्वो न न इत्यानमा से दान में दिन से से से वार्म मार्थे का स्वार्भे का स् येग्राश्चरा(८५५) न्धेन् ग्री सास्ये सम्यात्र राय्रायन्यापि स्वा नभूत शुःगुदे दिशे भेट ग्रायर सं अट र अ दु शुर स्था केट अ दिहें स्था ब्रेर्न्स्य क्रास्य प्रत्वे निष्णुय यश्च क्रुय निष्णु के द्वार्से वर्षेत्र निवेदात्। सुरादरायातुत्रयान्वत् कृषाश्चेदात्त्रत्यात्रस्य श्वराष्ट्रमा भूतर्थास्य यदःसरस्याचे वदःप्यस्यायःविषाः चुदः चःषः चसूदःवाद्वासः धरावर्दिनाने विवादशाह्मश्रशाया हु अळवादिशाधशास्त्र शा हेरावर् नडन्स्य मुः ॲं गेन्स्लिय गुः नदे गर्देन् श्रुवः ॲ विग् गेय गर्देन् श्रुवः ग्रीःक्षःल्याः स्वेतिः चानार्वे द्राह्ये स्वेद्रस्याययाय हो।

दे 'यद द्रा स्या वित् 'दे र स्या के स्य के स्य स्था के स्य स्य मा के स्य स्य स्था के स्य स्य स्था के स्था

ग्रम्यायाः प्रमायाः प्रमायाः विद्या व यश्रिटः र्यायकः केरः श्रुः श्रदेः त्र्याः श्रुशः श्रीटः। व्यादः वियाः श्रेः द्रिरः श्चित्रा गर्वाप्यमाप्तराम्यस्य राष्ट्रिमाप्यते विमास्य स्वाप्यस्य स्वराम्य नह्मराहे। हैं में इसमाहिराकुरान क्रुर्निन विस्थान क्रियान स्थान क्रियान स्थान क्रियान स्थान क्रियान स्थान स् क्रिंश प्रान्त्र वादा न स्वार्थ है स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्व धर नसूर निवास है है दें दें रास सुरस्य। हुसस मार्के स दिने र पित पा क्ष्र-गुर्भावर्भार्ट्र-सर्वे पान्सूर-हे गु सु केव में नहेंव (८५न) पर्भा नश्रमण्या रःश्रें के इस्रश्रः ग्री महुना विना निर्मा के त्या विवास ग्री श्री मुयारीं न्स्रेश्रारे त्रापाद्व प्रायह वारा करा द्वरा नार्शिया शासी या वारा नह वा ग्रीभा देव ग्राम् विस्राम में सम्मान ग्री हेव लामासम स्वास सून मानि वि वरानी ने हिन् कुला क्वें वाकी या में नाया भीरा। रना कुरानी हनाया ये नाया गर्वेन्या अपूर्या अन्या अन्या गुरु अद्वित पे न बर हे परि लया वर्गा ने भूर वर्षा नवे नमून राषा वसे वा वर्षी न तुर से न शी मेगा रा के न र्रे नियर स्निया असे देर यर मी नर दु त्राय स्रीत या बेया मुस्य नायर वर्ते त्यान्वीत्यार्थे । त्याने माधेयायमाञ्चाल्यान्याची हे हे हिराने वहेंत्याविरार्थे पुना तुः न्यात्र अपन्या न्यया व्याय द्वार्थे स्वा नेरासरार्वेन नर्दर्से त्यमा सामित्र स्थिता स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्र स्थानित्य स्थान

यदःश्रान्यश्वाद्याद्वात्यः के त्रान्यश्वाद्यात्रः के त्रान्यः विद्यात्रः विद्यात्यः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्यः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्रः विद्यात्यः विद्यात्यः विद्यात्यः विद

यदित्यक्चित्रं कुष्यं स्ट्री स्ट्री

विन्शुन्वसम्बहुन्यविष्यनविष्यनविष्यन्य शिष्ट्यन्ति । हिं। विष्ट्रेन्ययम्बन्यकिष्यन्ति । स्वाप्तिस्य स्वाप्ति । सिं।

देवश्राश्चान्द्रम्यम् क्षेत्राच्या व्याप्त्रम्य व्याप्त्यम्य व्याप्त्यम्य व्याप्त्यम्य व्याप्त्यम्य व्याप्त्यम्य व्याप्त्रम्य व्याप्त्रम्य व्याप्त्

नश्चर्यानः र्वे न्यूर्याने न्यूर्ये न्यूर्या (८६न) या उत्र नुःस्र स्र स्र स नक्षस्यस्य नुः क्रून् ग्रीस्यस्त्र प्रदेशनक्ष्रं पर्वे संदेश देव के निरास्त्र र देर्-चश्रुरश्राम्भेगश्रामदेःचरःश्रान्यसुव्यःक्तृव्यःक्ते,क्रुच-तुःचक्रेगश्रा रेः वयानराश्री हिमायवे श्रीया वृत्रा हेटा देवे श्रयायाय प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप् नर्व दे.ज.श्रम्बि.चग्र.क्रियच्डेग्रयम्प्यद्गायाद्गा वि.ग्री.क्रे.थ. सर्गेव्याहेशयहिर्या हासामेव्याचीशस्य स्टार्स्सासुर्चेव्यहेरा न बुर। अञ्चाशुअ चुर नदे छे न रमय थे रे ना म अर्मे द मी अञ्चर सुय च बुद्रा चर्राया भेरा हो सर्वे दार्चे राष्ट्री राष्ट्राय हारा कुद्राय हो या हुं वा सर्गेव्रश्चेश्विर्व्यव्या थेयाद्वासर्गेव्यास्थ्रश्चिर्देत्रा ग्रेट्टे गहिरानुदानि गहित्नी राहित्नी राहित्ति हार्मित्र स्वाप्ति । यहिरानुदानि । यहिरानि । यहिरानुदानि । यहिरानि । यहिरान यान्या वर्तेतः नुस्य स्मुन्य सम्मुन्य सम्मुन वयाध्यवारीटावरार्थेटावेटात्यादेरावयार्थास्यात्रात्रेत्रात्राविष्यात्रा रावियाची रास्क्रेन् प्रायासेटा नाम्नेन स्क्रेन् स्क्रेन् यादिराम्यास्य स्वायास्य स्वयास्य स्यास्य स्वयास्य स्य स्वयास्य द्रिस्याम्या क्रार्यः यान्ते । मङ्गाना महिया ग्रीया मेरास्या भीया स्था प्राप्त रेट में र विद्या है है शहरवा हु ख्वा है अहं व वेंदर गट रेट हैं विवा यश्चर्यास्त्रस्य स्त्रस्य स्तर्भ स्त्रस्य स्तरस्य स्त्रस्य स्त्रस

त्रे.च.श्चीशक्तं स्वशक्तं न्वास्य श्वास्य श्वास्य स्वास्य श्वास्य स्वास्य स्व

धेव पर स्वाप्य पर पट्टे कि रेस पर प्रमुत् प्रदेशस्त्र पर देशस्त नभूता छन्। मन्। मन्। मन्। पर्वेत्रामित्रम् मन्। पर्वे क्रिन् मर्से स्थाना डेगामी शक्क प्रमे में मा सामित प्रमा स्वाप्त स ग्री अस्य प्रति स्वत्य प्रसार् स्वाप्त प्रमेति । ह्या साथ द्वा साथ स्वर् सी । सुन् से न । से न ग्रीमा श्रेव र्युदे । प्रकुम रहा सुमा विषय प्राची । ध्रिय प्राची विषय प्राची । नर्न्छे मु: रु: रु: वर्षि । ने वर्षि वर वर वर्षे न्य वरे के के सु: न्य । वर से या वर वर्षे न्य वर्षे वर वे। । न्याकें या कुः यकें में न्र्यु म्याने। । वियायवे खुमान सून हुमा नशः मेन न्यायः श्रुप्तः अभाषः केरः मेन यात्रः भर्तः मान्यः भर्तः मान्यः भर्तः मान्यः भर्तः मान्यः भर्तः मान्यः र् श्लेम वया वे विवा यो या स्वा यो दे से स्वरूय है भी या पा वे हिंदा मर अर्गुम्भाषीन् निवेत्र के रामु निया अधारमेषा मु नाया निवेत्र क्षा में रामु रामु याया यहे र र्चे व वया यहे हि प्यक्ष में र सह र र यह या है। ये या वे कुर श्रुट वर्ग म्हार वर्ष मार्थ के कि कि मार्थ के कि मार्य के कि मार्थ के कि मार्य के कि मार्थ के कि मार्य के कि मार्य के कि मार्य नडन्ने में न्नु पर्वे व पर निवे न पर के कि से प्रया ही प्रयापा न हेव वया महाकेवावू रें मान्या गायायागुद्धा दें वाथी प्रायायायायाया मान्याया के नवे के अन्यमा मुस्य प्राम्यम् अर्दे र व महे मृते हा साथ र न तुव हु इ.ज.चंधेय.तश्रेय.याश्रेट.रच.भे.वाक्ष्.वाक्ष्.क्ष्य.स्व.त.स्व.त.स्व.त. धुःत्रःयः श्रूतः गाहेशःश्चः तः यदे हितः यश्चतः श्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्च श्वायः ग्रीः तश्वः यः व्यतः स्त्रः यश्चः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्व श्वायः ग्रीः तश्वः यः यदि । प्रतः यश्चः वश्वः यश्चः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्वः यश्चः वश्व श्वेषः वश्वेषः वश्वेषः यश्चः वश्वः यश्च

संकु.ज.म्रम.हूर्र.कृ। वे.च.हूर्। चर.क्च.हूर्र.रट्यम्भायमा कुर-च-न्नो क्केंद्र-चुर-कुन-वेंद्र-चु-च। चु-वद-ची केंश-द्र-वेंद्र-व्य-वेव-हु-सिम्बारावियाः विवाशः विदा देः यदः यो विशः देन् स्टः वी विद्याः क्रियः श्चेन्याहर् बेन्याह्य यान्याया व्याप्तान्य वार्या व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्त गिध्यायसम्भे नर्दे वर्र् क्रिंन्य वा गर्दे गांची शा नर्गे वर्दे गांची सुनसः वर्ते वर्ते र र मा समारी ध्रेर प्राप्त सम्मार सम वःद्येरःगर्नेरःवेशःमङ्गामःद्युरः(८४व)नशा न्नेवःश्रशःइसशःग्रीशः गर्भरः सरः नुः नर्द्रायः ग्रारः खुदः नुः तर्मे रः विरा धेः वेशः वेदः ग्रीशः गर्भरः यथ। ८.५८.४.कूर.भर्ष्य.सूर.सूर.स्थ.५८.४४.कूर.ग्रह्म.पर्क्य.पर्चे.त. यव पर प्राय निर्म निर्म स्था भी अ पि है कि श्रुव दें प्राय के अ प्र नरः हो दः प्रदेशन गादः गावदः भ्रेषे अभिदः नरः में द्रिया व्ययः केवः गावः मुखः नमा भुः तुः सः धोः ने सः देन्। या सः विवा या नि सः विवा वा नि सः विवा वा नि सः विवा वा नि सः विवा वा नि सः विवा र्न्त बुद्दानर निष्ठि। क्रें निष्या धार्ते र क्षेट्र ना क्षु नुषे क्षा धर प्र

नः र्त्ते : र्वेशन्यव : प्रेशे वर्ते : वेतः यह वर्षे अद्य : र्वेश केतः वर्षे : प्रेतः यह वर्षे : प्रेतः वर्षे कुः सळव लेन एस न स्ट्राप्त कें विष्ठा । द्राप्त के सम्मान स्ट्राप्त के स व्याव्यास्त्रावरायावस्त्रः स्वापाये हु वस्या अपार्या अपार्या निवा है वर्षे नकुर्रेग्राची खुन्या वहें दर्राया या श्री में अर्कें दर्जी या ने दर्पा न्यः करा तुर् सेर् निया सेर् र क्रिं र या प्राया वर्षा प्रदेश प्रस्त या पर मेरिए ञ्च केत्र में भेषायात्र या कर्त् दारे दिन क्षेत्र या केत्र या क्षेत्र या क्षे न्रःश्रीःमङ्गेन्द्रेश्वाःश्रियःसयःकेरःद्रस्या ग्रायरःनुःमङ्गेन्द्रस्य ख्यायारे व्यापया नक्ष्मन व्यव्याप्त्र मात्र या बिट बिन या सम्याप्त स्थार है नि दे द्यामी द्योय सद्दान करा मदे द्यों दर्भ मनि दर्भ मारा स्वीत स्थमा राष्ट्रिय यावरारादुःख्यारार्दरास्त्रव्याराद्वेयाःसेन्यरास्त्रेत्रात्रास्याद्वेत्रात्रास्याद्वेत्रात्रास्याद्वेतः क्रिन र्दिन ग्रीश नाम्य उत्र ग्री र्थेम्य प्रमान स्वाय प्रमान स्वय प्रम स्वय प्रमान श्रेव मी अव पा इत्यावया धुरावर मु पवे मावया थे या हिवापा (०४०) हा बूट मी द्वट में बूर तु विवा शुक्र इट चर द्वेटिश श्री।

र्त्व ग्राम्य के ते गुन्त के या निष्ठ प्राप्त के या कार्य के प्राप्त के या कार्य के या कार के या कार्य के या कार के या कार्य के या कार का

इत्रायात्रक्षान्तरम् भूत्रायात्रक्षान्तरम् भूत्रायात्रक्षान्तरम् भूत्रायात्रक्षान्तरम् भूत्रायात्रक्षान्तर्भ्य भूत्रायात्रक्षान्तर्भ्य भूत्रायात्रक्षान्तर्भ्य भूत्रायात्र भूत्रायात्र भूत्र भू

क्षेत्राची स्तर्भित्राची स्त्रीय श्री स्वर्ध स्त्राची स्

देव्या विस्र स्वाप्त विस्त्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त

नवे नमून मामय भेर कुष सक्त उन की नर्के र हे र वा शि लुवे (८६४)२गयः श्रवः श्रे न ह्रवः लुग्रयः अरः प्रवास्य न श्रवः स्टरः बुदार्सेट साधिद सदे देया सदे याद राष्ट्री तथा याद पर दर्ग में कीं दाविदा सहरमानविः धेंत्र नृत्र श्री नृ गृ त्यवे न न्त्र न्या न से से न पवे हे से न पार्थे न्नराधेराश्रेवायायानहेवावया वनार्के वे द्वाना का निम्ना निम्ना विकास निम्ना निम म्रेन्यर सुर रहा धुवारु विक्रा विक्रा स्रोत् म्रेन्स स्राप्य विक्रा स्रोत् म्रेन्स स्राप्य विक्रा स्रोत् स्राप्य विक्रा स्रोत् स्राप्य विक्रा स्रोत् स्राप्य विक्रा स्रोत् स्राप्य विक्रा स्राप्य विक्रा स्रोत् स्राप्य विक्रा स्रोत्य स्रोत् स्राप्य विक्रा स्रोत्य स्रोत्य स्रोत्य स्रोत्य स्रोत्य स्रोत्य स्रोत्य स्राप्य स्रोत्य स <u> २८.चक्रश्रह्मश्रात्तात्रश्रद्धार्थः श्रृष्ट्राच्यत्रश्रा व्याप्तात्रश्</u> यरः श्लेनशः है। कुःनर्हेनः शेटः वोश्वास्यानदे र्वेनशः नवीशः है। हैं र्नेदेः शुन्थराध्याहेत्रक्रयराद्या यूरावस्त्रायाययेषावश्चीवाद्युरा कुंवा नेरः शरान्रमुन्यान्य प्यारः हे हें न वाना के न न विश्व स्यार न न विश्व बिटा देन्यामी ख्याया ह्यटा देन् छी मात्र अर्थे व पर हैं ने प्राप्त प्रश् ग्वित रित रित्र में के रिका स्वत के ग्राया स्वाप स विगार्श्वेन'माहेर'होर'म'सूर'नसूर्। हैं'ने संधे'न्य ही 'सूर्र शुन्र स्थे' क्यादर्हेर्स्यायाद्वीर्यायाद्वीर्याया है क्षेत्रायवदान्या पुरदेवेत्यया है क्षेत्रायवदान्या पुरदेवेत्यया है क्षे के बिटा हिट्र धराधु धर्भे गा बिया या यहेत तथा धर विया या यहुट यर

ख्र-निश्व पर निहेता वनश्यामश्री सह न प्रश्व सह न प्रश्व से स् इययावन कुया ग्रीया केंया नुष्या मुद्द्या भेटा में न्द्र केंया नन केंया नु र्श्वे द्राया इस्र राशे पाहे वार्षे राश्वेदा ख्राया या श्री र्श्वेदा स्र राश्वे प्रस्त राश्वेदा स्र राश्वेदा (८६२) वर्षे अ विद्रायम् अह्दा स्म क्रा क्रा वाम अ अ विकासिम विद्राया शुर्था याष्ट्रीरायेनशासदी।पशायेनामनशानहनानी।याःगारदे।नुरानु वनार्केशा पिश्र सिर्श्वरश्वरायविष्ठ तस्याश्वरायदे त्युव्य प्रत्ये स्वर्धे । दर्वे श क्रॅ्रेन्स् मुल्यानवे विद्युराण्यान्या हैं में नक्षे नहुंन् मुल्या यदयःदेशःशुःसङ्गेः हः सेनशःसदेः गाह्रशःगाश्वतः सशः अर्ग्धेग्राश्यरः नशुवः र् वियाया हे हैं में दिर सहया द्वया हिंग्या सु सु या दिर प्रया प्राची र्वेग इरमा संदेश महिंग त्या पिर इरा द्यो तर्तु व श्री से सम्मार्थ । नर्हेन्सहन्यमा हेर्ने केन्ये न्त्री सम्बद्ध स्थादशुर्मे अस्ता त्यन ग्रम्भासराधेराम्बराम्भाकेषाम्भाकेषान्त्रभी निर्माश्चारम्भी सामे धरायार्थियानानिवालयाग्रीयानवेया नुयानेरायर्वेयाग्रीयार्वेनार्थेवा इसराया निराहते प्रियाय प्रायम्य स्थानी विरास्याय प्रायम्य र्भदे कर मेन्या है। धें वार्क्य प्रतर वार्य म्या विष्य स्वर् र्वेद्रश्रद्यव्यक्तित्विर्द्यो १२५वर्षी भ्रेष्ठ्या अपने प्रमुव छी। वस्रुव राःश्चेत्र। देःद्याःद्रदःदुशःश्चःद्रशःशःचगदःयद्रश्चरःयविदःदःस्त्र यान्ययान्यानात्वा चुःख्या कुःयानेवःकेवःश्वनःयान्ययाचीयाञ्चर्याः नर्वःभ्वःग्रीःनकुर्नःभवेःनभ्वःमःभ्रेय। न्यारास्तरःहेनाःवे प्यारास्यः ग्रीशरीवात्वसान्यान्यस्य प्रतित्वत् व्यास्य प्रतित्व प्रास्ति व्यास्य प्रति । गल्टा मुःदर्यादहेवा सर्के सूर्या सर्गे ग्रामा मुःदर्या निवा विवायन स्था भी सम् स्वा हिवा स्था है । स्वाप्त स्वापा स्वा श्वरायान्त्रीत्वस्थान्त्रेवाचेवाची साम्यान्या सामान्याचा सामान्या यनः श्रूशः ग्रीशः सरः सुवाशः गुरः नह्नाः श्रसः वाशुस्रा वुरः कुरः सः नृरः हेः क्रूः स्वान्यः स्वाया ग्रीया स्वान्यो स्वान्य है। वस्वाया से निक्त से स्वया से निक् निवःश्चिम् मुळेशम्म रेटः(५०न)मक्ति न्ध्यावी श्वीमेर्वे वी वर्ते के दू न र्रेग्रं मुर्ग मिन द्रे मिन द्रिम मिन स्थान मिन स्थान स्था इस्राम्बुस्राङ्ग्रीनानकुन्द्रान्द्रस्य स्थायर्ज्ञन् स्थाय्ये । स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थाय गुर्नित्रम्याः अअग्वाशुम्रा नदेः अर्केवाः भ्रम् हे नद्वं तर्शे न्या भ्रमः वे न्या वर्चिया.च। म्रि.सी वर्च.क्रेया.स्याका.ग्रीका.सिया.भ्री.क्रेक्ष्य.स्या.स्याची. भूरा प्रकळित्र भूगुः भ्री स्वाया ग्रीया सर्रे स्वाया पिरेया भारे सेवा प्रस श्चेत्यानरासहन्यमा नुसार्स्टन्ने श्वेनसानदुःसददाना असाम्बद्धास्य

याविष्यः स्ट्रिन्त्रः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः

क्रै-कृतिःश्वस्यत्वरक्षे देतेःश्वस्यन्यः विस्वस्यक्षे देतेःश्वस्यक्षेत्रः विस्वस्य विस्वस्य

सत्यः न्यान्यः स्त्री ।

सत्यः न्यान्यः स्त्री ।

सत्यः न्यान्यः सत्यः न्याः स्त्री ।

सत्यः न्याः न्याः स्त्री ।

सत्यः न्याः न्याः स्त्री ।

सत्यः स्त्राः न्याः स्त्री ।

सत्यः स्त्राः न्याः स्त्री ।

सत्यः स्त्राः स्त्री ।

सत्यः स्त्राः स्त्री ।

स्त्राः स्त्राः स्त्री ।

सत्यः स्त्री ।

सत्याः स्

वि'नग्'ने अ'नहेग्र'न'न्ययायायाय्य अअ'न्ययाये। देन्थे। क्रिन्थे। गश्यातृरानदे के नदे नकु न्या गुरा बराया सु कु या श्री न श्री न श्री सिरा खर:इर:नर्भेर:इसराप्टा कुर:नदे:नकुर:पःवहर:हन्नाः हर्षेनाःपः यश्रमकेट्रमदेखें या नायश्रान्त स्वानिष्टा स्थार्थन्य में नर्दि यनिवेश्यमा न्रासेन्रानवेशयावर्षास्त्री में वामान्य वाहेमायास् अूर्रेरित्र र्षेर्रि हिर्। वाशुयाया विक्रियो याष्य स्तुर्य शुप्त विवाया वर्षाभुःस्रावरःवद्येदःवःस्रवाःहःव त्राः देवेःस्र्यःवेदःभुदःवनरःवःस्रयः नर्त्रचुर्न्नतेयाधुरुद्रचीश्चर्यस्यत्वाश देवेख्यस्रहेन्वादयः गशुस्रायसान्मायास्य पानि यसाहें में इया वर्षे माना सम्माया शु-नत्वाराहे भुवस् रेव रें के या सर्वे गा तु गुरा ने र गा नव रा के व रें न्ययायनार्थे नुरस्त्र तुर्या अन्य स्ता नेते (५१न) अयान अया नी ह्र. तयवा ता श्रमा के तम्मा निया भारतीय मिन्न स्था निया निया हे शःशुःमिष्टेन्तिक्षायित्राच्येत्राचित्राचित्राच्याः न्वेशम्भार्यान्त्रहर्भाषा स्थान्वेशम् स्थान्वेशम् नन्गान्यम्यारान्देव हेव न्त्रीय पर्मे अर्गेव प्रयम्याय परि विनय हिन्दों र यद्र-विर्टी वहतः अ. सर्यात्र अ. येयो. विद्र-त्र्ये येय अ. वं. रेगाःमः नृग्यः सुवेः रेटः सुग्रम्भः मार्दे गिर्द्र क्रिंग्यः मर्म्यद्रेदः नग्रस्थः र् वुर्न्न अह्र अर्थानि वुर्न्न विकासिकार विकासिकार विकासिकार र्राश्राक्ष्यं प्राचित्राया क्ष्या सक्ष्यं स्थान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य यहेग । स्. यर तीश्र ये श्रिश्चर देश श्रिश श्रिश हैं श्रि हे न्यू ग्राम्देव के देशे हे। यदे प्यव कर ग्री वर वया दर साय या नव दि । गुरामागुन् अवसासे दार्श्विसामा दुः सददः नदेः नसून मारे न में केरा ही लुः ५८। शक्रेवर्रातार्श्वेद्राचिरश्चेत्राम्यवदाद्यात्यायदेरश्चेद्रासायायदेरश्चेद्रा मर्विव ग्री अर् अवदे रळ मार्ट न्य हे या नदे ख्रमा न श्र अरी द्व है दे रे में छि नेयान्वराधेदे में राश्चेरासुवराया सुरान्यरावदे सुरावळ रावान सुवा पुः चुँवःसदेःश्रुवः वापायाः प्रः देः उवः प्वः चीः श्रूषः सः वाद्यः वाद्यः यो प्रः सदेः शःदिहेत्रः क्रीः विंदः त्यशः नक्तायः नरः नाधुरः वः क्षेत्रः से ।

श्रुराय। भ्रुर्यायश्रुरासुंधिः १ व्यायायरा स्रुर्या सामित्री हैगायद्वेरावाउद्या गिव्याग्री भ्रयायया वर्षे वर्षे वर्षे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे राष्ट्रे डेव् क्रु नवे भुग्रा । क्रम्य नर्डेय सेम् नडस सर्गे में नेग्रा के साविमः वर्षे अर्पते द्वाराष्ट्र । अर्वे देशमें अर्वे राम्या मुराष्ट्र वा विष्य मित्र विष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय कुवर्र्भुन्।।(५१व) रेग्राशःग्रेःसर्देवःसर्वेदेःहेःनदेःळवादाधेसाधेसा विवासायदेखनावर्षेदेश्वेरारेदेशस्त्रेसाम्भेसान्यवा । न्यवाविसास्त्रान्या येग्ररायसायायायायीरायेरायोपानरान्गे। नहुदेखुगास्रम् नुःसाह्य ।हः सर्केनाः स्रनः भ्रुतिसः विस्रसः ग्रीः से 'हेना केंद्रः केंद्रः क्रद्रनः सः सदः द्राप्तः विद्रः वृदे छुव र्रे निवेदा । निवेद रश्य स्व निदेदे क्रिव सर्वेदा ने दु द्वा ने पा नियाः श्रूट्यायदे गुर्ग्येषादे न बुर्ग्न्य सक्या वियायां वे नर स्नून्या ग्री क्षेत्राया सुराय स्ट्राय

<u>न्ययःख्र्वःसःश्चुःविविवश्चिःगतुनःमनसःग्चिःश्चिम्</u>

ने 'क्षेत्र'स्या'नु 'चुट'निये 'क्षेट'क्षेत्र अंग्रेने 'क्षेत्र'से 'ग्रेने 'क्षेत्र'से 'ग्रेने 'क्षेत्र'से 'ग्रेने 'क्षेत्र'से 'क्षेत्र'से 'च्या निवा 'नु अ'य्य अ'य न्य अ' स्वेत्र'से 'क्षेत्र'से 'क्ष

यन्नान् मु म्रमान्यविन्यवे ने सु यनु मुर्द्या सु द्रमान्य विन्यवे से स्रोते । नुवे ग्राम्य मेवे नुयानु ग्रायम् नु कन् मवे व्योग्य नियान् नुवे यके नवे मेर हिर्द्धम्यार्थायदे सह्या है दिन्द्र राष्ट्री में दिस इस सर विया दर्श में शुअ नकु भ्रमा पर्देश पर्देश वह्र अन्तर्मे द्र अपे हि त्य म्यूर भूभाग्री मुलार्स र्हेर मी खर चुर राष्ट्रिय भी दे प्यर सार्द्र हे दिर खुला मु केव में र क्रेंनश भी न्युर प्रशास सामा सरान्यर नु क्रेंन प्रते मुल में सर्केण वी सेटवो मट्यावकुट्यस्यविवायि देत्रे देत्रे केदे विष्याव्यस्य स्ट्रियी मर्क्के अर्देन सम्प्रत् निष्ठी अर्हे। मेन सें के श्वान तुन श्वेन तुन सें ना उन अर यः श्रुॅं न् रवि अर्चे ने अ ग्री मुल से ना न पित रा न् ना ते वह अ अर्गे व ् बुर स्र-्थःयदे:ह्येत्रक्ष्यश्चे प्रश्लेषः ह्येर् श्वर्षे श्रायदे ग्रायः ग्रायः वि नर्रः है त्रव्यार् तह्या राज्या स्वात्व्य राज्या र्भूटः(५१न)केवर्संगुवर्नगदर्भे हेते नश्चरायश्चेनशर्भे नशर्भः ग्रीस्था मदे-न्नर में वर्गे अ वे जावें न् न् न्यय की अ न नु अ न में के में दे के या में शुया दुः इन्त्रम् । क्षेत्र दे न्द्रम् । कुया सै मिया से मिया दे मिया से मिया है या है या ष्यरः यदः वाहेश न्वःहेः शुः इता विदः कः स्था द्वयः वाहेवा ने दः हरः गठिम । नःशे छेट मठिम । केट श्रद न कुट पा श्रुवे मायद दे प्ये त्य कुत्य से नडुःगहेशः चुरः नरः नभ्रः संग्रायः कुः न्रः से ग्रामी कुषः विस्रायः वस्रायः

कर्ष्यान्वरान् ज्ञेन्यान्त्रे । व्याक्षां ख्राय्य व्याक्षे स्वान्त्र ज्ञाय विश्व स्वान्त्र स्वान्त् स्वान्त्र स्वान्य

ने स्तर क्ष्या है न क्ष्र न क्ष्या नी का न नी ति न न न क्ष्या क्ष्या न न क्ष्या न क्ष्या न क्ष्या न न क्ष्या न क

र्वेग'दे'दी द्यो'यये'यलेश'याहेद'र्ये'र्हे'य'दर'रुश'सर्ह्वरश्यस्य पुरा र्वेद'यदे'द्या'यश्चर्यस्य स्वर्वेद'र्वे।

ने त्रासी से दिर वर कुषार्थे क्या पर द्यार विषय । या वह वा परि भूगारिव श्वायोव र निरम्पाया श्री स्थाय स्थाय श्री श्री स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय केशः र्श्वेयायायायार्थयायायात्रायायार्थे क्ष्यायायाया श्रुवास्यायेत्राया के या गुरुष्य राज्य है। वेंद्र विदार्श्वे उदायया के राष्ट्री प्रवर्श सुद्रश्व राष्ट्र न्नरमें द्रिते खुलायम कदान्या न्यानया में द्रिते व्याम्या में कुंव-कर्गी नदव में दे सानर इससान हो या वेटा में टास हाया में दे खुटा यश्राक्षीयन्व निवादिस्य निवादिस्य निवादि स्वादित्य निवादि स्वादि र्रेर-र्रे-४-न-अरग्राय्या र्रेर-अवयःयितःग्रीः मुखायस्यात् रगोःयर्वः ग्री:श्रें'ते'नगदमाद्ययाळे। दें'नश्रुद्दि स्वाख्द केंया हिस्सावया ग्रीते' नहेर्ने पर्ने ग्रम् सुरस्के। केंश्रिके श्रम् केंग्रिस कें यर श्रुव पर्देव श्री खर र्श्वेष विश्वासम् के प्रदेव दिस्य पर्देव स् क्रियायायवरान्यायह्यात्वीरायने ताहेरायीराकुयारियेयायायविता शुन्यायमा वहिनाहेत् शुःमाम्य कन्त्रा वहिनाहेत् शुःमाम्य कन्त्र वर्षः

वर्गाम्या याश्चाम्बेन् मुक्तान्त्रेव वर्षे नगव सके दार्या के या है। या शु नरः(५३न)कनःर्नेगः८८:नठशःर्यः १ स्त्रेरःश्रेतः । नित्र सुतः स्त्रेतः स्त्रेतः स राश्चित्रः हेत्रः ते स्वायायाया हे या महा हे । यह व स्वायाया राद्र.वियाक्रिस्माश्री ब्रिट्रिकी.क्र.सह्यात्यावृत्तितस्र राज्यात्या क्रुसायमा यान्व वहेव या वहुर यथ। न्येव रहें या या शुर्य ही सुर शे या या या या या कुषानवे नसूत्राम नेतामें के न्याकुषा वेदान का ने कें या से नाम से दि विगामित्रमायद्वरहे वयाश्चिमामवेषामाधितया देप्यरहे मह्दर्धन मह्यस्यमा कुरानमासे हे सहराने। मधुनमे ही त्यासून निहरान यर्दिरःवी रुषः केव नर्वे नक्क दादर तहा वाषा स्थानिक स् र्रेग्रायास्त्राने निरुषात्रयात्रवात् निर्णा निष्णास्त्रानी सुदे नुः से निसुष्या ब्रेसाप्तनः हुः नबेसासरः श्रमः सम्सास्त्रनः नित्ति हुः निते है । नित्ति । लय.कै.लेज.रे.वूरी क्रि.चतु.श्रंश.कूर्य.क्र्य.क्र्य.वैर.चर.शूर. বরব:মঠ্র:য়ৢ৽য়ৢ৽য়৸য়৽ঢ়ৢ৽য়য়ৢয়৽য়৽য়য়৽য়ৢ৸৽য়ৢয়৽য়য়ৢঢ়য় श्रेव में भ्रु मेर्यावया से दाय या वाय वाय वाय वाय से वाय में वाय है। विव है। श्री भाराक्षेत्राचार्यात्राचार्यात्राच्यात्र स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स

वर्षित्र प्रमः क्रे अः ग्री अः हैं स्थे प्रचंत्र सें प्रचंत्र सें प्रचंत्र सें स्थित प्रचे अः व्यास्य अः न्ययार्चे के विद्यामा या भी राष्ट्रिया या निर्मा के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्व येग्या के यः नगर धुम् । यर्वेद सुदे नगर में के यहेद इस्य याया सुदे न्नरः में अः अषितः में रेतः मे न्र्यूयः क्षेत्रः स्त्रुप्तः स्त्रुपतः स्त्र हे रेव छेव श्वें न र में व छेव में श हैं हे चेवा सदे न की या दिन र श्वेव सर सहर्। ग्रुनःसदेःन्नरःधुनाःकेवःसःनेःतःश्रुशःनुनाःभ्वेवःसदेःवःसःपवःग्रीः रुशःक्रैं सर रु: ग्रेस किरा इमाय केस रन खें त न्तर में सपर में तराय

श्रभागित्रभाग्नुदानवे कुदान ग्रुदानु कदामर विविव के के मूर्त भूत ग्रुप याश्रमानतुन् शुरानवे कुरानान्ने भुनमा नेवे श्रमान्ने अर्थेता वर्षमा न्वारुप्तत्वारानेता स्राच्यार्थाते राज्यहर्यायाः संस्टार्या स्वा याञ्चरायासद्ग्यमाणयास्यमान्त्रेमान्त्री। धेर्म्स्रहेरहेरस्र पात्वया यविवाय। देवे श्रयः भूगः र्ह्वे यं या या या या या विद्या वा विद्या वा विद्या वा विद्या वा विद्या वा विद्या वा व देवे श्रमानिकायमा गाडेव परिव रेगा ने सार गार्ख पा विसमा परी प्यत याधीन्यामी क्षेत्रे वियामी वेषाया भीटा (५८न) अर्केमा शुक् मी नर्दे या मुन र्वेन परिः में हे प्रमेन प्रमान कुन सम् र्वेन प्राचीन या स्टापिन निर्मान र्डेना कुया से । स्वारा वार्य र संदे विष्टुं न त्रु के द वर्डेना से । न रे वे रहें न इत्या द्वार्या द्वार्या द्वार्या वान्यावतुः या सुर्यकेत्र स्वारा सुर्या द्वारा वान्यावतुः या सुर्यकेत्र स्वारा सुर्या द्वारा स्वारा स्व य-५-अदे-विन्याः ग्री-पर्द्वे-श्री-विदेग-५-नश्रेव-डेट। गुर्य-गी-न५५ है अ हैं अ मर अहर दे। य में खर मर दर्गे व म विवा नि न म अ अ हु र्वोग्।र्थरः ग्राम्थः निरा देवे के देवे हे त्रथः म्राचिम्थः प्रथा दर्वे दर्शे देवे र्देश प्रमुख मुक्त प्रमुख प्रम प्रमुख प्रमुख प्रमुख प्रमुख प्रमुख प्रमुख प्रमुख प्रमुख प्रमुख थ्व परि पुष्प नु सि विवासी विवासी मुस्य साथ वित्र सि विदेश वित्र सि विवासी विवा

ग्री देव ग्री शहें शही दमय स्वतः शक्कि देव दिवा परिवाद में वित्र देवा कुलर्से र हें से समिव ना विद्यें ल सूर साम सुर में के दर्भे मुत्र द्वाद क्षेट मासद्य वहस्य नुज्य सामान कर्षे विषय निष्य कर्षा विषय निष्य करा निष कुत्रीशः श्वाराणीः तुस्रान वटार्येट्सः शुःगटानशा हे नद्वार यहसाद्या <u>२ घटशःग्रेः इस्राद्यया ५ भेराध्यास्य स्वराद्या में रास्राक्यासारासा द्याया</u> याञ्चारायह्यान् व्याप्त्रेत्याची विन्तारा ग्रभरः केत्र हैं हे चेग् पदे नसूत्र पदे न्या में रागुर प्रभा कु ग्रार प्रभा नेनु'रादे'सूव्य'रा'र्थाभू"रा'तु'नदे'ग्यायार्थाःसूत्र'त्री'तेदुःवतुःसूत्रार्थाःस्र वहें तर्वर अं के अं के विष्य अं वाध्य ना के विष्य अं विषय अं विष्य अं विषय अं विष्य अं विषय अं विष्य अ श्रुदे नर्गे न पा शे वर् न समद प्यस्य प्रस्ति । स्री न स है न दुन स र न स सर्द्धेत्र'रावे'वसग्रम्'णुय'ग्री'ग्रुन'रावे'न्नर सुग्र'सव'र्न्न'ग्री'विरम्'रावे' (५५व) कुन्द्रवाण्यायम् छेन्द्रपदे । पश्चित्रपत्र विद्याया । विद्या यसामी महानगर रेवि कुत्र रेजिन्दिन प्रवे नि न नि कि सामेन समय ग्राम परिर्देन'मन् इसामर'न्डेर्सामसायन्सान्द्रियान्तानान्या इविके त्या न्यायायदे त्या श्रयावि ह्यूट निवे के नायिवि गुवाद्याय स्वर मु ग्राम् पु मुंद्रा स्वार्थ प्रायानियाय। दे र्द्र्या से मुन ह्वा निव स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ

स्र-रक्षायाया कुते वेवाप्र-र्वेशप्रश्रायश्रासम् वेते वाद्य-प्रित्वायायाया मुयासळवादी में हे पहें वादि वादि के राग्ने मुया श्री नाया सदय श्रुमान राज्य ग्री परि'न्नम् धुना केत् में ने विश्वानश्रम्भ सामि गुना विन्याया नहेत् त्या इरायह्वार्देरातुवेःक्षेरात्राविवायाया धेंदातृद्वाचीःन्देयायाः विद्रापित सबयःर्ट्यातःबुटा वि.कु.स्व.कुर्याच्चेशःकु.धु.धु.वाचयःवह्र्यःवचूरःवरः खरानस्रम्या हे ज्ञान्यायास्य स्त्रास्य ज्ञान्य स्त्रास्य हे हे र्ट्येतायित्रभाषायात्र्याचेत्राचेत्राचेताये शासम्बन्धिया इया ज्ञ न् प्रतिया न् या पा से ग्राया से सकर प्रति सह न पा भी न पु सर । नेवे गडुर वर्षेत् न्रम्य केत वें न्यं केवे ख्रा गड़िश यथा के न वर्षेत् न्ययाथ्वरित्युनावे भ्रेष्ट्रानाके स्थापाक्षेत्रे श्रेन्यान बुनावेन। यहसा न्ययःन्जुन्यःग्रेःचेत्रःक्ष्मययःगःजुन्यायरःयदेःचेग्यःयःस्रेनःयःसेयः मश्री भेशमदेख वार्ट कुर रेट सें र पश्री रशमश्रा कुर द्री र्या व्या श्रेभेरित्रभूर्श्वा यङ्कर्रायम्वेत्रियो विदेश्या विदेश्वा ळग्राश्रास्तिः इस्रात्युर्द्रास्य स्ट्रिन्। हे म्याश्रास्तिः दूर्द्रान्गे नश्रेव नी र्श्वाम निष्या माने सक्त गुव नगत मुल (५५०) सक्व नु नन्ग्रा गर्वेव वृते नु अवश श्रें अ केव नव में ते क्या वर पहें व पते हु चन्नान् अः छेः द्वाये प्रत्यान्य स्वयः प्रत्यान्य स्वयः छः भेटः ना न्यः श्रेतः स्वयः स्वय

स्ट्रियान्यान्यान्य स्थान्य स

 र् ज्यायायाः विद्या अदि नर्गोद्यापद श्रुवायदे श्रेष्ठे दर् नश्रुया केंग्रा हेवे ঀড়ৢঢ়য়ঢ়য়৻ড়৻ঀয়ৄঢ়৻য়য়৻য়ৢড়৻য়ড়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢয়৻য়ৢঢ়৻ঢ়ৢঢ়৻ नदेः समारेगागुन न्यादः भ्रीतः ग्रीः श्रमः स्थान्यम्यायः प्रान्तः। स्याः न गहेशायशार्वे द्वानाभागान्याय हेगाशा ग्री भ्री अवदादयग्राशा रेता वे डेटा र्नेराध्यानु पर्देन परिनुषा न्त्रुषा ग्री यदे करार्ना नृत्रु । सक्त मुं मुं श मु य सक्त प्रयापा न न में मार्थ य नि मार्थ य नि से साम र ५८ कुयारें में ८ सासकें ५ पें ता विश्व मान विश्व सा से के ता के से के ता कुयारें म्राज्यत्र वि. व्या भारा द्वा व्या भारा देव स्. के द्वा राष्ट्र नडुःन्गुःर्वेदःमःकुषःर्वेदेःहेःविरःशुरःदशा गूवःनेदःगुःविदेःसहनःसेनः गणर तेते दिन्यामा गर्भेर प्राप्त ग्रांभेर प्राप्त मार्थे स्वर्भ में स्वर्भ में स्वर्भ में स्वर्भ में स्वर्भ में केशःश्वरायवे ध्वराहे। देव में केवे प्यश्वावा गर्भे म ग्री म तुगरा प्रा विदुःश्रेष्यश्चर्मेद्रम्थः विद्रायरः दुः वयम्यायः यदेः द्रेशः सः दुः यः दृदः। गव्राधराग्रेरावे रावे रावे हास वेंदा हार्गे या दर्शे ग्राय वेंद्रा या वे ल्.चिर.मु.पर्ट्रेर.भी.सबय.लयासीया ट्रे.प्रथासट्ट्रीयाययाश्चीययायया स्राप्तवास्यास्य स्रोदानो ते चुटा तुः श्चित् व त्राप्तित्र व स्राप्ति स्रापति स्राप्ति स्रापति स् विस्रशः पर द्या सर सर्वे राते। सुर विर सदे दें ज्ञर दु से नश दें र धेया

याश्चर्यस्त्रस्त्रस्ति । यहे ने द्रेशेश ग्रेश्वर्य स्त्राह्मिया । ग्वरा कुलार्स्यार्रे हे हे नेगापदे केंया ग्रीप्तर्त हे दे प्रावा स्कूर व्यव ग्री ख्रा र्शस्य वित्र किया विश्वसाय विश्वसाय विश्वसाय वित्र न्ता क्यार्रास्त्रेशन्यदेगार्त्स्याग्ची नने नरम्नेवारायदे वसेया गर्राम्ययास्या मुयारीयार्म्यान्त्राचे न्वे न्ययायास्यास्य गर्नेगशमान्त्र हो ५ ५ द्वापिय प्रेम स्थान वसवाराधरार्श्वे स्वित्रवाराचित्र होत् प्रवाराम् त्राच्या क्राया र्रेशः तुः सः देः पृत्रः याशुरः दः रदः रदः यो । सुयाशः यविदः ग्रीशः या देदः यः श्लेदः यसः र्वेन पाश्रम् नवे त्रम्य साम्य प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त र्अंत्रह्र्यायायात्रहेवावया र्सेवाळेवालूग्रानवरासेयाम्येरावेर् वराहेवाश्वनाळेवा शुःहेवाग्येरावतुयानवेदया शेरेरानराञ्चायापरा राश्चित्रया गरोरः(५७४)वतुरानगःनिरार्श्वेग्राह्मःसरःदरा द्वेतेःश्चः वर्षभावर्षभावासेराबरसायसायुवारावेःवार्वसार्कसाय्वेरार्दरा सा नकुःभ्रमार्थं यायर की या नित्या सुर में दिस्य या नित्र प्रदेश की मार्थेर

ग्री:रे:श्वापट:र् सेवर्यात्र्यावीवायःहिंगाः यहंर्दे। से:यःहे:वाद्यां रेंदिः वर्रे वर्र चुर वर्गाम्बर्स्य स्था मेव चुर्य हो। र्ये व केव पूर्ण न बर न्नापर के वर्धे निक्षा वर्धे अर्थे वर्षे चर के वर्षे राधे न वर्षे मुल र्रभःगव्याग्रीःदेग । यदेः स्ट्रेटा कुःग्रन्जीः स्ट्रेटे ख्रयः र्या धिःगेः हैं या थी। श्रुवारादे सहस्र कुर्या कुराप्तस्य यह ग्रास्तु वह ग्रासी सूद हगा ग्री कु म्हेरित्यम्बर्गरामित्रिः वित्रेर्भायित्रस्य स्वर्ग्नास्य । वित्रयानायम् रेप्याळव्रकेपा न्द्याचेकव्रक्षेर्य्य उत्रक्ष्यायाष्ट्रभा वेषान्याय क्रूटरन्गुरन्कुरन्ने पञ्चरम्या अन्य निग्राम्सरन्ने यः कुर्या वह या न सिवरायातस्र ना यार्वेदानहे नार्शेषायाहातस्यानु सामस्य पात्रा क्रिया र्म्या रट.र्रेट.पे.पंतरावायायायदे.यट्याम्यास्यास्या ग्राञ्चन्यार्थःश्रुव्यायः विवाधिवः ग्राटा इः व्रञ्जवः न्टः हैं ग्रायः हे ग्रायः व्य मुयारीं विदेशमें नर्वर्गाम्बर्गाम्य नर्वत्रें कत्या मुर्वे स् कु अर्ळ द द्वाया न सुर है। यही त्या अर्के द नाव्या ही नार्डें ने नरें या द्याया भुदेःगर्रः नकुर्वस्यरायाम्द्राय्यराष्ट्रायस्य भूवः पर्वत्रायस्य कुयः र्शेर-स्वयःहे। कुयः नः रेग्रायः स्ट्र-चित्रः चित्रः निरुप्तः निरुप्तः रार्शेग्रयः

श्रूयामार्टे सक्तरान् नुयायदेव ने नुपानि में निष्या ने न्यूया ने न्यूया गन्वरशन्धयाध्वरश्चास्त्रम्भेनशाहे। नगेयन्त्रभान्ति स्वायानस्त्रम् नगुर-सुत्र-सुत्र-स्रिया-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स्रिन्-स् यदे व्याय प्रमाय प्रायाय प्रयाय प्रयाय विषा हे यात्र या ग्रीय में प्रायो से केत याद्यासालुर्यायया र्देरात्स्यायीयात्त्रीयाहेरास्यात्रीदाकेदानयत्। चुःर्रेगः€ॅ८:५:५अगःगेःविस्रशःहःनह्दा ।श्वेदःसेदःसें केंग्नेसेट्रेकुःयः वर्ते । विश्वासदिःस्ट्रान्स्वानुशार्त्रेनाः मृत्यास्य देवेः श्रृं वासदेः विष्ट्रान्तः सायसवासाराख्यावराक्षावराक्षावरात्रुवीराक्षावासायवादाविवाक्षेयावसा ग्रीअर्देर्द्रम्यग्द्रस्याः द्वास्यस्य सिव्दिन्दिग्यः वयः द्वीताः दुः नर्गेद्रयः ग्राटः वेस वरी द्या मी रुषा द्रिया के बादमाय विमामी हो दाया यह बार्में द्रिया थी र्शेट बेर पट दे तर्दे सूना नहता सेना विकास दे सुट न सून ही दुका भ्रम्य अप्राचित्र वर्षे अप्राचित्र की माइत् स्वाप्त के साहे दे स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्वाप्त से स्व यदेग्वयात्रात्र्वेत् वेद्रश्चित्रवित्र्त्रत्र्य्येष्यः विद्रात्रेत्रः क्ष्या वेद्रात्र्य । बरशळदे हें से निया है हें तर्हे साय हैं या देव देव हे व हिया सळव ८८। क्षेत्रात्रे का विश्वाचित्राचे वा हेव की कि राज्या स्वार्थ सा होवा डेटा वसग्रायारितारी के में दार्तितारी शुवार्ति मान्वायारी ही रा नयःर्रे त्रास्त्रे विस्रास्य प्रमु क्षियः नवे नगवः वशुरः रे रे गः द्वो वर्त्त इस्रशःग्रीशःर्स्भिन्। पदेःनश्चेतःनगुरः न्। क्रुःनवः (५४व) सर्वस्रशः तः चल्वारायदे तसवारायहत सामिते वे दि चित्र सम्बन्ध सामित्र सामित्र यन्त्राचित्रक्षः क्षेत्रस्य न्यान्त्रस्य वार्थरः श्रीरः श्रुतः श्रुतः श्रीरः श्रीरः न्वीव राजन्य क्षेत्र न्येव वर्षा के हैं के तुर वर के विषय के वार्ष र्श्वेन द्रम्य स्थान स्था स्थान स्था यावर्थासाहे र्सेटासाहें हे ख़्वाया ह्यें नाद्यें ताये का विद्या यावर्था विद्या वहरमाध्ययाची कुयार्से द्वुदान्या राहेते क्वासासहित क्विनाद्में ता वहरमा क्दे में अं में खुअ में र अं जा क्षेत्र न में त में छ्टर उन्मान्नेनामा दर्शे अर्गेन सुमान दे हे से समारेना सम्दर् दर्शे वनुयायास्य इसाम्यायम्भी निविद्या स्वित्रा स्वितायस्य वियावनुत्राम्य ग्री:श्रश्राचन्याकिन केत्र से नवर में नियय न में निर केर प्रविद्या वसवार्यायायाचेत्राके वालेवायाहेयावर्षे अवीत् सुवात भ्राप्तरावर्ष मशःइसःम्होरित्रित्रम्पी श्रुशःश्रित्रशान्त्रश्येत्रश्रियात्र् वित्राये दुर्दु न्त्र्वा केट्र केट्र में नवर में द्रया न सा सुदे वादुर न सुद् श्रेव्रक्ष्यःश्रेष्य्रभाग्नेः श्रुव्रस्यस्यायाया वहेव। क्रुव्यास्वे स्युद्राची शक्ता सर्वेः

केंद्र'सेंदे कु'वह्रस'हे 'शु'नश्चव्य'नदे श्चेट कुट 'वेवा 'हु सेनस'न्से स'स जुट। देवे नर रु इस स्यापरही ए पन ख्रमाने न्यायाया या सुवे दर्वेद केद र्शेवार्थानगदार्भेर्थाप्याद्वाद्वारम्यराम्यराम्याः स्थार्थान्याः स्थार्थाः स्यार्थाः स्थार्थाः स्थार्याः स्यार्याः स्थार्याः स इत्यःक्रियाः पदिः वेद्रियः यद्भाय विद्यान् विद्य <u> न्वेंत्रः क्रीः अर्वे त्रः रेंदिः नगदः ननशः ग्रीः श्लेंत्रः सः ग्रुः अः श्लुतः न्वादः ।</u> य्याया श्री विंदा है। किया सुष्टा सुरारी (११२) विख्ये हैं करार्टा विः र्रेगारे तुः कुरागे 'र्नेरार्कें राज्या श्वाया ग्री सकुः श्रेरा ठवा विगा स्नरार्से गा विराम्भूयासायम्यासम्बाधान्यास्या विरामाग्रीयाचायासाया स्था नन्गिक्षेत्रकेत्रस्य अभुप्ते विया देखेत्याया यह या या यह या यह कु यक्ष्यः विश्वास्त्रा यन्याः हेन् क्षेत्रः से स्वारः नुसुत्र स्वारः सुन्तरः भूतराशुःवयःर्रः कृषाः द्यायः या नेहेव। न्यायः वि नर्भू रः न दुः गशुस्रायः खरमिर्देश्य भूरायन्य हेर् के विषेष्ठ स्थानि यर्ने विस्र स्था विस्त्रा विस्त्र विस्त वनुयाग्री अयागुन नवाद क्वें में या हैं माध्यान हैं वें नवान स्वाप के वा में। वी ग्वाव कुषार्थे। धे शुव ने शुर ग्वाशुय की है जे यह न या विवार्धेव नन्नाः स्रेदिः स्र्यः के नः कुरः दुवे नुसः में र्या गुवः न्नावः ये न्यायः विद्यायः विद्यायः विद्यायः विद्यायः ल,शेय.वु.शेर.भीय.रेयोट.कीत.शक्य.ग्रीश.र्षे.तु.रेट.बू.योय.वु.शेर.ग्री. मुःसरःद्रेरःलेकः रेव्ये सःचाद्रचाः वसःसिवः क्रिकः सुरावसः सिवः यनेशामहेवावयायायायाया वयायायाम्यायाळवामहायाच्या चदःवस्यास्यावदःखेग्रस्याचाद्वःसःकेवःस्वःविःविःर्वेगः पुःचल्यासा सः मठेगामविंदात्रायाम्याम्यादाहिःसा देवाधिंदाक्रायासस्या द्रमया विव.ध.म.रम.रा.यशूर.यममाभितामक्य.यमिमात्रीयात्रीटमात्रापुट्रमाहे.ध. सन्। रेगायदेग्वर्यास्यत्त्वात्यास्यात् स्वित्वेत्रहेष्ट्रेत्रहेर्यादेशः केव से सदय नहे अ प्रश्नान ह्रव पहें व गुव ही गई ग हुव द्राप्त सुद यय। विन्यम्मेर्स्यक्षेश्चेन्यम्भेरम्यास्यम् हिन्यर प्रयाया या विवा है (५ (६ व) या रे व खे व खे है । या निवा गुव न्वायः येवायः कृषा गुरुन्वायः कृषः सळेतः वाशुस्रायित्या गुरुः श्रूर्यः म्नें में अन्दरम्यायायाम् यास्रवायाद्वेयायहर्या देण्यरहिर्या में स्वर्गातायायाया म्नें में अर्गुअरग्रुटर्ने म्रयअरथरम् न्नान्टरन्ने अर्भे स्ट्रेने अर्भे राम्नेटरन्य सिम्यानद्वत्त्वसासिदायेग्यायाचे स्थान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्याव ने पान दुव से निहेश प्रशासक निवेश्वरान् ने के के सिक्ष सक्त स्टूर चतःश्रमःश्लॅचः न्य्यायायः संश्चियः न्यायः संश्चियः न्यायः संश्चियः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स यक्ष्म श्रुमात्मिर्या स्मान्य समान्य समान

<u>व्</u>चः सः न्रसः प्रदेश्या हे दः ने द्वः व्येन् क्ष्यः सक्ष्यः सक्ष्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वरं सक्य-र्रा श्राचामुत्यासक्य गहिया श्री सिरस्य स्था सिरस्य स्था सिरस्य स्था सिरस्य स्था सिरस्य स्था सिरस्य स्था सिरस्य सिरस सक्रम ने या प्रह्मान् मुर्मा स्मापय मुष्मा सक्रमान्य वा सुरमान्य मि वस्त्रामुत्यःसळ्द्रासुसःम्बेरातिहरूरायायम् वसःस्रावतःमुत्यः सक्तत्र मी स्थान मात्र की सार्या मिता सक्त प्राप्त वर्षा के तर्हे हैं प्रकरः स्थानवि द्रान्त्वित्या विस्यानवे स्थानवे स्थानवे स्थानवि स्थान सक्तिहै। देव डेव क्षर मुरम् चर दुः या वा राष्ट्र केव क्षेर व व र र वा राष्ट्र वा राष्ट्र वा राष्ट्र वा राष्ट्र न्ययाध्वास्यासुः प्रदेशवनः निवानीः निवानाः में स्थायमः निवा निः भीः गुवः <u> न्वायः येवायः वर्षुरः वी वादुरः गुवः न्वायः क्रुत्यः यळ्वः ग्रीः श्रयः ५ः (५,६न)</u> न्नेवर्केशः ग्रेम् अर्धवर्ना ५ न्नेवर् र्वे श्रम् या सर्वरापिकार्थः स याहें से नासुसायसाद्राधित सुसा हेना के दार्के साग्री मुखारी नाहे सामाया इस इन् देव हेव हैं है। वार्य या या सेव न देव न सेव न समान वा निया

सक्रवा नृगुःसेटाचे । नससःगुनः कुषः सक्रवा देवःगुनः कुषः सक्रवा नृगुः शेर वोदे वर्ड् दर्शे छे वदे श्रूश गुद्द वाय वाय विश्व गुद्द वाय क्या सक्रमा गुन्द्रनादःश्वेदःसं नासुसःयसःनरःससः। प्रस्यः गुःसुनासःसुः वर्चरायावश्रासकेरायाहेशाविर्शावरी वर्षा इस्त्राता ख्रीवरास्य वर्षा वर्षा र्श्वेन द्रम्य है अद्यय भी महर में गुव द्रमय येग्य स्य स्थि महिया यथा के नदे श्रथ श्रून न्यें न नशें न नश्य प्रत्या कुर नदे श्रथ श्रुक न नश्र्यात्रस्य स्त्रीया गर्वेदात्रायानेग्रायाचेग्रायाचेग्राप्या कुषासळ्या वरीयाहेरस्याहेरायया न्रासीयागुन्नवाययेग्यायाये मुं मुं अन्ता नगर देश में अश्मिय अक्ष्य ग्रिश प्रवित्या ग्रिश राजा क्रूंशःग्रीःभितात्रक्ष्यःपिशित्या रेयरःस्यात्रयात्रमःह्र्यूःयाष्ट्रयात्रया रेटः र्रोदेःश्रमःगुरुद्वादः र्ह्वेश्वा गहेशःयःयः द्वरः द्वरः स्वादः येवारः पदः ख्रुयात्रायिद्या वयायाययायायायाद्यात्रात्राहेशायया र्टार्यायाख्रुया यिष्ठेश यिष्ठेशःयायान्यस्य सामयः मुखासळ्या ने त्याहे से यासुसः यथा ८८.मू.ज.क्षेत्राचाद्यचा । चाद्धेत्रातात्वात्र सामयः सुष्यः चार्थेत्राताः यात्रसामायान्त्रमा नेदी स्रामायां मान्या केता (६०४)रगःमेः र्यरः ध्रुम । यहसः र्ययः म्याम्या वसः स्वरः र्वे स्युन।

देवे अभागुन द्वाय वस्र मुन द्र स्वाय वस्त केन से गुन द्वाय देन डेवा स्याये स्थाय निवाक्षेत्र गुत्र न्याय यहे त्येवासा हेवे स्थाय निवास स्थाप निवास वस्रभः भ्रुवः गुना गुवः नगदः भ्रुवः गुना वहेगाः हेवः नगदः सुगा । नेवेः अर्थः नर्सिन्द्रम्थाः र्स्तुम् व्याप्तान्त्रम् न्याप्त्रम् न्याप्त्रम् न्याप्त्रम् न्याप्त्रम् न्याप्त्रम् न्याप्त्रम् वस्रभः भ्रुवः ग्रुवः क्रस्य अः विश्वद्या गुवः द्वादः देवः देवः वः हेर सें ग्रुसः वस्र ८८.स्.ता.केश्राचिष्ठा चिष्ठेश्राचात्रात्यात्यात्यात्यस्य स्थात्यस्य विषया বাধ্যমা বাধ্যমান্যবামানার্র্রির্মা ই'মের্মান্থমার্থ্রমার্রার্বামা म्या सम्भूत्रमान्यरः स्या । स्यान्यरः गुत्रः न्यायः वर्षे नः त्रस्यः वास्रसः विष्ट्रमाने। विविद्यामानु निर्माने विद्याने विद् नश्रुव मंद्री में म्यार मी नम्द्र मावस्य मंद्री स्व विद्या श्री में से नस्य हिंग स्व शुरार्के पाय पादी वर्षे समें वर्षे समें वर्षे या मुख वर्षे पाय पाय पाय वर्षे समें वर्षे वर्षे समें वर्षे व नर्भेन् न्यया पदि नर्भे पुर वी नर्भे या पदे न्ये व केवा विवा विवेया <u> सूरःध्रवःयः दरः वडशःयदेः हैः लुदेः वरः दुः द्वुशः वादं रः र्ह्वशः ग्रीः र्ह्वयः।वा</u> यर्ने क्रेंन से ते के ताम सर्ने क्रिन हिते के ताम क्रेंन में निक्त से ते के ताम वाश्वामी:मुवाप्रयागुनायायायाः श्रुमारेटा विमायमायाः श्रिमार्थेन विमायायाः गुर्स्स्रो कुःसेना । १९८४ ५८८। विष्युः क्षेत्रार्द्धः विष्टुन कुःसा दवेःगुरा

क्यामा बरार्स् के.मा सवाचा वालयःच बराक्षे, द्वेश वि: द्वेग | द्वेश गर्डरागे अळ्यश्राधरायर्ज्ञ गाहि नर्ज्जेराग्डिगा(४०न) श्रे नेंद्राग्री हि नर्भूर्याच्छान्।अंभाची हे भाषा कराया द्वाराया च्चाराया चुर्याया स्ट्रेराया स्रीया भाषा द्यायःचबदःमें प्राहेशःग्रेःहेशःशुःवदःचर्द्धदःचदःदग्रदःचारेशःग्रेशःग्रेःयशः गान बुरा दे हे या बुर से दान क्रीया या से बिदा से वे प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प वुरायर विरुषा ग्री क्रिंट के बिरा द्वा विषय विषय विषय विषय विषय <u> ५८.मोर्बेब.२५८.मोर्डेश.मी.५५.ल.२५अ.मोर्डट.मी.कु.मोर्या.कुव.सू.२८.</u> विस्रश्रा है नियक हुर्या दे हे साद्यें के के तुरा हैं स्वराष्ण के तु वर्त्र अः अः श्रुदे खुवा अः रे छि । अर्दा विद्या विद्या अर्दा नर्भूर्यन्य द्वार्यया वित्रे न्या वित्रे न्या वित्रे न्या वित्र वि यःश्रीम्याद्रीःम्द्रिःस्याः पुः म्यायायः यः दे । व्यायः सः श्रीम्यः शु-न्द्र-विर-विर-विरायदे या सळस्य या ग्री-व्यापा अर ये दा ग्री से र-विया वर्षाचेर्यास्य स्वासार्येष्ठ केवालेषात्याद्याः श्वास्य केता देवे हेशसुःपवित्रद्वर्वस्यक्षुर्वस्य अभित्रायसः दुःर्वेदस्य देवसः येवसः यन्यया सेट्योन्द्रया दिन् बेट्सेट्यो प्दिस्सेद्र्यास्त्र्वेद्दिन्द्र्वेद्द्यीन्त्र

त्रीट्र अग्रीय्र प्रमासहेश विश्व ग्री मान्य प्राप्त मान्य विश्व प्रमास्त्र प्राप्त मान्य मान्य प्राप्त मान्य मान्य मान्य मान्य प्राप्त मान्य मा

है। वस्ताविताकी यससालसान्तर्स् वीट्टास्त सुर्धित्वान्तर्

व्या अर्क्चन्या नाश्चित्र विश्व विष

ने प्यट क्रिया में विद्या स्थि में स्थ में स्थि में स्थ में स्

गुनःधरः अह्न देवे रुअः दर्वे दः वर्तु रः ग्वाद्यः वर्त्व वर्ग्व अः ग्री अः दर्वे दः ग्री ः में अप्त बुद्द वर्ष खुष्रवर्ष बुद्द वी ग्रुप्त क्षे प्रवर्ष प्रवाद विवा ग्रुष्ठ विद्य देवे दर्वेद प्ये के राव हुट म्वर राग्ने श्रेद साम वि तु मक्क द तु माम राये श्चित्रश्चर्गीः लीया सूराश्चराश्चर्या स्थार्था । ते हि अत्रस्य अरथा मुरुप्ट्रिश गुरादे गार्या भी अर्घेट द्राया थी । ध्राया प्राया । स्वाय है । वसार्खायत्रुम । देवसासम्बन्धासारा सामित्र केतारी समारा स्रेटा से सामित नर्वः श्वसः रेविः र्ह्वेदः रेवे सहित्। स्याया विकारी सहितः विनयः र्नेग्-न्द्र-वेन्-वन्रायानग्वदेव के। नेवे-श्रयान इव में पेवि क्रयान न बुटा दे द्यारियान विदाय पाठिया खूदा थेया त्या वि वट या द्या वि यहेरिष्ट्रम्भ देवेर्श्वरार्श्वराश्वराध्यात्र्या विर्द्धर्रेर्स्स्माय्वरा र्वेवः केत्रक्रश्यः र्झे द्वा | देवे स्र्रथः सु नवदः द्रदः दयम् रामविम्रा दे त्र्यः रेस्रायबिद्रास्यार विया प्राया क्या स्वार क्या राज्य र वरी-दर-वर-रेव-र्रे के अर्के द व्येव-र् शुर्म के अर्थ-स्व शुर्म के प्राया वर्त्वदःवदेःखदःवस्रवःददःसत्रवःसरःदर्ववःसरःसः मुसःदर्दशःग्रुवः

श्रास्त्रभा श्रास्त्रभा विद्यास्त्रभा विद्यास्त्रभा विद्यास्त्रभा विद्यास्त्रभा विद्यास्त्रभा स्त्रभा

पश्चिम् निर्मा क्ष्यामा स्थान निर्माय निर्मा क्ष्या मिल्य निर्मा क्ष्या मिल्य निर्माय क्ष्या निर्माय निर्माय क्ष्या मिल्य क्ष्या मिल्य क्ष्या क्ष्या मिल्य क्ष्या क्ष्या

142

दे त्रशः कुदे वर्जे के स्थापशः प्रदान्य श्रेष्ठ । न्यः विदः कुः वेनश्

गर्भराद्युःर्भेग्रास्ट्रेन्द्रान्द्रिन्यरान्यस्यायस्यात्वास्यानुः हुरः यद्गःयग्रीन्यमाष्ट्रन्यम् नुत्यम्यम् अयाविष्य। क्रिंभाविष्यभ्रीन्यम् वयासळव्रित्रीःचन्त्राच्या न्त्र्यास्त्रीटान्यायायाःवह्यायायाः र्शेग्रथः इसः नगरः ग्रीः सहनः यः ग्रुः केवः येशः वेदः सः विवः प्रः न् ग्रेशः वदेवः गड्र में में देव डेव न्वर धुमा स्व मृत्यूर । न्याय वरेवे श्रूष पाहिषा (६ ३व) नरःश्रॅरःदरा व्याःश्रेःश्रुवाःयोः कुःचेनश हेःर्नःदरः ब्रुवाशःहेः केवःर्रः गहेशःग्रे:८र्जुर्चेगः हुःगकेरः र्चेग । तत्य अर्थे केते गहे स नगदः त्युरः ८८। रगुरुः भ्रीरः देर् नार्ययः दश्चयः ग्रीः श्वः विरः न हो नारः र्द्धेग्रयाग्री:सहरायाञ्चादायायळे यायायरावेटा। श्रेराग्री:यरवायराष्ट्राग्रदा म्बर्धानी विम्नास्य सेमा साक्ष्य स्थान विषेत्र श्रमा के निष्य स्थान से निष्य स्थान स्था स्थान स्था स्थान स्थ न्वादः में में प्यनः से अः ग्रीः के अन्तरः मेवा पदिः वाव अः वस्य अठनः वः सिविदः पः रे.चॅ.र्गे.यमेषायरेगमारासँगमार्क्साम्चर्गामहर्मामार्भार्ममा सबयःताश श्रमःतारः विः निर्म्य चिः त्रायाः वा वृदः में वावाशः संवेशः स्वः वा गहरारे रामा हु मुद्दानिया स्वार् मुद्दा स्वेत विस्था स्वार मित्र स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्वार स्व म्राम्यायाया यावयायदे न्वरासे नुः स्वार्थि के स्वार् न्वरायाया

देश्वर्शः स्वाप्तद्देशः सः इस्रशः श्रीशः सहनाशः क्षेः नविदः सदि सदि सदि सदि । विवाहितः स्वाप्तः स्वापतः स्वापतः

(६३न) हुट छेद गुद द्वार स्वार स्ट्रिस स्वार स्व

श्रेषा'म'र्रा हेर्'र्ष्य'येरे कुर'र्यो प्रायविष्ठ र श्रेष्ठ प्रायविष्ठ प्राय

रमयाम्बर्गार्भे वुर्गिरियम्बर्गित्यमा भूगामकुर्गे नभूव'रा'रेव'र्से'केदे'न्वेव'गव्यार्श्वेन'क्व'न्र-क्व्यार्श्वेय'नर्सहर् मर्भिन्ने क्रुप्र-देव भें के पीव पा गानव रमम् माने रहा ही नम् नु रम्म मि क्रॅंशर्विवर्नेवर्नुविद्वर्भावस्य वहिनाहेवर्ग्वरेष्ट्रवर्शन्दर्गेद्रस्येत्यनाः ह्याश्चार्याश्चार्या श्चित्रः हित्रमादः हेस्यान् हेस्यान् स्वार्थः हित्रमादः यमा ने नुमारी सुमारे सुन स्निस्ति के धीता क्षेत्रामा भूगा से ता धीता है। षरः अ: त्रुअ: वाशुरुअ: पाः भूरः धेवः वा देः षरः वश्वतः पः शृः दरः त्रीः दुः अः श्रुः रदे-देग्-ध्ग्रायायकराना विगायायायदावर्षिते देग्। उत्री स्वायया नु निरे में र्से (४०४) विवा त्वर्याया से त्यया वर्याय से सूवा सूर सूर र्क्षेष्ठाराः विवा चुरावा देरास्टा विद्या सामा स्वारा । विदासा विदास विदास विवास विदास विद या दे.यहेश.ग्री.श्रश्रायायश्रायप्यत्यत्यत्यत्यिया.ग्री.चक्कित्रायश्राश्रश्रश न्नरक्त्यक्तीःश्रश्यविष्यहें हे त्यहें से हे नहुं त्या हु न स्ति स्थान **য়ৢ**ॱঀঀ৾ॱगु८ःरेवॱर्येॱळेॱঀয়ৢ८য়ॱঢ়ेॱঀঀॕॱয়ঀ৾৾৾वॱरेवॱरेवॱसें ॱळेवेॱतु८ःतुॱॿॸॱक़ॗॺॱ

ग्री:केंश्रानुस्रामानार्भुवि:कुषानु माश्रव विदासक्व सेव हेव निम्यानु याग्रा वर्चे अर्गे व प्राने प्राने माना है अ विट शुअ है पा परे सह पा पुराप्त स सहर्ग्यार विषेत्र विषय नित्र नित्र नित्र स्त्र मुह्म निष्य सुर्गेत्र वशःहैवाश्रः ध्वाः क्षेत्राः क्षेत्राः क्षेत्रः देवः ग्रीः द्वीवः प्रः क्षेत्रः वावशः ग्रीशः स्वाः वरः स्वाः यगः क्षेर्रम् मुर्भाश्यास्त्रायद्ये गुर्वेषा वेशाविर्भामे देते द्वित् ग्री सून नकुन्यदेगार्वान्यस्वायम्यस्वात्रः व्यक्तित्रः विद्याः क्रिन्यः स्वात्रः केदेः वि गशुस्रायसाके नान्धें ताने तत्री की वर्षे माने वित्ता कुमाने हैं से माने । कुमा न'माइर'मेव'र्से के में हे मामायायया माइर'मेव'र्से के हे थे नवे सूय यर ग्राम्याया भीटा वदेवे पुरुष् सुर्खे सामाया वि दर्धे व की वह व सामें वि हो। च्र-५११४७६६११८१११४०४८८३ इन्। १३५८४१ देवरा १३५८४१ देवरा १३५८४१ निव हि के। दे द्या य प्रसम्भावस्य ही सा सु मिद्रा से हि देव में के त्या वही गुरःक्षेत्राम्या नःक्षा्राम्यानन्यानेनःसन्देश्वानेनःस्वान्त्राम्या वेत्रपर श्रूर वेर वदे विरुष देवाय ग्री वात्र श्रूष भूता देव ग्रूर श्रूष या गशुस्रानिते देरिया साम्नुपार्ट्या समुद्रान्य विदेश से सामिता मारेवाडेवाकेटाचे प्रमुवाक्ष्यक्षका (६८०) नड्याये हे मासु गत्नशान्त्रश्रर्गत्व्याशः र्वेनाः भ्रीरः वेनाः केतः रेने । सूरः भ्रानशः वर्

पिट ता से न के या समारे में तर्य हो हैं हैं स्था योष मा यो ता समारे सा पिट ता रेव केवा हैं हे मुल सें हेर महिशारेव सें के। देव मुन मुल से इसस रेवःयरः र्चेवःहे श्रुवः स्वेतः वेवः वेवः वेवः विवादः स्वादः स्वतः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स् यथा वहेगा हेन शे शेन वहेन भने या शुरे न में न केन शे में न में शुर् वर्षे गुर्ने क्षेत्रयाधेव प्रमा ने न्वानी में रिस्वी क्षेत्रया है है से राने। न्युयारिव हेवा ग्रम् ने। ग्रम् क्ष्मा श्रम् म्या क्रिंग सेव हेव सेम मी। भूत्रायान्यवाया भूत्रायान्वयान्या येते। मॅरिसम्प्रेन्स्सि: तुर्भे तुर्भे ते स्वे प्राप्त प्रम्य दिया विष् ब्रैंट्र शुर्देव में के प्रायम्य शे मिर्ट में के शाम्य में है हैं श्रीय राक्तेरायानर्भेश गुवरिव कुटानायानर्भेशव योग्यायि कुः सळवः सुर से द वदर। द तु अ या उंद र र्से व र से र से या व स्थया ग्री अ विव र र से अ व सा श्चिरःवान्वःशःसवःद्ध्वःविष्ठेशः बुदःवर्त्रोवःधीवःयःन्दः। छिन्ःयरः श्चित्रःयः रटायाश्ची मुन्नायाद्वेद के नम् क्षेत्र न्येद गुद्द देव गुद्द स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स गुःमःयः दत्र नर्वे अअः ग्रेः मुना द्यादः विवा गुरामः यः नहेता द्वेः गुरः वोः श्चेन्वायम्यम्याकेन्यासानुनिविता नेहेशानुगुन्वनार्धेशास्त्रीयापदेव्यसा

गानवुर। देवशाईराद्दे नर्भेदारेव परासुष्वर खुषा सुषा भेषा श्री भाषा श्रेन्वहें व प्रते श्रें य जुर पर्या वयर। के श कुय मेव के व न्यय (६ ५व) नवर नी विना तु न्यें त श्रुवाय है किया श्रेन ही खुर नवर से जिर्य शु न बुद्र । श्रुश्रामिष्ठेश्रामिष्ठद्रश्रामिष्ठे छुद्रामा मर्थे । श्रुष्ट्रामेष्ठे । श्रुष्ट्रामेष्ट्रामेष्ठे । श्रुष्ट्रामेष्ठे । श्रुष्ट्रामेष्ट्रामेष्ठे । श्रुष्ट्रामेष्ट्रा सर्वित्यम् सर्वे निवे में सम् र्वेषा स्थान र्चेत्रा वर्चेट र्से केंश हे गुन द्वाव देव केंद्र ग्वाद्व अर प्रवृत्व या वर्षेत्र नुसावयार्रे वदासळससासास श्रुवायात्रा स्रार्चे गायते गुरायात्रा स्वायानिकास्याक्ष्यायानिकासी प्रत्येषा वनायते स्वाउत्तर्ता पर्दे हेन्'ग्रे'दर्भे'ग्र्रारअदयर्देग्'न्'प्रॅन्'प्रदे'न्गे'ख्र्य्य ग्रे'न्गेंन्'स्रस्य श्रेर् व्यक्ष्यस्य प्राचित्रः याव्यस्य प्राचित्रः विष्ठित्रः विष्ठित्रः विष्ठित्रः विष्ठित्रः विष्ठित्रः विष्ठित्रः व र्शेग्रार्थे तिश्विग्। वि. वसार् सायर्यायस्य वर्षे गुरायग्यायम् स्रा रायायम्याकेर्या गुरानिराद्या गुर्ट केंग्री मुयार्थेश्र सुर-न बुर-नदे-श्रश-न्यॅन-रेन-डेन-सुन-र्क्षणशादी-कु-र्नेन्-ग्री-सामश्यान्य-ववावःविवाःवीः श्रेः वःवायवः वरः इतःविरः वाद्वः सरः श्रें व। रह्नवेः श्रेरः उतः वर्गे नदे निर्धे श्रुम् विश्वासदे सुरानश्रुव नरास श्रुव सम्साम स्वाप्त श्रुम नुःवसेवा वदेवे:ह्रेशःशुःसमाः सें वशःदर्भवः देवः चे कः मानवः सरः र्रेवा र्वेनापित्रदर्शेशर्गेदर्भमाइद्या द्वेरग्रद्धेन्द्रत्व्रेवर्पन्द्रा वेदर

दे त्यून्य के लिटा यन त्यून क्ष्म मान्य न्यून के व्यून्य के न्यून के न्यून

स्वास्त्रभ्यात्त्र क्ष्म् क्ष्म क्ष्म् क्ष्म्

श्चर्या विकास्त्राचित्राच्या विकास्त्राच्छे व्यास्त्राच्छे व्यास्त्राच्या विकास्त्राच्या विकास्

दि 'य' श्रूश द्वा या निर्मत केत स्त्री मित्र स्त्री सित्र स्त्री सित्र स्त्री सित्र स्त्री सित्र स्त्री सित्र सित

वेशःग्राम्याश्रुवः उवः देवेः श्रुवः हैं । अर्मेवः संवाध्याया सेवः ग्रीः श्रेषः नविवः राश्चित्रदेत्रकेत्रची त्यरागान बुद्रा केंग्रासे नवे त्यानगुरसे सुन्ना हुःसह्य देःयःश्रमःद्वायमा वसःसिवयम्वःसमःमेंदःसमःद्विनवसः स्वायमें देर्न्न वास्यायावे न्याना सक्त नेया ही हें शु इसमा गवरा श्वरः हर्नेवरग्रे श्वेशेरः दरः लेयः ग्रेर्यायः श्वरमा दययः ध्वरमः शुः ८८.८४.५८.ची अ.पाई अ.राटे के अ.रो. इसअा शुः नश्चे व.पग् रः श्वेषायाः ख्यायायाद्वेयाग्री यहंदायावहा। देखाश्रयादेवाहेवामुखायळवादा। वसास्रावतः देव खेद खेद्राचा विषय चित्र श्री साध्य स्था । विषय साध्य साध्य स्था साध्य साध्य साध्य साध्य साध्य स इयशः स्ट्रा श्रुवः रवाविषायः ग्रीः श्रुवः यरः ग्रावाय। वरेदेः ययः स्ट्राः गुवे गुर कें राज्याय र द्राया न वर गीया से फुळ द गुवे यया गा सुद्रा श्रमाद्यी:क्रमात्री न्यात्रक्ष्या न्यात्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत विविद्या गुरुद्द्याद्विद्यादा है निर्द्ध्याया भ्रेअरारा इत्। नेश ग्रुदे ग्विस त्य भ्रें में साग्री तह्वा रास से वा हा परसा निद्रा गुर्दिरम् भेदेख्याम् न बुद्रा धन द्रम्य वेद क्री नगद न विद्रस्य व्हरनी नक्ष्यारा स्था अया स्था श्रीरा नास्या (५६न) विहरमा न्येते न्यूर शे दुवे व्यय गाप्ता वा बुद प्रों व केंवा वे वाय याय स्था विवे बे वे पे क्या है।

यशगान ब्रद्ध हो से देश के विद्या में कि स्थान के विद्या के वित्य के विद्या क हे मिन्द्रा की अमिद्रा से प्राप्त देश हा दिया के मिन्द्र मिन्द यविश्वास्त्रियान् स्त्रियाम् अविश्वास्त्रिः हे क्रियासळ्यान्या स्राप्त्रियाः क्रूशः चीयोशः च बरः सुः शूचोशः क्रुशः चीयः पर्दः हो दः चीः विष्ठाः यः गिरुग्रथात्र्य रुषायित्रम् मुक्ति स्त्री स्त्रियायायम् स्रेर्था मुक्षा ञ्चन गुन ग्रेश रेग्र श्वर वरे हेर ग्रे जुर जुर जुर ग्रेश ग्रेश वर्षे र खेरे कुर वर्गेयासन्तर्भेताम्यामन्त्रम। सूराद्युमास्याम् केत्र्यस्याम् रादे दुर दुर देया यात्र शरी व्याय श्री र सह द र रादे भ्रायय। यदया केत यह र हेन् ग्रीश येग्रायम् नन् पदे नु श यि म् ग्री ग्री म् ग विवासानात्वासाने। हेर्गी वास्राराये स्मान सेराय समा इससायायरायर्स्स हो दार्वी सामरायर्वा वासुरसाञ्चर

नेर्ने: मु: नुर्ने अ: ने: वयः वयुर्वे दः वर्षे दः वर्षे वा अ: अविअ: यः इअअ: शुः नर्गेट्यस्यह्न रुषाग्रीयिस्येदेर्वेद्र्याद्र्येव्याद्र्याय्ये हेव से अ से दि या द्वा या या से सम्बन्ध सदे व द ग्री ह या द्वा स्था द्वा र नरः हो दः सदेः गार्थे ना र्रे ना सदेः गावु दः ख्र गायः गावः ही । यदः स्रे दः हे । न द्वं वः ग्राधुः र्विन् राक्षेत्रः रेदिः रेदः खुग्रायाययः नरः हो दः रादेः नश्रृतः नर्वेया विगः श्चाळम्यार्वेन्याञ्चानेवायवेयम्भन्यवेश्वर्ष्याः भित्रात्राय्याये स्वर्षे नर्जे देगा माने प्रति माने वा भारते सुपा ब्रुवा भारते । वसून परि यावर्थः स्त्री यायरः नः स्वायः ग्रे खेदे ख्रुनः बनयः ग्रे देयः या यः देर्यः सर्दिरशुस्राम्बर्धान्य-रङ्ग्रित्राचार्द्धवात्वनाः हैसःग्रीः भ्रेत्रा सावसःग्रीनः हैसः मक्षरानित्। र्याग्री पर्वर्र रेखेंदे र्से यार्सित्य स्वाया सुपार्य द्वाया ग्री हेव नवेट सट रु सही सवयायस रु हैं न निर्मेव केव में वियान विनास मन्दरहे अक्ति त्य श्रुवाय ५५ भुवाय ५वा में विद्युद्य प्रयाय केत ५५ गद्धनाःत्रशः वेयः प्रदेः सूदः चः श्रें ग्राशः हैं ग्रयः प्रदेः प्रें तः हतः ग्रदः यवदः प्रशः निर रेग रादे ग्वावशास्त्र राया या सिव रादे श्रुव प्यार साम स्वास् म्हेरि, विश्वास्त्र मेर्ट, क्रिंट, क्रिंस, क्रिंस, स्वाप्त्र, महेर् प्रमान क्रिंस, मेर्ट मेर्ट मेर्ट मेर्ट मेरिक, क्रिंस मेरिक, ल्टिश शुःवर्ग्यायाश विद्या देव दें के वे कि व श्वायाश के व की कर शुम्या श र्र्ष्व निव्य निव्य निव्य निव्य क्ष्य निव्य क्ष्य क्य

दे हे अवस्थानिय के द्वार दे के के निष्य स्थानिय स्थानिय के निष्य स्थानिय स्थ

श्रुश्या द्रियाश्या विद्याश्रिया वाष्ट्रा विद्याश्रियाश्या विद्या श्रियाश्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या श्रियाश्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या विद्या श्रियाश्या श्रियाश्य श्रियाश्या श्रियाश्य श्रिय श्रिय

য়ৢ৽ঀ৾ঀঀয়ড়য়ঀয়৽য়ৢ৽ঀঢ়ৢঀ৽য়ঀয়৽ঀয়ৄঀ৽য়ৢয়৽ য়ঀয়৽য়ৢ৽য়ৢয় য়ঀয়৽য়ৢ৽য়ৢয়

 नहन ग्री क्षेट र उक्का पर प्रग्रीत विता थे लेख प्रदेन ग्रीत क्षेट पी का है क्ष हे स्रेट्रिंगी के रास्त्रवर्द्या के वर्षे रादकरावा गुवा स्रेट्र के वास्त्रा मुजा है या वी कु अ वे न अ प्रवे 'हैं हे हे न कु प्रअ न न वा वहें द ने ने वे न वे न प्रवे र वे वे नकुर्णेव्या देण्यरः र्केश्येर्ग्ये पर्वेर्यः स्वाव्येर्यः स्वित्रं स्वयः स्वर् थ्व-५-भ्रेष-न-वे हे भ्रुव-भ्-रेव-भें के ५८। वे ८ अ ५६ अ ५६ अ ५८ अ न्ययाध्य क्रम्या श्री वातृ नायया ने सायम हिंदाया क्रम्य प्येत प्रमा क्रम्य वनामानिरमी हो तः नरावा भारता भारता हो स्टामा हो स्वारमा स्वारम स्वारमा स्वारमा स्वारमा स्वारमा वियासन्दर्भ यन सेसा ग्री के नेदि येना करास नेसा विवासना या र्वेर-१८-१८५ विश-१८१ क्रुश्य-भिर्म श्री श्राम्य स्थित विश्वा विश्वा यदे के अवा गुन यदे अवद दर्गे भ के नदे के ल अर्चे नदे हुन्य र दर्गे भ वेशमाशुरश्रमा वेद्रमाश्री वेद्रमाश्रीयातुरसार्श्वरावित्र्यस्वर्शाम् । वनरमःसबदःन्याःरेयामःरुमःवर्क्षयःनरःसःश्चेतःसमःतिरमःन्रःधेयाः क्रम्भायात्रवान्त्रानु ने निर्माय स्थित स् कुं अर्ळद्र अर र र श्रुपा श्रेषा म्व स्थया ग्रीया थे प्राचित्र स्थया ग्रीया श्रेषा । यह गाया बेन्डिशनवन्यान् होन्। विश्वासितं स्वास्त्रम् त्रम्यान्यवस्य

(४४२)वेदिनी वर्षे अव्यक्षावदे हेद्र इदा बद्दा में है नके रुवका वनम्यामी से मन्याया वर्ममान से से दे से माने से माने से माने विषय लूटश्रामा ब्रिप्टाश्चिटा श्विताया भ्वाचा प्राप्ता स्थापा वटा मी श्चिटा कुर्या त्रः सर्वे द्रायः सेराविषा वरः शेः द्वे द्रयः कःवा रेवासः द्वारसेससः वर ग्रंत हुन । श्वि.ट.वर्शेंका की.चर्ड्.चक्चेंट.क्योंका श्वि.ट.चर्ड्.चक्चेंट. वर्त्रेट में दिट क्रेंट महिमार प्रमान करा हिटा विकास निर्मा हिटा वी क्षें र दे ता द्वर में खू द्र प्या त्या क्ष्य श कें कें र में दि दे सक र क्ष्य ग्री विदायित विदाय क्रिंत प्राप्त विवा विदाय कर केर प्रेर के या क्रिंत किया क्रिंत नम्मार्था नेते: हें सें स्वामा क्षिया स्वामा वर्षिया स्वामा स्व देशर्दर्भववयद्दियार्थे द्वर्यायाया भूष्य्राश्चेत्रायविष्या देवे वक्षस्रभागववः विर्वित् त्यास्रभासग्रम् सकेत्र सकेत् नवि विरा कुरानदे स्रभा न्गु जुरा है से पाद्य से प्यापद्य के सके द द्या है से सुरासे पा सुक अकेन्द्रम्। हें सें सुनवद्यासुर्कं अकेन्द्रमुन् सुन्। गुर्नियान्यः या यामिक्तियार्ग् विष्ट्रमा देवे हे से सिर्धान हैयार्स्य यास्यास्य सिर्धा है। के

नः अवेदः नी । देवे में अं श्वेश्वयः द्रग्रमः अं तः श्वयः में द्राव्यः व्यव्याना स्र चचदःश्रवेदःचश्चेषः।वचःहःचवेशःयरःकः।विःषःवदःवविदश। देःषःश्रशः मुयार्भि के कुराम्युम् ममुत्रम् प्रिंत्यायम् कुरामिर्भे संवेदा र्शे.ज.श्रम्यायीश्रमः(१६४) वैट.यह.वि.इ.यह्य स्ट.यी.श्रमः देशकाली देह. श्रभाषाभे सु ने नि देवे हे से पाष्ट्रमान वाया भाषी या या श्रभाग सु स प्राप्त सु स चनदायाञ्चर्याचिम । श्रेवाचनदायाञ्चर्याचिरात्रा वर्षा प्रमान्त्रा यश्रासकेन्यानुश्राकेन्यकेन्यकेन्य । विष्यश्रिसः र्शेन्यश्नित्। वेद्राक्षेद्रानातुरातुना विद्रास्त्राक्षेत्राक्षेत्रात्वेदा। क्षेत्राचीः र्द्धेट्र नयः र्द्धेट्र र्द्धेट्र र्द्ध्य । सर्म्य न्द्र विट्र ख्ट्र सुर्म्य विश र्शेषाश्चान्त्री नश्चित्रा नश्ची वर्शेष्ट्वरायन्त्रश्ची हैं से नर्द्वरानन न्ने ख्रम्यदे ख्रम् व्यम् विन नेते हैं से सुन नवद विसे त्यम निन तुर:नवे:अ:के अ:र्नेर:नवव:वनुअ:र्से:विन:तु:नवे अ:य:व:वि्ट:रु:र्गर:र्से। नेते श्रमायनुसारे प्राथमा । नेते श्रमाधराहे मार्चमाम्यमा ने या नरम देवे हे में में मानवार विष्युयाय श्रयाय वुदानय श्रुवाय या या ने नरःश्रृःध्ययः दुः र्हे तः हे रदः मी मिडे तः तस्य स्यायः देशः सद्य रदः देः श्रुः श्रूर्यः म्याम्यक्षात्तर्वात्रम्यक्षात्तर्वात्तर्वा विष्यक्षात्रम्यक्ष्यः विषयक्षात्तर्वात्रम्यः विषयः व

ब्रिट्रिं से द्यार में श्रास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र स्थित स्या स्थित स्थि म्हान्त्राम्याध्याः विवायः क्षेत्रमा न्ह्यः न्यामः श्रीः नृहः विवः नृहः विवः न्गरःश्चीः स्वारे श्वा देन प्यत्र श्ची अर्क्षेत्र यह या अष्य व्यास्त्र व्या अन्यनान्द्रक् कुन्यासुन्यना इयया विया से वितासे कि इसरार्चेराने पायुवावरा मुवा भ्रवराने राश्चरावर्ष मीरा श्वरायुवावर् विट्रपदेर्द्रमी अर्देश्चिमाया । श्चर्याची मार्थित्र वर्ष्ट्रम्य विश्वर वर्ष्ट्रम्य वरम्य व नर्डेट्र में मर्नेट मुर्ग्दिये व्याप्त के मिन्न नर्गोत्र हिंगान्ता सर हें सामी भून साथ त्या सहें ता सहें ता स्वा स्वास कुंत्यासुगान्य। देगायानसुन्। हिन्द्यमायात्वुन्। नवे सूर्यायानम् नमासरक्षियासहेम। नुमाने स्वयासिय वसा श्रुवा परि क्षुन कुन् श्रुवा रवःप्रथा यदःस्र्रिः दुशःग्रीः देश्यावा । देवाशःग्रीः श्रुशः दुः विष्ट्रसः प्रयः वर्गुम्। । वेर नवे श्व ग्रुट न न न । अट व्रें अ ग्रे अ श्व न र ज ज । इर विं व वशम्बिसमा विःस्ट्रसाधीः नग्रस्त्रम् स्राप्तः वृष्यः वशा सकेनः वर्षः नकुर्भःरनशःमाशुयःरुःर्षेत्। । माठेमामीशः सः स्रेरे नकुर्भः यहेता ।

श्रेश्रश्राच्याम् । याद्याम् । याद्याम् । याद्याम् । याद्याम् याद्याम् याद्याम् । याद्याम्याम् । याद्याम् । याद्याम्याम् । याद्याम् । याद्याम् । याद्याम् । याद्याम् । याद्याम् । या वशुम्। विन्।वस्रयःगुवःश्चेः हे होन् केन। विविधाःवीयःन्यवः विवेशःनेवयः शुःलॅटा विशामश्रदा देवशः ह्यान्यत्वः ह्याशः तुश्वशः श्रद्धाः हीर-र-नन्गानी स्थाय यायाय विया सुर्ये त्या मुस्या राया स्था स्था विद्या परःश्चरः नद्धरः ग्रीशः स्ररः ग्री स्र श्रारः भ्रीत्। स्र स्याप्य स्र ग्री स्र ग्रीः मर्केन् हेन् देन् से के शह्य अपाया निर्देश मूर्य से निर्देश स्त्र से निर्देश स्त्र से निर्देश से नि नरःगशुस्रायः रेसानिव सुराय। युरे नु नु रेसि मुन्नि गरा विवा पर नु नु र नःश्चेश अटःश्चर्यायहित्यायाः स्ट्रेन्देते हेनः हिनः है। नायया श्चें या छी वटः रु श्रश्यानविनाविशा सरार्धेसामी श्रश्याधीत्रावाधीत्र विन्ता स्थान स्यान स्थान स्य मदे स्वर्भा मित्रा भ्राम्य स्वर्भा स्वर्भा स्वर्भा स्वर्भा स्वर्भ स्वय्य स्वर्भ स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वय्य स्वयः स्वर्य स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः कुं अळ्व इस्रमान्त्र निया ने समाध्या प्रमा (४००) महिमाग्री मासू रेदे हेर धेव पाव । हित पायदे इर स्ट्रिं रहत है पाई पाव का सम् नगरसंखेंन्यविवात्यवाधुत्ववुवावीश्वारस्य सुन् शेरवीश्वर्वे नश्रुव। में ५ ग्री मार्ने मार्थ नगान। माठव मात्रव दे ५ मार्थ ग्री अ भू र न वेता वहवर्ळें वर्गीरम्यन्यन्त्रायाचेषायायया व्यवन्त्रीयाने। क्रम्यार्थे क्रम्यार्थे त्वराम्याया स्वरम्या म्यार्थम्य क्रम्या स्वरम्य स्वरम्य स्वरम्य स्वरम्य स्वरम्य स्वरम्

चक्रुन् छे अ अट ने 'त्र अ क्रम्या विष्य क्ष्या । विषय क्षिया क्ष्या क्ष्या क्ष्या । विषय क्ष्या विषय क्ष्या विषय क्ष्या । विषय क्ष्या विषय क्ष्या । विषय क्ष्या विषय क्ष्या विषय क्ष्या ।

नेविन्हें अंखूर नवति हैं त्या श्रश्ना निविन्हें अंखूं नारें नवदाक्षान्वसामी स्राम्हिट ही देवे स्राम के के देवे स्रामहिटा गडेव सेंदि क्षेट र् केंद्र क्षेट न क्षेट न क्षेट न का की देवे य्याक्ष्रित्त्वो | देवे य्याक्ष्रित्वे देवे य्यायमाळ्टा देवे य्याक्ष्रास् नेते श्रमायुगायहेन हिंदार्विता नेते श्रमायहन या वन्न नेति। श्रमाश्रम् वित्रास्त्रीय। देवे श्रमायर में के र्से वि देवे श्रमाश्रम में वि निवेदमा गिर्भुर्म् निवेद्या वित्रुत्ति वित्र मिर्म वित्र मिर्म वित्र मिर्म वित्र मिर्म वित्र मिर्म वित्र मिर्म सर्केन्द्रशानुषा गुनार्केनासेनानो स्नाम्बसासुमान्वान्यान्यान्याने स्र-पवद्भः स्रात्यस्य विष्याति विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विषयः विषय विट श्रमायदे स्थेत श्रुम श्रीमा विष्य स्थित । विद्या स्थित स्थित स्थित स्थित । योचेयाराशुःर्वेयारायाशुर। यदेःदरायचुरःस्रेःक्वरराञ्चयाचेयाराशुःग्रायाराः या वर्देदे श्रश्राक्षा श्रे श्रद्धा वर्द्धा वर्षे वर्षे प्रमुद्दा वर्षे श्रित्र वर्षे वर्य र् र्चेत्रपर्रा (४१६)श्रेत्रप्रियत्वर्षाध्य र्चेत्रप्रेत्वे के प्रित्याची ख्र विषान्विन्न्यान्त्रा नो सर्जी समित्यान् । ये स्वर्मे

यदे भ्री अदे कें। य र्वेट म् न स्वत्य प्राप्त किया के वर्ष भ्रमें मार्थ विस्पार्टिक क्रेव्स् निवित्वित्वर्भावार्श्यायाङ्गात्र्युवार्वे सम्बद्धायाः सम्बद्धायाः कवाश र्रेन नर्ये के वर्षे मह्म श्रामा व्याप्त के वर्ष वर्षे वर्षे । वर्षे नु: हिन्दु: द्रयम् अ: य: देन्। । ने ने नः प्ये: श्रुम् अ: ग्री: श्रुम् । विश्वः मश्रुम् अ: निरा ग्रुरःकुनःवर्देःवर्षियःहेर्ग्गेःगश्चरःरुःषरा रवश्येःस्वश्यन्तः गशुसःत्। विद्रावस्थाः भेर्त्या ग्रीः वद्याः संस्ट्रा विसास्य वस्त्राः । वह्यान् ग्रम् वास्त्राम् वास्ति विस्ति विस्त समयन्त्रामी सेगान्त्रम् नवे श्रुन् पुष्यन् सुम् नाने सुम् पीत्रामा वर्षेते हें से भूय थ्व साय स्थान्य प्राची से पा विवास में पा से पा स वाशुस्रायम्। वर्षेटार्से वाष्ठ्र विवासि हिसामी श्रमावष्ठ्र से कार्से वाहि। देवे श्रभः क्षरभः श्रृवः चुः वुःववाः या देवेः श्रभः षः भेरा देवेः श्रभः षः भेरा देवेः श्रमःश्रुनमः नर्तु न्रमणः न्रम् न वर्षतः न्रम् न्याः वेषः मधेः के नः पेत्रः केत्कुयानः भ्रुन्याधेत्या ने प्यम् क्रम्या भ्रून् भ्रिन् भ्रिन् भ्रिन् भ्रम् यर्गे रुया से दाने कु नर्डे या हे पर्वेद की साइवा में सूद निव निव विदा श्रभागी पर्ने ता पुषा न न न न न न स्था मा श्री न शा प्रे न भा मे ता शा के ता शा शा के ता शा लिए ता शा सर्वित्यम् सर्वे न निव हु सर विरा न्यायि ख़ु के या ग्रे क्षेत्र व्या ग्रू हुन

यद्देः त्वें त्यादे त्याद्दे त्यादे त्या

चीत्राक्ष्याक्षात्रक्षे । श्रीयात्रच्याक्ष्यात्रक्षे । यात्रक्ष्यात्रक्षे । विषयः वीत्रक्षे । विषयः व

ने प्यर पिंदा केदा कुया ना भुन्या ता हैं सिंपा नवदान्ता ने गु मा वर्चे नवता भेगा सक्ती प्राम्य मा प्रमान मा प्रमान मा वर्षे निवास में मा वर्षे में म र्रे के द्रित्र सरमा मुर्ग न भुनमा द्रित् ने मार्य मुणा गहिमा परि स्था न्वें न्यमें न्यों मुया यहं न्या शुरा प्रवेश्य श्राम्य प्रवेशे न्य गहेशपानिम्कुनपानेत्रहेत्देह्द्रिस्यशप्यश(थ्यत)हे सुन्स्नेत् र्भे के दे 'प्यन' से सन्दर्भ माद्र न कुन् 'ग्री के सामि सम्दर्भ कुन्य नदे ' गश्राम्याकु अर्के भ्रानु त्या वेशान्य साम्या सुन में शामित्रा ग्री नमून परे निष्य में राष्ट्रिया निरक्तियारी वे स्तुर पी रास्त्रीय स्तुर स्तुर स्तुर स्तुर स्तुर स्तुर स्तुर यटाहुःवर्षुवानीशावन्वानरःसहन्। वानानेशनःह्या नगवदिव के। दे हे शक्त्यान देव में के रमा मुन्द राये अळव माना भारा नर्हेन'वर्ग्युअ'हे। न्तुअ'र्यु'येनअ'न्य'हे'र्स्चुन'र्य्य'रेन'र्ये'केश'त्रीन'र्युअ' शुःगितुस्रसःम्सः कुषःस्रसः विषः द्वाराः विषः वुसः स्रुदः स्रुदः राके। गन्व सर येन सन्स सेट चु श्चेट है र है प है जुय से इसस ग्रीस इसर्वेशःग्रेःतुःवःवय्वरायरःतुरायदेशमिःत्गृदेःषे गुत्रःवस्याग्रीरासेः

विन'स'स्य'विर। विन'सर'र्सेना'सें सन्'दर्गेय'नु'ग्राग्रां संदे र्हेर्न्, र्शेग्राश्चर्तरस्र्वेरिनेग्राश्चित्रसर्केन्ह्रश्चर्तन्ध्वयानुन्त्रस्राहेवान्त्रस् नरःग्राम्यायायायायदिवेदिन्या ग्रुट्या श्रुव्यः सेवर्ये के व्यवस्ति । सदिःवहवःसःसँग्रस्येन्यद्वान्ववदः। वदेःहेदःग्रेःदुसःस्वःवःस्विन्यः राक्रयशर्मेदायदेख्दामी वहवायाद्वात्यस्य स्वायक्षिया वर्षेत्र मुक् न्स्य-चेश्नयराख्यायानरायच्याचरायाचिरायया नेस्य-म्राह्मानया म्राप्तिते ते प्रमाने प्रमाने के प्रमाने के कार्य के प्रमानि के प्रमानिक के प्रमिक के प्रमानिक के प्रमानिक के प्रमानिक के प्रमानिक के प्रमानिक क र्रोत्रिन् नर्भेश में रायरायत्याश्रुयार्चेत्र में (४१०) ब्रा स्रा हिंदा वर्षाच्यापा ब्रेखार्यूटा ब्रास्त्रा माया बटार्स के सिटा ब्रास्त्र यविश्वाय विविध्यापराचयाःविश्वायिता क्रियायता स्वायाः हे वी हि। सर्केन्द्रेन्त्रेन्। कन्न्यार्तेयाविरायाः वर्ष्याद्रेराव्या सम्यः वर निवाहासर्वेति प्रस्तिस्याया सर्वे वार्षे सावित्रा श्रेमाया स्मिन इयानाशुयार्ग्वेत। नर्द्वनर्द्धनायायार्देरानयासुनायानादेयावद्यान्यानु ग्रीश्रास्त्र न्या व्याप्त म्या मान्य स्वर्थ के निव स्वर्थ मान्य निवर अवयः न्याः यो अः न्ये दः श्री अः या वे या अः अरः नयाः अन्यः श्रीः श्रे नः यो न्ये नः से व्यःभूत्। केंयः हे नर्येत् ग्राम्यायाया न व्यामियः नेव से किये त्यामितः सदि'वहव'स'तुर'न'दर'। केंस'नवि'सदे'त्स'न्सॅन'ई'हे'नेव'हेव'ग्रीस'

विद्यान्त्र्यम् । विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान

वर्त्ती अर्गे व से व र्रे के वे श्रुवा या न दु गिहे अ से व र्रे के हैं हे वे ख़र हैंग्राशःग्रीः वेत्रात्रत्रात्रवायायाः भीता गत्रास्य स्वरास्य स्यास स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास्य स्वरास् बि'न'न्र्यस्व'यर'अधिव'य'व्यायायायेन्'य'र्यायायायायाय्ये उव अर विरा विदेश रू अ वि दर्भव हैं हे द्रमण में र अ व अ विर में गड़र गर्विव तु कुय अळव हि दर्भव की में अर नर्भे अ ग्रम् अर्थे पा क्षु ग व्य खुरायार्नेरार्वेश म्हारायार्नेरायुर्यार्वेता सळ्दासेट्रायी रेदासुर्येद विटार्चे नह्रा हेवा छेटा ग्री नर हवा ना सेवासा नवा सेटा ग्री श्री ट्राया विस्त्रा (४३४)रुअप्टन्द्रन्य समार्थे मुर्पदे से स्वायाय भीव हु मार्वे र पार्चे र पार्चे र र्विट विद्य अर्धे विषा विद्य के अविद में में दिन के वार्षिट अर विद्य के वहवः शः तुर्शा दे : हे शः धरः वर्षे गः यः ग्रुटः गर्वे वः विः द्वें वः दः वर्षे शः वदरः र्थेव अदे अवा से अ की अ नवा अदि की से दिन प्रति वित्र निवर निवर सर्वेदिः मुख्यानः स्रमः देवः हेदः लेया स्वा स्वायायः प्रेया स्वायायः

रेव केवा रेव हेव भुन्य प्राप्त वापाय प्राप्त से या भुर वर्गे अर्गे व वस्या अ परे दुर दु वर्जे व दु अ अर्रे सूर परे कें र र अ ग्री स्वाप्तरे विवास रे त्या व स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप NT:प्रविपार्श्वाप्त्र प्रमें प्रविप्ति । श्रेष्ट्र प्राप्ति । श्रिष्ट्र प्रविप्ति । श्रिष्ट्र प्रविष्ट्र । श्र ग्री:हेश:शु:वार्वेद:व्:पॅद:हद:ग्रीश:वि:दर्यद:वें:वुवा:ग्रुश:दवदः। कट:दवा: र्वि'त'र्देत'र्र्'गहेर'नश्चेदे'वहेत द्वंगश्चाश्चा गुड्रा गुड्रा गुड्रा गुर्वाश्चाश्चारेत डेव र्चेश नश्र श्रें सारा सबर द्वेव विट गान्व सर नत्या शर्मे गारि रे ग्राम्याद्भित्र म्या क्रियास्य के स्थान क्रियाम्य क्रियाम क्रियाम्य क्रियाम्य क्रियाम्य क्रियाम्य क्रियाम् वि'न्येंद्र' बुर्-नु'या नर्भे या नर व्यान्येंद्र व्याच्या या द्र्या स्था वित्या बरा ब्रैंव अविस् अवर्षेत्र है कुरा इस्ते बरा केरवाशुमा वाधु श्रीरा र्सेन्यायम् स्वायायार्वेन् क्रियार्वेन् नुन्नेन्न । नुन्नेन् क्रेन्योग्याया न्यया श्रून-न्यवाकारामा न्यवाक्षेत्राक्षा श्रुम्न-श्रीम्राक्ष्याक्षेत्रः नः इस्र अः श्रुवाः ह्र अः ग्री अः नश्चुः नरः सहं ५ ः प्रश्चाः विष्वः विः नर्भे रः यः नगदः देव·विवः तुः के विदा देवे देव मुक्ता अः भे : तुः देव से किये प्रमाय के अअः शु श्चेतु गर्ने द गी वन सर्वे त्रहेत मदे ग्विस गा से द उत दि हसस । वि (४२१) नरमिने वार्यास्य स्वाह्य में स्वाह्य में स्वाह्य में स्वाह्य में स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य डिट्। भु:देव के नवे देव ग्री अप्याकृति श्वी अप्याकृत अर्के द्वा स्टारे वट रे न्दः नवदः यः श्रे : स्ट्रान्य रुषः न्याः मास्त्रः नित्रः ने । धितः विषः मास्त्रः।

यिष्ठेश्वाया प्राप्ति श्रुशः कुषाः श्राक्षंत्र प्राप्ता वार्याश्वासः कुषाः मु: चुरः कुनः कुषः अळद्य वाष्य्रायः नेयः स्वा वर्षे दः द्रययः व वरः देः हेः ध्यार्था परिवारादे सुरमके द्वारायमा ग्राम्य साम्वारा सक्त में साम्यस क्षेत्रामायरातुः सहत्रिता हितामरासमेति सेविः नगवाननसा हुराविरा गन्वरभः धुवरेन्द्रः अह्न विदेश्त्रः स्वानिष्ठ । मॅरि:अदे:हुट:रु:धेव:हे:ख्ट:र्ट:वना:ह्नाय:श्वेव:दय:द्वि:र्ट्यव:ह्या वयर। नगाः धर्माः ग्रीः द्वरः दुः र्से दः वयः ख्वायः ग्रियः ग्रीः यहे वः नर्गे दः कर्मा मुद्दा देवे हे या शु मुत्या सकत सुनया भी या वि दर्भ त भी भी <u> अर्चर्य्यूर्यात्र्र्य्या कुर्च्य्यागुर्याच्यायात्र्याच</u> र्वे अर मेन अर प्येत त्या वरे हे द हे । बर प्येता यथा पर सुर अ बया वयान्याञ्चेत्रपञ्चेत्रकृतात्वृत्। । नगानीयायाः र्त्तेगान्त्रयायायायाः द्रेरः व । पद्रवः ह्रेरः वक्कः प्रः इतक्ष्यः विष्यः विष्यः पद्रेरः । विष्यः पद्रेरः

नसूत्रचेंगारु नन्यायासू। यहेगाहेत् वस्या उत् ग्री होत् से प्राया उव्यक्तिशामव्यामानासेन्यिते ह्या देवार्गि हे स्वान्त्वा हेवार्गि ह न उत् श्री मिर्दर स्वे द्वर से वे मार (४८) क्रुर र वर्ष ने र प्रमः ब्रैंग्रयायाये विक्तिर्देश्य स्थित्र विक्राम्य स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स हैंग्रथं सदे संस्थान वार से दे सूर से ग्रथं संदर्भ से ग्रथं से स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान श्चित्रक्ष्यायार्सेत्र्यायदेः इत्यायवदान्याय्ये द्रायदेः नेयास्य शुःशुःशे ह्रितः र्रे र्रा चुत्र नु त्रिर प्यार रे क न्दा विया मृत्र रे म्या प्यार प्राप्त रे र्श्वे न ख्याची पह्या तु खु रेवि ग्रो में मची कुत नवर रेवा सहे या सर शुन प्रश्नुं मु अवयप्रवापी रयाप्रदे हैं प्रवाची हे से र विचित्र वा भें प्रश् र्वेन'सदे'श्रूय'न'सर्केन'में'येग्य'नुय'ग्रे'व्याय'स'रेट'स्'र्युट्युं'सुट्'ग्रे' मुलावस्य सु विस्य भी विषा ५८ में र परे नया परे या से र परे से वि रेशाग्री कुयार्से पृति शे पु ग्रुट कुन कुया अळव प् न्वो ग्रेट् हेशाया कु से स्वानी वें वास्त्रान्यस्यया न्त्रान वें वास्त्राया विकास विकास नि इ्या त्यः के शः श्रुटः इः रेया यारेटः उदः श्रेः हे शःयादटः याश्वदः धशः श्रेवः हः वर्षेः क्रिंयायासर्वे या सक्त्राचितास्त्र मुखायास्त्र निर्मायास्त्र मिन केव रुष यन्य निष्ठ क्षेत्र निष्ठ रुष यह स्थाय या स्व कु नुहा वहे सर्वेद

ग्री निश्चेत्र पा सहर प्रमान्दिम ग्रुन ग्री सक्त साह्य प्रमान स्वापित न्गुर्ले नडु निवे लेंब्र पिते व्यापा ह्या निवे के या नडु नन्द्र त्या या सुर शुर्यात्विष्यात्रायि विष्याति मान्यात्राया । स्वार्यात्रायाः स्वर्यात्रायाः स्वर्यात्रायायाः स्वर्यात्रायाः स्वर्यात्रायाः स्वर्यात्रायात्रायात्रायात्रायाः स्वर् भेर्गी:र्श्वेर्पानेर्पानस्ययायया नर्गाकेर्पेर्वेर्पेकेरावर्या कुवेन्हायाकेनसाहे सानवृग्यासरार्त्ते वाससाम्वता क्रास्या ग्राहा (४८न) धुःषःर्षेदःद्र्वेश्वः शुद्दःविदः। भ्रवशःयम्द्रःगुदःमे द्वेश्वः वशःशःम्रश्यः नःश्रॅम्रास्त्रः तुर्नित्रदेशत्वास्य । विश्वादके नः विमायश्य विद्याप्य श्रेतः नक्ष्मन्यायायात्र्यास्य विदा विदादगारानसाक्षीत्रयायात्रविदारा ग्रुसायरादेसा ग्रीशः र्श्वितः हे न द्वः दुः न श्रूवः वशः दवे वर्षो । प्रमाः श्विदः त्वस्य शः व्याप्य दि । देविसः र्शेनाश्राम्भी त्रास्रास्र त्रशानाशुरास्रसार्थे मुँताराश्रापदिनाश्राप्ते पार्वे राये त्राप्ति । नर्हेर्यार्थयः व्या वावः संस्थरः भ्रुरः वेरिः वीः क्रुयः वेरावरः कर्नः वहसायः क्षेत्रान्त्वरासहर्परायाः स्वाया देवरानेयाः श्रीयायाः भ्रीयायाः न्सॅब केव देंन बेर सेट वो या वव उत्त हा हा या वया वव विवासे केर यग्। गुवे द्र्ये द्र्ये दर्भे द्र्ये प्रति हे स्यापि हर स्यापि स् इरायिं रायशाळवावेगा वुशायर्गा या सुरार्श्रामहेराया न क्रें शायश्र नन्ना के दारा श्रुवाया वा हुयाराया वार्येया वा वे यथा वा वे सार्या वे सार्या

नगवन्तर्रीत्रव्यवावयवार्षेत्रन्तिवावर्षा द्वीत्राच्या द्वीत्राच्या निवन्यमाळ्न्याच्याच्या भ्रूयायित्रित्रित्र्वेमायाळ्येनातु येनराः भूनराः वनराः धेरः सळ्दः हेर् ग्रीः व्लायः द्यार्पाः न्या स्वाराः ग्रे न्नु अ गुरु द्वर र्श्व व र देवे प्रति । व देव र के र व देव र व दे केव द्रवर धुवा द्रया अर धे द्रवेव से व च दे खुर वदे द्रवेव से अवा स्टर्नें वर्षे क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं वर्षे यानम् नन्नाः केन्द्रमेन्द्रमेन्द्रमेन्द्रमेन्द्रमेन्द्रम् नन्नाः केन्द्रमेन्द्रम् यः श्रॅवःवः श्रॅटःवया येदः यथा केवयः वर्देग्यः हे कुटः रेटः श्रॅरः हिरः वया मुयाळ देव द्वर्यो शाहावशावयश हे देवाशा मुशायर्वा था (थ (व) यरमुर्याप्ये वेत पेत पर्या केरा नगय के समास्य राहे में प्राप्य स्ट्रियामादिवः देवाधेवानास्या यास्रुमायेवायास्या कर वी द्वाय क्रेंब हो द्वारा इट विट क्र के कि वट खेंद्र वर्षा केत्रप्रते भ्रु नार्वे ग्रथात्र यादर्भे दायात्र न सूद्र सर नात्र द तुर नाया र्ह्येत मर्था गर्सेल रस्य गर्भर ग्री हेन इदि न र र ग्री न र छे स से र पर स्था हेत्रप्रश्व तुरः केवा प्रदे प्रशेष प्रदे प्रमादः सुवा व्यव्य वी सः दि रिप्तः सर्वियाचीत्रः भ्रेन्याया स्वाप्तः या स्वापतः या स्

देवे कु सक्त मी अन्तर्गाय के सम्भाष्य व्याप्त वा के ताम वे प्तर प्राप्त प्राप्त विश्व विश् वुग्रायायान्ये सेन् प्रम्यायायाने प्रति प्रस्ति प्रस्ति स्राया सेन् सं सिन् प्रायने <u>सिंद्रिय पर पर्वाचित्र स्था प्रदे प्रवास्त्र प्रदार से स्वाची सिंद्र स्वाची सिंद्र स्वाची सिंद्र स</u>्वाची स्वाची स रार्धित्याश्रुत्। क्रूॅब्रळॅशर्चेयाः सुः साम्रुस् सेत्रते दुत्त्त् यहेशः ग्री पायव क्रें ट सह द भ्रवया क्रें व द देव व सक्तें द द स त करा पर के वा हैं न्रिंग् मान्य त्रुः समाम्य प्रमा हिन्दे त्रुन्मी सायन्य प्रमे हो ने प्यम यगःगुःन्धेनःस् श्रेनःमश्रम् रायदेःग्नर्यः ने धेन्यश्रम् । ने व्यामः विवे वि वा या या रेव छेव अर पुर पुर विव छेव सेव छेव यो र वो वे इर-व्रिंदाययात्रवुयाययात्रसूर-देःग्रागायान्दा वहन्त्रः ह्वानाग्रायान्वेः भूर्यत्वियाया देवयाद्वयास्य वर्षेत्र विराधरायद्या केवादेव सेवार्षे केवे दुराद् द्यगायनुषाया र्वेत्रायम्। त्रायायायमान द्वारा न्या से पुर्वा है या द्वारा ब्रेयात्र साम्यान दुवायया से हारावे सर्वे नाहेर (४५०) ५८१ से हुया याम्यान इत्रापित विनया हिंगा हु विशुरान हो दार्गिया परि गासुरावत हो। नः व्या ने वयान्त्या शुः व्या है नि से से मान्या मान्या स्वा सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा सर्वा स र्वेर-तुःमाशुश्रायः द्राय्यस्य विः द्र्येव चीः वश्राया मान्यदः। विः वेरः ह्याया चि मदेव्या अव्या अव्य गिरेशःग्रे ग्रेन्या अशु न्यव विट हिन्य स्प्रिंट स्ट मी शायशागा येव सर वॅरि: अदे: वार्शेर: विषाः प्रवः वार्श्वसः सर्वेरः निषः निषः निषः क्षेत्रः सः क्षेत्रः वर्सेना वर्रे न प्रवे के न न त्र न स्व मिन हो न से प्रवेश के न र्वेत्रप्रदेश्वर्याम् स्थे हिन्देव छेत् याग्या न्यय थ्व हिन्देव हुन न्सॅब्रक्की:न्याविध्ययःर:न्रावरुषायक्कें रावन्त्रायदेःन्यास्यान्त्रा गिनेर नुषा कुष सळं र भुन्य व्यायया गायय या हि र्से हा न न गुरि रे क्रेशन्त्रीदे हेर नगद र्वेग न इ. इ. इसरा न स्वारा न इ. न वे त वे त से द गर्नेट:हेश:ह्यरथा गर्वेव:वु:वेंट्रमाहेर:धर:नक्क्रींश:ग्रट:धे:वट:गी:वेव: क्यायाक्ष्यान्दायम् सुवायाया सुदायान्त्रे माने वायायाया विवायि । उ.र.भ.भह्ना वर्येग.ज्.ल.स.धे.ज.ल.भे.भेर्या त्रीय. त्रीय. त्रीय. नब्नम्। हेरामडेमाअर्जायमा सेर्ज्जरम्मिन्यस्त्रेस्राम् नेर मैंनात्यानन्छेनात्ननुनाराने नक्ष्रम्यम्। विन्दर्भन् क्रिंत्वेन न्वें यायाधित्र वर्दे त्यास्रास्त्रा नासुस्रान्वता दावीया स्रा हत्यासूर् प्यरसे प्रेंट नापीता हर्मन त्याप्त द्वार ने प्रत्य ने प्रत्य ने प्रत्य ने प्रत्य नि प्र

र्शेनार्श्वादेनाहेत्यी केंश्वादनेनियायदे नसून चुक्के स्नु स्थायह न वश्रुवार्वे शे हुवे रना हु जुदानवे सम्बन्धे ख्वाद्र रावे दिव (१४४) र्रे तर्रे ट कु शरा है र पार्वे व तु प बद र्रे पारे र र प के सा दे हे श पार्वे श गाः इस्रशः ग्रीः गर्रे : ख्रदः द्वा ध्रुवः ग्रुः र्रे रः क्रे : विदः वह ग्रायः । ग्रायः कु'या बस सें के पहुंचा राया से दु जार्ने महेंदे में ब्रम् कु न से न हैं न से सम् नवरामान्दामासकुःसदानु मुदाने माययानवदामायदे के सार्चिमासा वश्यमामुदेः श्रूनः न सुन्दा वहिमा हेव वश्यः सुन्य सुन्य मिन्न श्रायदे केत्रवेगामदेख्यायाद्यी अस्तिन्यायात्री । अस्तिन्यायात्री । अस्तिन्या श्चित्रप्रेरम्ह्याल्यायायहेत्। वियापरेरम्भेराण्ययावारायया श्रॅं गुःरादे स्ट्रेट रुपा गीय रहें र प्यो नय यन प्याप गुरा किया रा मुनःस्वाशःशुःर्येन्यःन्दा न्येवःकेवः इस्रशःग्रामः यकः प्यानः गणयः सगान्तरः बरः रु:गणुवायिष्यायिष्यास्यायाः स्वान्याः स्वान्त्रे। क्रेंत्रः यावितः देर्गीरावर्गे विराधियावेरानव्यान्यस्य स्थानस्य से प्रिट्रासहस्य र गर्विद तु न वर में अ पर्यो गुरु से न के मू र स स म दिवा स पर के र में स

च्रशास्त्रास्याः व्यानेदारा के नार्ष्या वृद्गायाः। दर्वतागुदार्द्दरा क्रीयाः गुरुष्यर्गनहेत्रवाधवान वार्षः मुख्य देव्यक्षः सेर्म्यर्ग्ने विक्रकेत्रप्तरः इस्राधरः भ्रमासर्वी महिंदाद्वी सामने कंत्रहुत है । यदा सुमा स्वा नदुःन्तुः इंसःग्रीः देटःगुटः घटःनुः (७७न) नर्डें दःयः यह् गःयः सँग्रायः ग्रुसः ग्राम् विकार्यात्र्वारासर्वे न्यूर्यायम् । ग्रिनदे कातार्द्धे द्वारी । ब्रियाःकवाशः में वास्त्रियाः सेवासे दः ग्राह्म । सेवाः स्वरं वाववः यशः स्वाः यरः सम्वीं वाशा वेशमाधूरमाध्वर्रम्याद्वर्ष्ट्रम्याद्वराष्ट्रम्याद्वराष्ट्रम्याद्वराष्ट्रम्याद्वराष्ट्रम्याद्वर्ष्ट्रम्याद्वर् त्रुग्रायाः हेन्यः धेन्या नेव्याः सेन्यः साम्याः स्वायाः साम्याः रेशाधिवाची वहवायाचे द्वारा निया विदास्त्राचा स्थान विदास्त्राची स्थान विदास स्थान स्थान विदास वेद्रायाष्ट्रवाराह्या यदवर्षेयाविष्ट्रवयायरासुद्रयासुर्योक्षेरकेवाकुवारिवे वहदारायी है न इ. दु र्री वाराधिवा देश हमरा न सूद प्रश्र शे . तु प्रमुख न-न-विश्वा न्यायाः निष्यः सम् । निष्यः सक्ते । निष् वयर। याययः व बरः रहेयः यतुष्ठः रेत्रिश क्षे वाद्यः श्रीः न्यवाः इष्यः नश्चराने द्वार्य कुर्र् र्यार्थ कुर्

न्वारायमें ग्रुरासे हैं शुर्सा नर्मन्यूमा वाषय न वर्म स्त्रायन्य संदेश वर-रु-पार्विव-वु-पन्नर-सें-द्रिव-पार्धिया-यी-क्षेट-रु-पग्नाय-प्यम्। श्री-रु-द्रिव-वार्षिवा वी रादवाव राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्रे राष्ट्र प्रवा व राष्ट्र रा र्रेश गणदान वर द्वेति सन्दरमित्रामा द्वारा मुस्य संस्था दे द्वारा भूरः त्रायागुराञ्चरकायाद्या दर्वत्रकेत् क्रियाव वरायागित्र राधिका की पृ गर्भेत्। श्रेतुःगर्नेटःहेशःयेवःयदेःग्रेशःदवःयन्यश्यःयःदेशःग्रीशःयकेटः वयर। इरव्यायायाद्वेयाववेयावयाद्वेदा विद्यायरश्ची पुर्यायाव्या हेन् केन् में न बर में न्यया मंदे नुर प्रिंम धेन मंदे सून या गुर्या न में न केवायान्यान्यरासर्केर्याचेन्याये हैयापेन्स्राम्या न्येवाकेवाक्त्राया सरमाययसमामिक्रियमिन्रेयमिन्र होत् हुदे हेव। से हिमसमिन्र नवर में अपने अपने क्षेत्र में इसमा सर देर प्राण्य नवर समि बि'न्सॅव'ग्री'सन्व'न्'ग्विपामिलेर'ग्रेन्'कु'धेव'मश्रा स'नेश'संदे'न्सॅव' केव भी भेर न बुर न न विव भूर व रेर भी भ्रम्भ मार प्रमान क्रिय हो र भी । वर्गाचेर वर्ष्ट्र ग्या क्षेत्र मर्देर सम्बार् र सेवार ग्री नक्ष्य केंद्र क्रा स यहर्। यर द्वित केंद्र श्रीय से हुन बुर श्रूर वेया हे से या न से न्या या या धीयो येत कु अ तुरा ने तया नर्रेत केत तीया के तु यार्ने र न में र यापर

चुर्यायर ह्वेंत्र र्ये ह्यया ग्रीयावय रें यया थे श्रीत्रावय के हेर त्याया गहरा देवशद्येव केव ग्रीश शे हु त्य में नि न मु दर शुय दु इ थ दय नक्ता वृःसः अञ्चन्विचान्तुः वः नङ्ग्रीदः सः श्रीवाशः नर्सेदः कशः ग्रीः इसः पश्याप्यम् विष्ठाः भ्री विष्ठाः प्रमान्त्र । प्रमान्त्र विष्ठाः विष्ठाः विष्ठाः । प्रमान्त्र । यर्हिन्यन्द्रायदेन्द्रया ग्रम् केवार्ये से विया गुन्यु राग्रम्। । ने या याद्रम नःश्चे शे 'द्र्ये श । त्रु नः रे 'बेया'या त्र शं ते त्या । दे 'स प्रया 'हु र् या प्र वर्गुम् विराधान्त्रम् स्वाक्तिं स्टिन्, व्याक्तिं विरामित्र विरामित्र विरामित्र विरामित्र विरामित्र विरामित्र त्त्रुपाठेगा'नल्ग्रभ'ने'त्रश'र्ने'र्नेट'नुपट'त्यना'गो'र्चेग'न्देव'ळेत'न्नट' नर्हेन्यह्यभाद्राचिष्ठभासर्हिः श्चेत्रपुत्रेन्यभाषाद्रा द्रीत्रकेन्कुया नवर ने अर शे रहाया द्वारा अपाया व्याप्त र शे रहा द्वारा शे दि । गर्देट.री.गर्ब्र वी.च वटार्स्स प्रत्मे विसार्ध्य में सम्माना मके पर्दे हैं। वसन्धेव केव नगर गर्डे व श्री संबि नसमा इससा नश्रू साहे दें ना खर सर (२२१) हुरन्दर्। शे.हुश्यार्ट्ट्रह्मश्रश्यी प्रदेव कर्दर्द्र सुरायी नशुर्शेग्राश्रासद्दानुदानी'त्यापर'विसारी'श्रानद्वत्द्वाद्वित्वाणीया'नकुः क्र्रीर अर्च नर तुर नदे निष्य क्षुत्र रा क्षुत्र अर निर्वित तु न वर में अर अपा यः श्लेय। नेरः हत्रसम्भाश्लयम् नर्याः नर्याः स्थितः स्थाः स् न्ययः र्वे न्यया या क्रमा या सूया यूना स्वरं सकेंद्र या यो ने से गुरं यो से ग्वेदे वरमी व्याप्तार नमा क्ष्मार्थिया माध्य क्ष्य नमा क्ष्म नम्भू र दूर क्षित्र हैशन्दरन्त्रस्त्रत्रस्त्रराह्मस्रयायश्चिस्या न्येत्रकेत्नीयाहिन्सना भु पदे द्रुया वर्ष्ट वी द्वि द्यवा सम् द्रुवा समा गु पदे हुया द्वा धरकुषानदेः रुष्टें द्रार्थे दर्शे दर्शे दर्शे दर्शे दर्श द्रशा स्था द्रशा द्रश नठशःस् न्तरः केत्रः से तुः मिर्दरः केरः यगः हगशः शुः नशुरः नशः गुतः ग्रथः क्षेत्राः से त्रुदः नी कुयः अळव ची में याची व राष्ट्रसः इसः सर न्याः नवेः न्रःशुःभूनःभूनःन्रःश्वाराःभूवःहःहतेःभुःकेवःरीयावयःयापितेःर्वेरःगुः षरःभूगावशःभ्रीरःनवे नर्भूरःनवे वे वे वा श्रीशः कु नरः ग्रुशः श्री।

स्रान्ध्र केत्र क्रियान वारान्ध्र स्रान्ध्र क्रिया क्र

(2/व) हु संक्रिंन चुर नश्राद्ये श्रीया विवा दे त्या नहेव वश्र श्रेपदी बुया कग्राश्चरावराषिदिव के नार्षित पदि देव ने प्येव विता त्र्रा स्वरावरा र्'र'ल'सूर्याम्हिर्'रा'वर्रे'णेव'राया'ने'मार्येव'गर'तुर'णर'वर'व्या नसूर-५वें मा ५ १ १ १ १ १ वर्ष वर्ष कुष अळ वर्ष कु मा स्वार मुव भु मे र गुवायार्क्षे मुनाद्रा वरामे प्रकेषानि देने प्रवेषानि के प हुन्दर्भर्द्रम् विष्ठुर्भेत्रम् यास्रुःदर्स्ट्रम् अर्भेष्रम् सुर्ग्रेष्ठ ह्रिंट्र प्रविश्वास्य केर ह्यूट्या व्यव पर्हें पृष्ट्य हिर हुट प्यट प्रवित प्रवि क्रम्भाक्षेत्राचेत्रप्रत्वेमा देव्याद्र्येत्रकेत्रप्तर्वकेत्राचे स्वर्धे याववःसरः नुः ग्रुरः परः। न्रेवः केवः वाववः ग्रीयः नश्चिन् स्वयः शुः र्येरः नयः अप्यमिनापिते विस्तुन्यी प्राप्त भे तुर्भामित न्या स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप केव्यी:न्युर्व्युष्यर्व्यायर्व्यव्युर्व्यायेवयःयः स्वायः सम् वश्रीः हुः नः क्रुवः है। विः स्वाः ध्रीवः वार्डदः वः प्यस् वार्हे वाश्वः व्युवाः इस्रशः हारीयार्द्रयात्रमा देवमान्द्रवेषान्द्रमा देवमान्द्रवेषान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रमान्द्रम हिन्-स्टार्व्येदस्राधीः गर्हेट्या ग्राटारी सार्व्यन् ग्राह्म प्राप्त विवाद निर्मा सुग ५८. नेश. रव. हें हे . वाहेश वहर व हेश से ५. ५ . विंर हे . विं वर्से र त्या न्वीयायवे न्द्रया श्री न्यापान्त द्राष्ट्र र स्वाया ने स्वयाय श्री स्वाया

ब्रैंयानागुनर्देराग्रीयास्प्रियाचेराहेर् हेरायाम्यानयानान्त्र विष्याम्यान्यान्त्र वर्त्रे गुरम्यवायाने से विद्यायदास्य सर्त् गुरम् वयः ग्राम्यायायः म्याप्याय व्याप्यायायः म्याप्यायायः म्रेट (४५०) र् नग्न पर्म गर्वित तु नवर में अपर्गे वुरा धर मूर्णे न्यगःर्रेग्यायव्ययःर्थे नसुरानायानवग् । से हिस्रामीयागर्रेयान्यस् केव्राच्चरावर्त्रव्यक्षावर्षे न्त्राराधराह्याहेयावहरावया वायवावरा राप्पराष्ट्रीरार्चेश ळवाराप्तरा व्याचार्यायायायावियाची विवासारी प्रा इस्रभःग्रम्रास्त्रम् ।ग्राययःग्रह्मः स्राप्तिः ग्रीभः गुरुवान्स्यगाः इस्र हिन् व्याः भूवः से से स्थेन सदे वर्षेन् सुर न न न हिन् र्येग् के तिविष्यायात्रायत्र्या स्वार्दिन ग्रीयात्री ग्रियान्त्रा निक्र द्या सूर्वारी नश्रद्रिट में अर्कें द्रम्यश में न द्र्या युवाश देंद्र द्रिंद पार्थे पा स्यश ग्रीयायनयर्गापाञ्चरया वाद्याः वेयायानरः स्वायावियागाः इसयासुः न्याययान्यस्त्रम् वया शे.ह.र्र्र्य्वः केव् कुषान वराया वेरिः नगारः नुःसहयःवद्यन्ःसहन्। नर्भेदःकेदःग्रीशःशेःनुःयःनर्भेनःगुर्भानेः श्री अस्त्रीं न भू र श्री प्रत्रा श्री प्रत्र श्री प्रत्रा श्री प्रत्रा श्री प्रत्र श्री प्रत्य श्री प्रत्य श्री प्रत्य श्री प्रत्य श्री प

ने न्यान्येन केन या भुरा र्रेन प्या मुः या ने भीते ख्या या निया ग्रीसानर्से वर्रान्यस्या से हिसान्यर (४६व) केवरमार्यर प्रतिमा वि इयाची वनशर् अदे क्वें नशर्में व कर्में व के दार्चें व व कर मेर्ने व या कर मी शकः यय केर कर देंग हुन दुन हो हीर दर्जे द रादे यस देंर हुन न रेवाशुर्या सेवा परे विष्य नर्गे दासहित दे प्यार द्रा सुन्य परे द्रा पुर्य शुःपःवयःदेः अदः नशः त्वः चदः वीः नविदः ग्री शः दशः दरः शेः अशुदः यः शैं ग्रशः ग्रीयानसूत्र ह्यास्यवर द्यास्या गुर्यदे देवा हु विस्तर है। या दर गुस्य वश्यवाचीश्राश्चिवा । प्यम् सुम्यादिवा । प्यम् सुम्यादिक्षायाः वर्रे हिन्दी मार्थर केव हैं हे बेगा परे नगिरे नशू न में हे नई व सुगा व हैं हेदे'ग्रायद्गर्याशुं अप्री: अद्गुर्द्ग्यदे हें अप्राय्या के अप्री: कुर्यार्थे येयान्त्रेत्राग्रुयाग्रीयायह्नायदे सूरामह्त्राद्वीययाया त्रश्यायत्रे श्चर्त्त्र प्रत्ति श्चर्त्त व्याप्त व्या

दे त्रशाद्यी गुराध्यायमा गुदे स्ट्रेट र् प्रमा क्रंत केर प्रथम् धरः वहेता शे रुशार्वे दानार ग्री द्रमा इसमा वहर है ज्ञा द्रमा दान ने भूनश्राश्रभुर व्रायागुर श्रूरश्राया गर्गेरश्राया श्रीवाश्रवर विवा हुर नश विसकुःयनःयरःशेः हुः वार्डरः नुः हिंदा न्येंदः केदः कुयः न वरः वर्वेनः धरः वहरः वः विरः भ्रः है वगायः वे अः यः विवः विवा नियं वः केवः नवरः वहें वः र्टास्त्रिक्रिं व्यास्त्रिक्षे के स्थित है साम्यानिक साम नशायवाग्रामा नमा मामा मिना के वार्षे मान के वार्षे मान के वार्षे मान के वार्षे के वार য়ৣয়য়ऻऄॕয়য়देखेळेषाद्वाद्वरम्ययाग्चीपद्वरक्षे सुम्या सह्वापर्देययासुःसः शुर्-र्वेता नदुःकेते नद्र-द्रायायान वुर्-द्र-राग्रेट नते विस्थान शुन् ञ्चापट के व से र रे व रे व रे द र शे अ प्यों शुर्भ र व श हु या हु या सर शे. हु. या सर्दे हु दे शे. यथा सहदे राया सक्या विदायर उदा हु द सूरी ने न्या की कि निवास की मिला निवास के मिला नि ळर क्षेत्र नु अ खुः हे व अ प्रेंव केव प्रतर व हेंव छी प्रतर वी अ अ कु खु विविध्यायात्रयायाः निर्मात्र होत्र क्षेत्र च ब्रिज्य क्षेत्र विषयाः ख्याया न्या ने न्या ने ज्या ने व्ययः हैं में या नायवः नवर वि द्वेत् क्याय वि द्वेत से नाया ग्रीय में र यम् शे. हुशः शः शुः न्ययाः वीशः नर्देश विः न्येवः याववः इयशः यः यद्यः वरेट्र नुरुर्शेष्रार्था मुंति स्वार्थ स्वार्य स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ क्रॅं अप्रासेत्यानदे के न्त्र इत्के द ने अप्तन न्या ने अप्रेस से न्यो न्या र र्सेदे प्रम्यायाया से र प्रवे या कुर्यया प्रया में या प्रते प्रयोग प्राप्त प्रयोग प्रय भुदे-५र्देन केन सेना सर्देन सर्धे र देना साम स्थित के साम है स गाउव क्रम्ययाया हे शुर रुषा सेव रुप रे दि भूर पहीव पर परिर खेरे न्नरः(४०४)र्थेःन्ज्ञः ह्वरःभे सेससः प्रदेष्टरः द्वयः निव सहन् ग्रहः। द्वरः वनीनश्राणी होत्र प्राप्ता श्रुवा श्रेत्र वित्र ही श्रूत हुवा वा नहेत्र त्रापावतः मेदे अदयः बदः बस्य अरु ५ द्यु दः भेदः ग्री अर्च उदः द्व अर्च वः श्री वा अरु ः स्रेदेः

अवर व्या नी नर र नगद हगा थ छ । व्या कु न र व र व थ या से र की पा हत निरःक्षःत्ररःक्षेःचदेःक्रयःविस्रशःग्रेःदेवाःतुःचड्वाःक्षे देःदेवाःवीःक्रयः स्वरः सबयः न्याः यो सः ध्याः र्स्रियः न्दः सबुदः पदेः दे रः ग्रीः न् ग्रेः वत्यः यः स्यासः सर्रेर्द्रान्त्रीयाष्ट्रवाद्र्याची रेर्द्रान्त्रान्त्राची खेवान्याने यादिः र्विट्र शुःवर्विट् प्रवे श्ले स्वायव्य द्या यी शः यदे । यदे सः क्रेव भी भी द्ये राज्य । ८ कुषानित्र मिर्देराम् स्थान्य स्थानित्र सेषाम् वर्षान्य स्थान्य स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्यानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित् स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स् नगरा वगानगरा श्रेदा देंवाचा स्वाःहो नस्रयःवयुनःहो स्वःयुनःहो रेव श्रूर्य सेवाय प्रत्या विष्ट पहें व सदे हो प्रदेश सम्बद्ध स्था सिंह मार्थियारी विश्वास्त्र विरायकार्यमा करामी विश्वास्त्र महिला स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् कर.र्टर. मु.रूप्तावशास्त्रिर.य. सूर्यास.र्या चैर.यी. क्षेत्र.जायायसास्त्र बे.रट.शु.के.यीय.शु.शु.सूर.स्र.रे.स्र.री.स्र.स्र. नक्षेत्रा ने प्यम् स्मान्यया स्वार्था क्षुत्र या क्षुत्र या वित्र मितायिश्वराताश्चरतः श्रुर्द्रात्र यार्ट्रात्र यार्ट्रात्रम् निवायः कग्रायरःश्रुं येत्यारानार्गेरास्रे विस्रायारार्ने राग्ने प्रतिरानिरा वियासीयासायायहेता वराध्नेराप्तायावीयायाची विष्ठाप्तर

र्देर:विस्रयायासी:नयदावार्स्यारळ्यातुःस्या।(४०२)ग्रेट्रान्यासळ्यः रादे विस्नाह्म सार्थ विषय स्वाप्त विस्ताह स्वाप्त विस्ताह स्वाप्त विस्ताह स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा सदे खुग्र अर्थे व न व स्थान व स हुराग्र में में मार्म मार्थित हैं में मार्थ मार् व्वास्ययापयानम्दिम्विम्। देवायार्थिनेम्यासुम्बद्धवामायाधिवासिः ननेव हुव वर सर नहय वया नगर वया नव छेर परे विसय ग्रीय कुषाप्रमानम् स्वासीराष्ट्रस्य स्वर्ति स्वरति स्वर्ति स्वरति वयासे। स्रासदे वयासे। स्रे से संग्रायरायहें व ग्री वयासे। व्यवेशायदेव ह्रवामी विषा है। वर्षा वर वर्षा वर्य ग्री:वयास्री इतायहैं ताळ दायशाग्री:वयास्री केंद्राय इंग्रहा महामी वयास्री नयर्यः क्रूट्यो विष्यः भ्रे इत्यामानी विष्यः भ्रे क्रिवः न्यायविष्यामी वियासे। नमुरुपायहवानी वियासे। हे यहेवायहायान ह्युसरुगी वियासे। त्रे[।] त्र्यात्रे प्रे त्रात्रे व्याप्य क्षेत्र त्रात्र क्षेत्र क गहर्याया ने प्यर से नसुर केंगा सर विष्य निवे न्या से कर नस्य स्था ह् अर्दे द न वे द र वे न र हिं या न दे र व न अर शुर् न न र दे प्र द न र न र हैं द र न र नन्यमार्ख्या दुरायमेनमायान इत्रिते हूरायायवायस्र हो राख्या ब्रे से र सरग्रा श्रेन इसरा ग्री शहरा नगर ग्री प्रश्ना श्रेन है र है प्रग्रा

श्री श्रा क्षेत्र मात्र मित्र मित्र

श्चरामा विद्वारा ज्या या यह न वाध्या (४१६) हेर प्रवार विदेश वियःसदःसद्भाग्रीयः त्वःगविवः सूगाः हेः ग्रुटः स्वेटः देशः ग्रीः सिवदः वः र्वेश विवानी सः क्षेत्र अद्युर्ग नदे देन न्यर वे धीय के निर्याप हैं कु यर्के दे वर्चरान् 'लेनर्या । इस्राधर कुयानदे हार हिरान्या शुस्र हेन नन्या सें वर्त्रायम्भ्रियायवे उर्हे होता । अये साहेर्याये त्रायदे मार्था वह वर्षे । वर्ष्ट्र-क्र.वंशास्त्राच्यास्यास्य क्रियास्य साम्यास्य म्यास्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त धि'न'न्व'न्गम्। श्रेन्'मदे से से महिन हे राष्ट्र' स्रम् राष्ट्रेन विन् राष्ट्र' स्रम् বীঝ'বার্ত্তবা'ব'ক্ল'ববি'মর্ক্তবা |র্ষব'নঝ'য়ৄবঝ'থ্রব'নর্ব্র'য়ৣবঝ'বাঝेৼ'ডর' वनाय । न्यवः अहर अं रे मोदे श्रेर से अव अन्य । । यन नगर से ना ठेगामहेशमारासादिराष्ट्रमा विशान्यान्ते नराभूनशाग्री केंग्रास्युप्तहर নৰ্দ্ৰ |

ने वया द्वाया से नियाय क्रुन् श्री स्वयाय स्वर्

नन्न। धरः रूट् श्रेंग्राश्चात्र में हिंदु साय देगा यस द्रश्चर श्रें नन्त्रभ्याच्छ्याया नेप्रप्रेचेयाची क्ष्यायापिक्षायाया स्वास्त्रस्य स्वासा गर्भरम्भी नगदाद्युर रेडिंग निवेद मा र अत्युवा सूर द्रात्य समाध्या য়ৢঌ৽য়৾৾ঌ৽য়৾ঀ৽য়৾ঀয়৽ড়৾ঀ৽ঢ়ৢঢ়৽য়য়য়৸য়য়য়৽য়ড়৾ঢ়৽য়য়ৢয়৽য়৾য়ৢয়৽ वर्यान्द्रवस्य उद्या होत्य दि त्यस त्रुव्य सेद्राया न सुन्य प्रति रहें ग्राया महिराग्री कुमिने र के द में निर्मास के से महिराग्री र सिराग्री सिरामित त्रश्रामी,पर्यश्रामी,क्रूशावश्रश्राक्षराह्रेषे,त्रप्राप्तकर,पष्टु,क्ष्ट्र,श्रष्ट्र,श्राप्ता यावियानमा वयार्येदे प्रचमानु कार्डमानु । (४१न) न्यो । वेग्रायाकु: ब्रुदे:देन्-न्ग्रम् ग्रम्याद्याः सेन्-प्रार्थे यान्यायाः सिन्-प्रम्यायाः देश'यर'येग्रथ'यदे'ग्राट'तु'ऍटश'शु'श्चेत'यश'र्वेर'वहेत्'ग्री'तु'र्से' सरयाष्ट्रित्रग्रीसाभ्रेष्टरसहत्

कें अ'निव म्यायाया मुल'यळं द्यी दुर'र् 'द्यो निस्ने द्यी सें अ'या अर्दे अ' श्चेन-नर्धन-गर्बन-गर्डन-य-रन-तु-गुर-नदे-सळन-नूग्र-मुया-सळन-नु-यार्थेया यान्व सर यहवा याहे सन्दा हे सम्बर्ग निया विस न-१८-यासहर्भयास्यास्यास्य मान्यास्य मी 'रे 'सर मी 'प्या मा मी 'दि र रे दे । पर 'र्मी या परिंस 'रे मा सा से 'पर्या प रे'निवित्रागुर्दावेन'पर्योद्दारेयानुः द्वेत्र'हेत्र केंशाह्र्यावयार्थानाशुर्दा केंशा हे हा अप्रयापि दुर्द् प्रश्लेष प्रमाहे वा अप्तेष स्थापि स्पर् हेशः वटः वी र्से वाश्राः वर्षः वर्षुः वाश्रुयः ही वरः नुः क्रीटः वरः यह न्। वे स्टिः नर-सं-न्र-क्रेद्ध-पार्नेट-हेदे-वि-र्वेग-तु-सन्य-ते-र्नेर-प्रा-क्र्य-स्या हते शे हुन्द कर गुते खुर । गुने व गु ने व थ थ गान्द न साम म्वाह में द क्रियापायाश्वरामकुन्यान्तरमञ्जामान्त्रेयास्याम्यान्त्रमा मुल र्ने द्र भी मुल प्रमान सम्बन्ध मार्ड र सुनाम सुर्वे ना सर विष्ठः नविः गुवः न ग्री शः ग्री शः न इवाः भवेः शे सशः श्ववः ववादः विवाः वीः श्वेटः नुः न्यूर्ने क्रिंर्ने राज्य न्यूयर न्या के या क्रिंग्ने राज्य ने राज् न्यम् इस्राम्य द्राप्त द्रिम् । स्रिम् । स्रिम् । द्रिम् न्ययाञ्चतः व्यायायार्थः वित्रायायये । न्यो । यन् व । व्यायाययः व वनान इः श्रेयः नुः मुः स्वार्थः नगुरः श्रेः सहन् त्र शः स्वार्थः नहीं स्वार्थः नहीं स्वार्थः निष्यः स्वार्थः निष्यः स्वार्थः निष्यः स्वार्थः स्वार्थः निष्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्

न्सॅन देन केन हैं है अ बेन नग ने अ क्वेन नग केन केन वर्ळे निहेशानन हुन बेश परि स्थाय मुयास्य मुयासामा मिता है ते हे त दिर क्रॅंश हे क्रॅंश निव न पारेश था। क्रेंश निव न कुट हिरे रु श शु या निव केत्ररोटानो कुषासळत्यान्त्र इत्सासमा अत्र व्रेत्रे व्यटानी श्रुवासागा व्याद्र्यं ने स्वर्ध्वयायाञ्चा त्याचे या या विष्या मुयास्य म्याया सम्देव साया यहवा यहिता ग्री सामी स्वार है सुवा सा है हि दि । য়ৣয়ৼৄয়য়য়য়৻ঀ৾৽য়৻য়ৼয়৾৽য়য়ৢয়য়ৣ৽য়ৄয়৻য়৻য়য়ৢয়৻য়ড়য়য়য়য়য়য় नगायःगावरःगारः सःनवेरः सम् कें सः हे रमयः स्व न्नः सदे नु र र न स्वेवः वन कुरु के के भी राष्ट्रिया निवाद की मित्रा निका निवाद के सम्याद के स्वाद की स्वाद क केन सिने हे या शुर्स ज्ञर के लु मार्ने र हे ते हि के मा तु हैं न न या हा न से न मर्डिटावामाळे दार्भे प्याटा यदी हिन् ग्री विन्याया या तुवाया द्या से वर्षे वा प्रदे

इत्यायवे हिंग्या नहें द्राया नयस सुत्र में र ग्रायाय पवे ये याया सर नन्द्राये द्वाराणवर्ष क्षुत्रस्ते देव से के प्यारा के वार्षिता वार्षे द्वारा के वार्षे वार्ये वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे र् मुँव राम्बिम्य वयाय्याय (११न) याक्क केर सहि। येरे छेर ग्री गुड्र रहें अ हे न रेरिन वस्र अ गुन्य अ पर में निया न में व से से पर से साम साम से स केव गर्विव नगर मंदे दुर रु रच हु । हेर बर मी गर्व अर मेग्य वर्षातकर् हिर्हिषायते हुँ याव वर देश यावराय या ह्या या है। ये द्रा शुः झें नाया भ्रायमः द्रेने १५५ वर्षे १५ केव जिर किया है से दे रियर नियम हैया या प्रति है सामा प्रति से सामा के या से जिर गुर्द्रते श्रुट त्याद्य स्यम् सम् । या श्रुटि त्यू ग्राम्य देव छेव श्री या चेव सेव छेव । वर्षे अ'वे अ'म'र्गे म्याके 'यय म्या स्यय ग्री सूर में र से र में 'या के नया वश्यायतः तर्त्रेशः श्रुवः इत्यायः अर्थेतः विता क्ययः यः दृतः वाणयः विवा बुँव्ययदे हे नद्वं वर्हे हे ह्या वर्बे र अदे ह्या पर हुया पर है तिन हि निवेश प्रते श्रूश से दे प्रतर में ज्या शर्म सुरा सक्ता इर सुर क्र में है। श्रुवःश्रानर्शेन्वस्रभानवनःस्। श्रुवःश्रान्यत्यः व्यवनःस। श्रुवःश्रानर्शनः व्ययः क्रियः यक्वी इटः यद्यः क्रियः क्रियः यक्विः स्ययः सुः प्रथ्ययः यः क्यान्तरे स्रावशक्त स्थान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

क्र-वाश्वासाम् अर्मेवाद्यायाश्वराहेत्यम् यात्रास्त्राचिता देनवाग्यर मुलासित्र हेते थे प्रीं वर्ष प्रायाय वर्ष र निवर्ष स्वार स्व त्रेश्रामाञ्चरात्राक्षातुः स्राच्याचेत्राम्याः क्रुं स्रुत्राश्रुः स्रुत्राश्रुः स्रेत्रात्राः स्रेत्रात्राः स्रेत्रात्राः धि'मो'सबद'न्या'यात्राहिंन्'स'इस्राय'न्याद'हेव'द्य्व ह्यासळेरास' विवासी से विवास मही नाम के ग्री अपिश्रामित्र प्रदे प्रवर में इस्र राग्री प्रोपे पोदे पर प्रवासी शाम सूत्र पर्वे शासर नुःसूर्यान्स्स्रसायायहेत्रत्रसासेनाग्रेःसूर्यासास्रम्यायावीयास्र न्धन्। कुन्द्रस्य अर्थेन्य अर्थेन्य अर्थः अन्तर्भुनः कुन्य अर्थः सबयःद्याः शुःगाः सः हतेः देवः वितः दुः कुत् । यदेः श्रीतः यदि शः शुः तः इससः ग्रीसः रट्य विवा मेवा इसायगुर्या सुसाया रहेत्य स्था पाहता या स्था र्नेर-दे-स-सेर-पदे-पा बुरस-पासेर-ग्रीस-पवेरस-पदे-स्रेर-रें-उद-ग्री-वनुसामेराम्यासामान्या वनुसामेराम्द्रासेतीम्यासासीर् (४३न)निवेदशाया शुव्रश्रमेव में के निर्श्व व्यवस्था सुवायक व सी श क्रॅंशप्त तुर भेग पत्ते न र्देन र्द्रेन स्ट्रंन सदेन परे र्वे साहि प्यत या वे रहे स्व ह यादेशः श्रूरः कवाशः शुः चुरः वरः याशुरशः वर्षाः प्रशः ने वशः ग्रुरः शः ययाः वशास्त्रमार्थायायो नरार्थे नडुःमासुस्राग्नी नरास्त्रम्

ग्वित : पर रे अ : शु : अ : कर : परे : गु न : परे : अ वद : व : न् ग : य : न श्रे त : न गु र : ८८। लूटशत्रह्म अभाक्ष्या ग्रीमाययामा सह केवा न्यू गुरी वे कुत्रवहेत्रकेषायाः मेरवायः विवायः नमूत्र प्रदे स्ववायायात्र केत्र मययः उद्रासित्राचित्रावि नावर्के वे सुवासाद्रामाने वासावतुत्राची ह्येत्रायसा वर्येशःस्वाःशटःरे.चश्चेताःच। विश्वश्वःश्वेशःश्वरःश्वेःमेतःस्रःश्वरः र्स्थाश्चित्रत्वेत्रे त्येवाया श्वराह्मया सम्प्रत्याम्यते त्या समिते स्त्राह्म स्थाप्ति स् शुःविवारायायाया गुरावि वस्या सुन्ग्रात्र मुन्द्रवी योगारा ग्रीवह्रवा कुन श्रे कर प्रते शुक्र र शुक्रा थे भेका सर्के वा वी श्रु श्रु श्रु व र शे भेका प्रते हिर र् नश्चुत्रप्रे विषया अपिया ग्री क्षे प्रयम् नकु ख्रा ख्री प्रे ने ते गुत्र अधित वया ग्रडंट श्रूश रें श कें त्युवा नश्रूत मंदे नु श विन् मर उत् कु लेवा न्नट सें ह के त न पाय अदे हि अ न हे न पाय है न पदे हैं न पदे हैं न पदे हैं । गन्न भ्राध्न भ्रुषारावे गर्गाष्या विट नु भ्रूष्य या मार्ग निर नु भ्रूष्य वित सर व्यानर्भे प्रव्यया ग्री र्से वाया क्षुन्य र्से स्त्रे प्रवाया या या वि हे व रही या ग्रीया विःर्वेगः हुः सन्यान्य सन्त्रान्त्र स्ट्री यहेगः हेतः गुतः हुः सुः मो प्यययन्त र्शेग्राश्चित्र हित्र अपि त्र्युवे खें जुत्य लेंद्र श्चित्र वित्ते वर्षेत्र सुग्राश वहें न ग्री निरास हैं न त्या स्टान्नर न ग्री न साम ग्री मा

ने प्यट प्रदेश प्यत शाक्षीं ट के व में भूग में व के व प्य में या व में सुम ग्रीशासुराम्बराद्यशासँ न्नरा(४८५) केवासँरान्निप्रस्व पुरानेवशास्त्रीय में वियायेवायम्य निर्मा ने निर्मा के से निर्मा विवाय विवायें शास श्वा ने निर्मा के से निर्मा विवाय विवायें शास श्व निरम्पिर्दर्भार्यास्त्रात्त्र्यास्त्रात्त्र्याः स्त्रात्त्र्याः स्त्रात्त्र्याः स्त्रेरातुः सेतार्याः स्त्रेरातुः स्त्रेरात्याः में अन्दर्भी र्द्धम् अन्ववा के विष्मुष्य मुख्य सुरम् मुख्य द्वार्थ के विष्मुष्य व्यवाशासुः ध्राप्ति साने प्रवासी साने स्वास्त्र स्वास्त्र स्विवायः রুমা ব্রা.ম.বা.বার্ম.প্রমের বর্ষ প্রমের প্রমা. श्चरःयरःश्वेयःग्रेःद्रभाषा द्रवरःग्रेःवहवःशःग्वदःवशःसळ्दःद्रवरः ग्राम्यायाम् वार्ष्यात्रेयात्रेयात्रेयात्राम्याम्याम्याम्यात्राम्यात्रेयात्राम्यात्रेयात्राम्यात्रेयात्राम्या न मुत्राप्रशायदिवा हेत् श्री श्रेश में कित्राप्रशावत्य में सामान सुरा ग्रीः अर्बेट व्या रेत्र में केदे त्या पादी नवट मी क्या ग्राट नया ही में त्या नगरानभूमा हेटाळेवाइसस्याग्रीहेटार्सेन्स्राखास्यानमून्दरानस्य सरायहरारावे नेयान्याम्या अर्केमान्यत् मी भी मु अवयन्यामित्या क्रॅंशः कुषः क्रेत्रः वेशः ब्रेटः वेटः। १८ः ब्रेंट् । वटायः च वः है । रतः नहतः गुत्र-न वट वसम् या या या यो ट सा यदि मिहेया ग्री मिवे यय दित् ग्री या यथ

य्यान्यायन्त्रिः न्यान्याविक्याः व्यान्यायः स्वान्यायः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वायः स्वान्यः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

हुःसदःबिदा देःद्रणःग्रदःकेवःसेवैःयशःकवःग्रेःक्वेंद्रःदरःवश्वर्वःग्रेवः में राशी देश राप्ता हित्य पात्र पात्र वार्य पाय राष्ट्र के रापदे प्राय केंद्र रुषारेव छेव क्रुव कर ग्राम्यायाय प्रदेश्यम् द्राप्त । प्रदेश । मुन्रें न्द्रा मुन्यस्यर्थर्देन्द्रें केदे संस्थानियः ग्री:सहर्पायवरार्धायावदार्याः कृष्ठेः क्रिया याद्रयः भ्रवयः ग्री:क्रिपाययः र्गेश र्शेव मा भ्रेगश गुव र्शे द्रा श्री राय विस्ता से द्रा से दे प्रथा केंश कुष केंद्र सें प्रदे हिंद शे केंद्र सेंदे किंद्र द्वा द्वा द्वा स्था ने श र्देरक्वयार्वेदेः दुर्दु त्रह्यस्य लु नर्दे दुर्यदे दुर्यदे प्रत्युर वे न दुः ह नत्वःश्चीः विस्क्षेत्रः वेदा शेः तुः देवः ये के व्यागे द्राया वदेवे देदाया गादवः रवशःग्राटःविवाः श्रेटः वश ह्यूटः केवः (४५व) ने रः वग्रशः पर्देटः ववेः र्देव सेट रेटा देव सूरमावसामाय कुय में वसामाय कुया सक्त की श्रभाषीत् ग्राम्य त्रभाषायः मुत्यः सळ्तः ग्रीः श्रृत्वः यः यदेत् सः श्रीषा भाष्य सुर्भः र्वेदःगडिगाःस्र कुः नः क्षःत्र रःगुवः ददः भ्रे । अश्ववः पदेः गात्र असः देः।।

याद्वीत्रभाष्ट्रित्वाद्वीत्रभावेत्यभावेत्रभावेत्रभावेत्रभावेत्रभावेत्रभावेत्रभावेत्रभावेत्रभावेत्रभ

क्रिंशः क्रुत्यः क्रेत्रः या नेया वा हे वा विदे हितः भुत्रः स्वायवा स्वादः क्रेत्रः स्वितः क्रिंतः विरःलयः श्रशः गरिशः शुः नर्भेः वः नगवः र्से वः इस्रशः र्से शः सः स्रवः परः श्रुवः र्श्-देव-म्.कु.पश्र्ट्र-विश्वश्चाक्षितःशक्ष्यः (१५८)ज.विश्वःतश्चा श्वश्चान्त्र्यः नरःनगवःगवरःनविवःसर्दःगुरःश्रुवःश्रःग्वेग्राश्रेश धनःग्रेशःविः विवार्धिर नदे के द द वा बर क्षेर अयोग अयम निवा अय सुर अ शु हे ग्वरायरशाने प्यताके शान्धेव क्षेत्र स्वाति प्राप्त के त्राति विष्य के स्वाति स् वयार्गेटायाद्वयाग्रीमिवयान्स्रेरायायेवयास्रवयास्रेत्राह्टारुग्यावया गुनः के राहे 'द्रो 'येग्रर्भ द्राया न वर द्राया राहे तु 'वेंग् 'गे 'के राहे 'ह्रा यदिया इरक्ते स्वार्धित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्व यर्वियायासु प्रत्यायायाया ची विश्वास्य ची विश्वास्य ची विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास पिरःसिष्यानुवार्केषा हे प्राचायर सुदे के दारी हस्य वार्थे से प्रयान १९ मःसद्दः कुःद्रिः दुः से त्या में दः सदे विनशः श्रे सः वर्षे सः वर् सः वर्षे सः वर्षे सः वर्षे सः वर्षे सः न्ययान विंदान्य विंदानी हे या बदाय दे न हुया बुनाया ग्री विंगा यम नाबुदा येव संस्थान के विश्वास्त्र मित्र स्वास्त्र मित्र स्वास स यायाया वेयान्ता हेयावत्याहेयाशुरायान्त्या व्याप्ता वेयान्या याशुरा क्रॅशप्रग्रह अंत्र इस्र अंतर्भावतर विदा वुरप्रकर हैं न द्वें

इस्रश्रायानगरियिं स्वित्राधियासार्या योश्रेत्राधी त्रायासार्यी स्वित्राया श्रीम्थास्यम्था बुद्दानी सह्दार्या सम्बद्धान्य विद्यास्य स्थानी स याक्षयापरावर्षा यरक्षिवावयाकेयाकेयाहराष्ट्राविवादर्या वया र्रेन्द्रसळ्यम् ग्री पर्वित् वित्रम् स्वाम् प्येत् ग्रिन्द्रम् जुर् स्वित्रम् र्वेर-तु-नवर-री वर्धेर-कुश्राम-र्नेर-प्रीव-र्रेग-रेव-रेव-वे-र्क्श-कुत्र-केत्रस्ति विनयाया मृत्राया गुराया स्ति राया यही ते रह्या शुः विसया ग्रीः विस्तरा भी । विस्तरा स्ति स्ति स्ति स श्चरः नवे र्ह्में सहित्। या इतः गुनः नवायः ये वा शास्य या श्वरः स्वायः श्रुट्यायायाञ्चर्यायहर्ते। (४६५)हेयाबरावी वार्व यरायेवया देव श्रूरमान्यान्याः स्विनः तुः निविधान्यः स्थ्याः देवः देवः हैं दिनदः वीः कुत्यः र्रे तिविद्या वह्यान् वृद्याने निर्मा केत्र निरम् कुरा में या विद्या या ग्रवरा यरे हेर हेंग्र राये थेंब हुन सुवार चुर वये ग्रुव राये र्युव राये र्युव राये राये राय केत्रसंविगाधित्रपरपर्गात्वदरमात्राभूत्राभूत्राभुं ते त्रम्या ग्रीभूर र्देर:सर्दर:क्रें लेग्रास्कु:सेर्डिस:पर:वर्गःसर:द्यग्रास् ग्रुंदःगीः ग्वियानभूरायायेनयानुयारेन् शुर्यारेरान्तराययागुयायनुत्त्वात् सेन्यासहन्यान्यात्राहितात्यास्यासन् भूता नेवसानित्समा निवसानित्समा नःभुः सके नः ग्री सः ग्रानः विशायः ग्राया स्वरः प्रशा स्वरः सक्त स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः

श्रेयाकेत्रार्थे (बुवाशाहे। यर वेदि चु नश्र स्थे पार्श्वाशानद्वा से सिवाशा न्ना श्रेतुःदेखःन्वादः इस्रशःवींन्यदेः श्रेवाशःशुः कन्त्रशः न्यः शेः वनेः वः यर:र्-नुर्-। देव:ग्रार:वर्धेर:कुश्राय:र्ने:हे:के:नहव:यव:कुंव:गाहेशःगादेः र्द्धिग्राश्चार्यास्थ्रम्याययास्थ्रेयावरान्त्रह्यययान्त्रीता विवार्ट्यद्यस्ययाग्चीः येग्राश्चेयासहर्म्यार्थेश्चेर्चेत्री विनयार्हेग्रापुरान्चुरान देव्या ध्यानिवायाहेयादेवाश्वर्षात्यायळें भ्रेयाहे हेयायवर विवाय ब्रा दे लर्रिन मेर में बर्धे लक्षा दे हे बर्चिन निवासी गुबर्च निवास में निवास के शःशरशः मुशः मुषः अळवः नगवः नर्गेशः सह्दः दे। विदः सं विदे ते सुनः नडुःगडिगाः प्रदे रहे सानडुः वार्के साग्रीः हे स्देव में रहे द्रावाः द्याः मी द्रवदार्थः न्गुरार्थे नडुन्जानवेशासाविगारेवारें केवे गान्वारे रागेवाविषा क्रेंद्रअवदर। क्षुर्क्षुव्रक्ष्रप्रामी द्रवर्षे विदेशेत्रव्वार्याया विद्राया वहिते प्या याया न्या के अाथ में ते के माया अाय कुराया न अप प्या प्राप्त के अप प्राप्त वक्दा वयावः विया के शायः देवः र्रें के भूः (४६ न) के वे रेर्भू न भू न समय न्याः हुर्ना हुर्ना धेवरम्य। अधिवरमर ह्याना धराधेराय। यरे हिर्गी अ सहर्भित्रम्भित्रम्भित्रम्भित्रम्भाकुःसर्वेदेशस्त्रम्भित्रम्भागुनः नवरःर्रेयःमदेःहें हे लेशनाशुरःनःयःन्यन्यश्वःयनःधेवःवयःश्वय। नरः

क्षर-नेश-ख्रु-इसश-ग्रेश-इस्-ार्ट्य

ने प्यर शुक्र श्रू रवा वी निवर में वार्विक कु क्र शन्य व्यापी वावर है या र्शेवार्याप्ति त्रादिहेत् नु स्वाय होत् त्राया शुर र न वार्षे र प्राय स्वाय प्राय होता वार्षे र प्राय होता वार्षे र प्राय होता वार्षे र प्राय होता होता होता है । अट.र्.अह्री नश्रव.स.ज.खेयाश.हे.लूटश.श्र.क्र्याश.संद.ट्रगे.श्र्रिट.यी. र्देशमा अर्देशने पार्व शा केव रेवि शुव स्र रेविश वर भ्रवश शुर्वेद यदे पातर पर्गे र त्या नहेत तर यस्य स्था शु से य शुत्र पा शुर प्यर । सूर रेस्रायसायहण्यास्त्रम्यस्य रेत्रसूरसर्देतार्येटाहेस्स्रायाद्दान्यस्यसः <u>र्यश्राच्येताक्षेत्राविकाताः क्षेत्राच्याः प्रमाद्रकाहिताः विवाः</u> न्नम्या ने न्या श्रुवाश्वासे ने वार्षे ने वार्षे न्या सर्वे श्रुवाया ने प्रवासे ने वार्षे ने वार्षे ने वार्षे न र्हें हे गहेश वर्डे ट कुश्य में रें र के प्राय के या कुर प्राय के या के मुयासर्केनाः भुःसकेन् ग्रीयान् र्याने से तुः नान्ययादर्गेनः मुयार्थे। यनः कुनःमःरेवः डेवः कुषःर्ये। जुरःमःनगः वियः दरः कुयः सँग्यः र्वेवः र्यः इययः ग्रीशर्मिशः र्विनावयार्थे न्वराकेवार्यराष्ट्रीराश्चवाद्वराष्ट्रा भेरिरानरावयार्थे र्वेट्स, इस्र निवास स्य द्धारी वार् क्ष स्य के स्व स्य के स्व स्य के स्य हिन्यागर्नेग्यायेन्यम्यहेव। देःस्मार्गेन्द्विम्येम्भूवेःसेग्वर्षः ने ने नु न्या भीर प्रदे विर या प्रदा । ने नि विद ग्रुर कुन से स्था न्या है न ब्रिट्याख्रित्। दिःवे यह्या मुया क्रिया क्रिया म्या विया परिःदेवः क्रिम् विन्। त्रान्य क्रिक्त क्रिम् त्रा क्रिक्त क्रिम् विन्य क्रिक्त क्रिक्त

श्रभःत्वाःत्वरःवयः विभः य्वायाभः यः श्रुः वः वृश्रभः त्रभः देरः यः ब्र्येन्सरः श्रुवः श्रुः वि निरान्ते ने ना या निरा श्रयाः श्रुषः श्रुः व ए । या निरायः त्रुग्राराळग्रारादे रहंता ग्रीरा सुन्या च केत्र में रागुरा सून्या सुन्यः क्रॅंश ग्री म्वायायायाया प्रत्य क्रुं द्र देश के त्र द्र स्था श्रें त्र प्रदेश देश दिर द्र र गीयाचेयाची सुत्रस्वे तुरानवेयाद्या वेया हेया चया केता केत्र में क्रिया न्नरः से क्रिंत्र से क्रिया न्राया क्रिया व्याप्त क्रिया व्यापत क्रिया क्रिया व्यापत क्रापत क्रिया व्यापत क्रापत क्रिया व्यापत क्रिय क्रापत क्रापत क्रापत क्रापत क ग्रैभाष्ठ्रनामवे श्रेश्चेरग्री त्यर कु से त्युगामवे वियाये दासही दे प्यर न्सॅन्ळन चेवा पहिंद हो दार रेन सूर या अर्टें से या किंत सें ग्वितः इस्र अः वः व्यायः विषाः वर्षेतः स्ट्रायः स्ट्रायः स्ट्रायः स्ट्रायः स्ट्रायः स्ट्रायः स्ट्रायः स्ट्रायः न्सॅन्यावन्स्यस्य सार्वेन्यं प्रतिन्तर वी सार्थे या बरायर स्वार्थे वर्द्धिट कु अव अर्थे श्रेट ग्री व्यर कु व्यन् वीट्य है श्रुवा अर्विवा के वर

यह्रान्याल्यात्रिय्याक्षेत्रायाः विद्या देव्यात्रव्यात् विद्यात्र्याः शुन्रः मेत्रः से के मान्या विद्या या विदाय स्था विदाय है या प्रया हेश-देव-शुरुश-पान्दावर्धिद-क्रुश-पानिशःग्रीश-पार्देश-पादे-ह्रिव-पें। र्रेयः हेन् र्शेवाश्रः श्रुः र्ने : सयः मः न्वा मी श्रुं न खुवः यशः इसः मरः वन् शः मशः वहिना हेत से अ में 'त्रस्य अ ग्री अ ग्राम हिं अ विद्युन प्रमान्ना विद्या हिं अ न्या श्चिन्गी व्यव प्रवास्था अपार के वा उर प्रवास के विष्ट (४०) यह । वा सार वा स्था के वा स्था के वा स्था के वा स्था या वर्ष क्रिंग्या ग्रीया ग्राटा में दा के ता में देश मुखा प्रायया शुर प्रिंद रादे में टा यदे यर्त तर्देत हैं उत् लेय ही से वेंद सुर तु ह सम्मा ग्राट हेया ही मा गर्वेद्र'रावे'नगव'विस्रर्भ'न्नदर्भेर्भ'नेद्र'द्रन्दर्भ'वस्र्भ'उद्'नदे न'द्र्य नने नर श्रें न पदे नने श्रेन छै तु न हम् अ श्रुव में अ है । बदे कु य में जाव । इड्राविन्द्रम्यावयाययासूयानुः स्रवयान्युयायास्ययायावस्य स्रिमः नर हो निर्देश वित्र ग्राम्पर परि हो निर्देश वित्र वित् यान्तर्वत्याः श्री निर्माश्चाले में त्या स्वीया स्वाय स्वय स्वाय स्वाय

ते अन्य त्र स्थान् व्यवस्थान् व्यवस्थान् व्यवस्य विषयस्य विषय

न्वासिट्यो स्वास्त्र प्राप्त राम्य निवासिक राम्य स्वासिक स्वास ग्रट्राव्यान्यर के राज्यायायायायर यह दावयाये प्रायुध्य मी केट्या नम्स्रम् नव्दा देव श्रुद्याप्य स्मर्थे ग्राचर नश्चद्या है सुर्य स्मर् हेर-निनाःभ्रम्या वर्द्धितः कुषायारेष ठेष्ठा कुषायार्द्धिया वीषायार्देश वीता यदे-न्युनःकेव-इययाक्ष्मान्यनः विवा न्यायः ध्वायः प्रयान्यवान्यवः नर्सेन्वस्थाः कुषाः में साक्षेत्रायम् की न्युन्कस्थाः विन्ने प्रस्थाः की नर् नु निने ना निर्मा के निर्मान मुद्दानि के सम्बन्ध कर विद्या के सम्बन्ध कर विद्या के सम्बन्ध के सम्बन्ध के सम्बन्ध के सम्बन्ध कर के सम्बन्ध के समित्र देग्रथः भ्रवः ग्रविशः गः देवः श्रुद्रशः यः ययद्रशः ग्रोवः वेषाः गीः क्रुः शेः वदः यः नमग्रामरियाम् नु नु मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मिर्मियामे नु स्तु मार्चित्र मिर्मियामे निर्माणिया में दिन्य स्वयं स्वर्था क्षेत्र स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्य रुद्रश्यादि से स्रायदे राजा से वासा ग्री प्रतावास सामा स्रायदा से प्रतावित प्रायत्व स्रायत्व स्रायत्व स्रायत्व न्यवःविद्या व्याःस्विःस्यायःश्रीयायःभिद्यस्य म्याःवर्षः वन्नश्चित्रं भुवाशावादावीशायादावावाद्यावाद्यादान्य देवा देवाश्चित्रं स्वा हुशायार्श्केत्या गुरा वेरियायरे हिर्ग्येश नरे नराम नेवाश परे वाश्रर

यी श्वेद से या शेर लुव अदे । सु न श हो श पदे प्र याद विद्युर प्र । क्वेंद विद्यु सहरशः सदे से र से दे १ दि १ हो ८ १ यथ १ व सुव १ पदे १ वा व १ वे थ । व १ दे वा सू र्क्षेत्रायाययात्रायायये सुर्वात्रह्र्यायहेत्राया सुर्वा विषया सुर्वा विषया स्थापिया शुःशेःगर्डिन्यम् (४४न)र्द्धेन्यःयःतुःम्यःनिन्यदेःहेशःशुःविग्रयायःयेःग्रुनः यदे अवद वस्र राज्य निष्ठे व नगुर प्र स्थे व देव हैं भूग हिस विन् तसग्राम् म्राम् गुन् पुन वहार में दे सके में दे से में में में स्मर हैं। न न्ना हे.चर्च्चान्याचान्यक्त्राचर्च्चान्यदे । न्ना हे.चर्च्चान्याचान्यक्तान्यक्तान्यक्तान्यक्तान्यक्तान्यक्तान्यक्ता रेट खुग्राराय इ. दग्रार में इस्रार है . भीर प्रदेश सर्देर व प्रदेश है व प्रदेश कु न्वो न न दुः यः हैं वा या सर वें न या हैं न या न र व्यव या वें यो ने वा विंव व् नासर-र्-नर्गेर-रावे विद्वानि निर-वसास्रावितःस्रवतः सुराधर-विद्वार्यकः र्विरः खुवा न्दः वि नदे नदः वा नेवा शास्त्रे श्रेदः वि सक्रिवा वी वि तसदः श्रेदः रादे हे से र नश्चे गारादे हे सा सूरा सुरादह ग्राया सर सह द्वा वह हे दि सी दूर रेव श्रूरमान निर्मेव र्ह्मेव वर्षा संस्था से या से या से या ही । कें नहतर्हें हे हमानिक्षा वर्डिट कुराय हैं र देव के वा का या कें यकेना अयार्नेरानर्येन्वययायर्गेन्धिं यकेन्यास्या नेवे अयार्नेरा नर्भेन्वस्थान्यः कुरुष्ट्रस्थान्यः निविद्यान्यः विविद्यान्यः कें दिर कुष में। धर कुन देव हेव नग नेश नगर ध्वर रान में दिवस्य मुयारी गुर्नेरागुरनग्रानिशारीयायास्त्रित्रारी गुरायविरायवार्यासे नःलेवःहःसरा र्वोरःसःदिःहेरःयःरेवःश्वरसःग्रेःस्रसःसंविवापिनःहः निवेशास्त्र श्रूशार्गे दाया वर्गे निवेश सर्गे वर्गे दिया श्रुवा श्रूवा श यिक्षात्यमा वीटासादमें यदि सर्वेद से वीटा द्यार दु से वसा दर्वेद स वर्द्धेट हेते नुट विन (१६५) हु न वे अ परे अअ विन अ नुट ट्या निन र ग्राम्यास्य भू नक्ष्यमा दर्गे नदे सर्गे न ने म्यास्य ने म्यास्य मिन् में स्वास्य स्वास केदे सः क्षेत्रया ग्रीया श्रुया पार्या ज्ञार में रात्रा रात्र रात्र ते रात्र वित्या श्रुवार्थः ग्राम्यायात्र विष्या भी स्वाप्त स्वाप्त विष्य स्वाप्त विष्य स्वाप्त विष्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वा बन'निक्र' बुग्र अ'न्य'ग्रे'ने अ'च'गर्डे' में र'यह्न । । वुन्'यर'ग्रे ने ने क्रें र' ८८. स. सर्ग्रेव. श्र. स्वा. वार्ट्र १ उत्या स्वा. र . स्व. र . स्व रु:सहर्म्स्र सर्वि र्श्वे रि. श्वे रि. स्वाय रि. स्वाय रि. स्वय स्वय रि. स्वय स्वय रि. स्वय स्वय स्वय स्वय स्वय वस्र राज्य विताया निर्मात्र मान्य विताया वित्र व सक्रवाक्ष्यावर्ष्युमाने स्वापान् सेन्या से सेमान्या सेमान्या सेमानिया सेमान

मेव्याम् वेयामाम्यस्य स्ट्रिस्यामिक वेयामाम्यस्य स्ट्रिस्यामिक वियामाम्यस्य स्ट्रिस्य र्रेग्'विग्'गेश'ध्रम्'नडर्'न्याहिर'र्सेर्'न'धेत्'वेर'नदे'नेव्'ग्री'सर्गेत्' र्वोद्यान्य न्त्र न्त्र न्त्र न्य न्य न्य क्षेत्र स्था स्था न्य स् नहेता नर्धेन संविद्धेर हे समान्य नर्भेन संविधित से निर्मा नक्षुम्राने। देव श्रुम्रामान्य प्रवास श्रेन्य । विन्य द्वार निन्य वस्र न्र मुर्य सेवाय र्स्नेव र्से वावव स्यय न्युर हिर ही रेसेवाय सूर सर्विः क्वं उव से द्वारा वीं दास केव से सामग्रा भी सा है न स्वद हैं व नर्डेयानरासार्द्रसार्वेन्तरातुन्यासार्वेनान्याः हेरान्युदानीयान्स्रीरासा न्वीयायवेट्स्या वीटायादेव् कुयान बटान् सेनयान ख्वान्या वनया (४६न) इट्टिमा द्वर म्यायायाया से देश हि हि हि मि मा द्वर मुहर वज्ञवाराः श्रुवाः श्रुव्यञ्च प्रज्ञान्य स्रिक्षः श्रेष्ट्र वित्र इस्र स्रायः कुः सळेत् वितरः परः बेरा गरःक्षरःवग्रह्मासेर्'र्'ग्रॅरासेर्स्स्रेरसेर्मा व्यमःहरःरगः न्नरः ज्ञान्यः यं विष्टान्ग्रामः नुः चतुन्यायः यः यः यः यः चङ्ग्रीमः कुन्। कः ज्ञायः के नः वर्चूरःभ्रम्भाग्यार्गेरःद्रीःद्रम्भाग्यंदरःगान्नेयःग्रीयःसर्द्राःवदेः क्षेप्राक्षातुरावर्षाप्रयारम्यारम् सेवे से में विषाणीयायाय जुमान में प्रीप्ति ।

श्चेन्याम्बर्निन्यमः हिन्यिन्य स्वाप्तिन्य स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स न्गर-तु-वाद्य-वार्भ्भर-भ्री-इस्रश्र-श्री-व्यवा-तु-वर्श्य-द्रस्या-इस्रश् ग्रेशके निर्वेष्ट्रम्थ के निर्वेष्ट्रम् विनयः द्वार्यन्तरः स्मान्य स्वरेष्ट्रे ग्रीसास्यासा बुदानी सहदारा स्वाराप्या क्षेत्रास्य द्वीता गिरुराया त्रुवारार्थे राके वर्षा द्यायदे के राग्नी वार्षद रास्त्र स्व क्षेर्-रु:वस्रारु-रम्बित्रायानर्सेन्वस्राक्ताःसर्केन्यर्सेन्द्रास्त्रेन्तिः बुर-पाठेगान्ध्र-तुर-श्रुवाश-श्रूद-द्या-ध-तुर-वश-वीदश-विदश-र्रिते श्रमः बुरः मर्से ग्रमः श्री सः श्रेतः गर्देरः हिरः न विग्रमः भेरा न न प्र म्राम्भे मा बर मी भ्राम्य रायमा त्री रायमा स्वीत राष्ट्र के पा चूरा

ब्नसः इत्त्वान्तरः स्वान्यस्यः स्वसः स्वाद्धः स्वसः स्वतः स

यबर्द्ध्याश्चर्यश्चरक्षेत्वर्ध्वर्धः स्ट्रिस्य स्ट्रिस्

श्रुभाम। अत् गुराक्षरभाग्री मार्थर श्रुमाभाग्रीभाम दुर्भाभु ने मार्था नर्रः केवे वेषान्त्रा वर्षे में से सार्षे व न्वान्त्र वर्षे स्वाप्ति स्थाप न्तुसः सूतः व्हें दसः विवानितः वदा । वहुरः तुरः गान्सः सदेः देवः वेवः गान्दः नकुर्वे क्रामित्र में निर्मा क्रिक्ष क वयः धेंद्रभः ग्रीः द्र्यायः क्रेंद्राक्षे सासळ द्र्या क्रिंग्न सामें द्रिया सामे द्र्या सामे साम कुर्वर मुद्री भ्रिः वाश्वसः वाडिवा हुः द्वार विदेश स्वीतः मेरा मुद्रा स्वीत्रा विद्यास्ति । रे.चॅर-उत्र-रे.सस.सॅ.बेया । कु.पहेंत्र-यर-वॅर-प्रविष्ययायस्त्रीय सूत्रा नेन्। विवयनभूषाम्यास्त्रियासेन्य्याये सूटार्याया। विषयायायास्यास्त्र सर्वेदेः क्रेंनर्अः स्वरः प्रायः चित्रः क्रिंन्य । श्रेन्य देन्य स्वरं स्वरः स्वरः चित्रः निवरः निवरः येग्रथान्त्रशास्त्रशास्त्रवित्ते त्ये निष्ठान्त्र । विश्वान्त्र निष्ठान्त्र । विश्वान्त्र निष्ठान्त्र । গ্রী:স্কর্মান্স:মত্র বি

नैवृश्चनश्यवे भ्रम्

ने भूर में दाया शेर् शेर् शेर् शेर्या वाया विस्व शंशी भीर हा के दारि विषय । इस्रायमा देव श्रूद्राया दी श्रूद्र में दि निवास कर में दि दुर्ग सामद्रा याप्तराष्ट्रितुः सळ्दान्दाः ध्वाप्ताः विवा चुनः वरः श्वेरः न्ययः येवासः देदः दसः वब्दा ब्रे.भ्रेम बर.भ्रेम बिय.क्र्य.ग्रे.भ्रेम.(६०व)र्टा.वाश्यायश रुश. नविवासी स्वराष्ट्रेस स्थापात्र विदासी सामा प्राप्त विवासी सामा प्राप्त विवासी सामा प्राप्त करा विवास करा व ग्रीचेर्यान्त्र्न्याचीयार्वे द्वार्या के ग्रीस्टर्स्य विग्रामी ख्रयायायर्गी ख्र रात्र्वाणी भ्रदाद्विवारा विवारिवा स्वाया ग्रीया विवार्य स्वाय शु नरःग्राम्यः नेदः ध्रान्यः सङ्गः से हेते छुत्यः न बुदः नः सेदः न उतः सुसः रेतिः वरः र्ह्मेव सहिता दे हिर्ग्ये न कुर्ण्य स्ट्रा क्रिया स्वास्त्र स् सक्ष्याम् अभ्यत्यान्या विः स्ट्रियः नद्यः म्रीः क्ष्यः स्त्रियः नुः स्त्रियः । यक्षरामुक्षःम् । स्राक्षेःस्रिन्। नगरःम् नाम्यः मुखः यक्ष्यः मुक्षः विनयः वः यातुयार्यायाविर्याया सेत्रश्चर्या शे हिंदा द्वा कु सेवा वी वि द्वा द्वा प्राप्त क्रियार्स न स्ट्रिं न सार्स न सार्य न सामा है सार्ची साहित सदि सुद सर्के न हिं

यन से अर् अर्थे : क्रेंट्र क्रिंट्र क्र र्श्वेर्रायमान्त्रीर्हेटार्टा स्वामात्रम् स्वेतार्यास्यो स्वेतार्यास्यास्य स्व.शट.स्व.शटव.यचरश.स्थश.संदश १८.श्रेट.यश्व.वर्गेय.स्व.ह्ट. न्यें न्या महेर क्षेत्र गुत क्षेत्र स्था नक्ष्त्र या निरहे थे। यगुरःभ्रुः यर्केत्। भ्रिः रवसः वर्षुः वासुसः वरः तुः से रवसः वह्न्य। विसः यदे स्टान्स्र नवर में सहित दे द्रा में त्र सम्मान के दारी के सामे निष् न्नो प्रमुद्रम्स्य स्थाप्र स्य स्थाप्र स्थाप्र स्थाप्र स्थाप्र स्थाप्र स्थाप्र स्थाप्र स्थाप्र मुवामी में नामान में नामान में नामान में नामान में नामान में निया केव विषय श्री देव केव श्री अ से हिंगा (६१व) गहिंदा व्या दसर कें अ है। क्रैट.सदु.स्ट्रियश्रुःश्रेयःर्य.च्रु.स्या.द्यायद्यायाते.स्यायस्यास्यायः द्धयानिवर् नुनेन्यते यन् यान्य वाया यन् रावर् स्था सेन्यते यान मदे समय मस्य राज्य निष्ठे व नगुर सु व से द राज्य सि राज्य सर्वे। क्रिंश हे 'नर्से प्राचायायाया क्रिंश हे 'दें र क्रिंत र स्वारं र स्व नवर्याया हे द्वो ५५, त्वुव श्रुक द्वीं व द्वां व द्वीं व क्वाम्बुर्यान्त्रीर्यान्ते रामा क्वित्यार्या प्रति प्रक्यामान्या विमान्त्रे या स्यूरा है। वस्र उर् सिंदि पर्नो पर्व यात्री सार्या निस्तु रेप पर्व नस भूनश नश्रात्युनः हेते हें त्रिंद्रात्युतः कुश्रानः हें राद्यायात्र्येरः नवर में प्येत बिरा ये केर केर के अरहे र नो यर्त मुन के के निमानी सम्भाषा सम्पार स्थान स सर्वायियात्रः स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्रा स्वायात्र सहर्पित । स्वाप्त । स्वापत । स्वाप्त । स्वाप्त । स्वाप्त । स्वापत श्रुम्यार्देम्यवम्यवे श्रुयाधुयाश्रीय । गुरुवावम्या मेर् स्नुवार्टे हे। यर्छे भ्रेशमें हो भूण मुया सळव निर्धा प्रमा निर्धे कुर द व्या में रिष्ठ नवर प्रशाद्या या या प्रतिहत्या व्या सुरा सके दा ही । ब्राया या प्रतिया या यन से या ग्री प्रहत्य या प्रया गा ग्रावर है। देव हुद्या ग्री हैं द द्वें व सहि। रमयाध्य साञ्चा प्रते स्राम्य स्राम स्राम स्राम स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य रस्यानर्सेन्द्रस्यासेन्नो न्द्रस्यहेन्धेन्द्र्रात्र्वेयाने त्वस्याध्यासेन् ब्रुश्यःक्तान्त्रीःचल्द्राच्युवायःलेटा हत्वाः श्वनःचस्र्वः इयः मुखः मुः (७१न)नस्रसायनुनः हेते हिन्द्रम् न्युः स्रामायनुन। सास्रस्यासर्हः श्रुभः हें हे अ प्यत्र ग्रुट्य स्वित् विता में हें दान बुद बिद श्रुव स्वाद्या द्या वी द्वर द्वा वा नेवा शहे शवा द्वर व कु द सु द के श ख व श व द व द से द यदिर हेर द्रेव रहन थी हेल यदिर अहर वृग्य कुया कुया अहत शी अ १९८ रिंगा मी हिंद गाविश शु गव्या शवस्य निर्मा में कुय सिम् हे या गाडे र न

श्रुचीश्वरचि.वचश्राजी.वी.च.तात्राधिश्वराचराचीश्री गीय.चवराराजाश्रेशाई. हे के नहवर्ता देव लेंद्र हे चित्र अपना देव लेंद्र हे अ हेंद्र केव यदिशाग्री त्यशाम् शास्त्रीं याद्या प्रत्य शास्त्र यादिश स्त्री वा स्तर्भ विश्व स्तर्भ स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्भ स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर्य स्तर न्युरःमी वह्याः श्रें अयावि अया व्या न्या र या र प्रार्थि सुव से हि से या अ ब्रेयः प्रदेश्यम् त्रम् अः देश्यम् वर्षे म्यान्य वर्षे वर्षे । ग्वित्र इस्र र द्वे र विवा न सुत्र प्रे सुत्र स्ट सुत्र वी प्रित्र सुत्र स्ट सुत्र सित्र स्ट सुत्र सित्र स्ट सुत्र सित्र ब्रेख गर्दिर हेते विरायद्य गर्येया नते हो दार्ग यह । या ब्रेन पर ब्रें कुर ब्रियाया-श्रान्यया-यव-पि-त्य-सहन्-ता-इसया-क्रिया-बेटा ने हेया-श्रुव-श्रा र्वेट्स श्रुम्म नेम्या मह्द्र मक्रु द्रिस के त्र स्था श्रेत्र परे म्य द्रा मा षरश्यान्दा विन्यम्भुवान्गीःगुन्रह्मेंद्रवार्यःश्वेद्यान्नेम्यवेद्वे नवि'वर्डेन्'सर्क्सेंस'संसे हिंगासन्व उत्ती विग्रस्य स्थान हैन्स स'व्याव विगामी अप्थेन इस्रायम नर्सेन प्रायानहेव वस्र सुन किन स्वार स्प्रान्सन यविशः निरः ग्रुवः पदे द्वरः श्रुवाः गुवः यद्विवः श्रूवः ययः द्वयः वयः यवीवः र्रे ध्रम दुम पदे महिं र के द भी त्य र श्रुर र यह द पर महे दा द यम त्य र यहिशः क्रेवः याववः ग्रीः नवनः यो शः श्री रः य क्रेयः नविशः शः श्री हा । श्री रः ग्रीवः

वी तह ना क्षें श्र अप्याप्त प्राप्त प्र प्र प्र प

हे. येट त्वर वेट वर्ष त्राची श्रा कुर कर विद्य के स्था के स्थ

यार्भून में र्रोग्यार देवा ए न इव । इस्या के व की यार्थ यार्थ यार्थ में र मी कें राष्ट्री मुर्ग कें ब्रियानद्वम्या ने हेन्या श्रमानाश्रम (११न)यमा के न कुर ५ न स रादे.रा.श्रूयश्राक्षुत्र ग्रुवः हेदे हें र सरदाद्यरश्राद्य र तर स्वरूपः प्रदार प्रवर्शः प्रदार प्रवर्शः प्रदार प्रवर्शः प्रदार प्रवर्शः प्रदार प्रवर्शः प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शः प्रवर्शे प्रवरे प्रवर्शे प्रवरे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवरे प्रवर्शे प्रवरे प्रवर्शे प्रवरे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवर्शे प्रवरे प्रवरे प्रवरे प्रवर्शे प्रवरे प्र नुषा हे नुरक्षे नक्किन है हिये मुख्य निष्य मुख्य स्वाकित मा नहना नग्रः भेराद्मायान नद्भास्य महोत्र त्रा होगा मदे हे से हिससा सु म्रम् वाद्धरःरवाः न्वरः वहेवाशः वावाशः श्रिकः स्वः ग्रीः र्रोरः इसः धरः लर्श्वास्थ्रान्यात्राचे वाष्ट्राच्या के वाल्या श्चित्रप्रित्रस्वर्भात्रभ्रेत्रत्य। कुलार्से महे नित्रस्य वर्मा क्रिर मश्चित्रम्र द्रायम् राया दे हित्र विद्या हे गुवर् वाद में या सकेवाय र्नायात्रश्राश्चुत्रप्तर्थ। पृष्टेवेप्तर्गेत्शः क्रुत्रप्तदेवाशः सेप्रसेप्ते विः कुर्गी:रर्भेशर्भेगा:इरश्रायदे केंगार्श्वेरासुत्र सुत्र सुत्र सुत्र स्वार्थ प्रश्नेत नर्डेशःग्रेःहेंग्रःप्रायदःनुः यद्ग्या युग्यश्चादेशःयः इसःन्धेंन्ग्रेःह्वें त्यमः सक्रिया मुन्या दिन ग्राम्यया क्रिम्ये स्थान स्था

देखाश्रमार्श्वाचात्राच्यात्रमा श्रमान्यात्रमात्रमात्रमात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्य प्रतेषात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्यात्रम्

केत्रसदिः वत्रसदिः कें सन्दर्भिराची सन्त्रम् सन्दर्भ ने स्थास्य स्वर र्रे.ह्। श्राप्तय.क्रुव.ख्र.च.तक्क्ष्म क्षे.क्षेत्र.त्रच.च.चाश्रीश.त्रया चर.स. ग्रम्थाः स्वाप्तिः सः स्वाप्तः यहरी द्ये.स.ल..चेश्रास्यरत्त्र्यांगीयात्री.याद्यःत्र्यीयीयाद्यः नश्चित्रासदे इद्वास्या वृग्याने स्व अन्तर्ने समाश्वरा गुराया ने पर ग्रम्थ उत्री वें र्या शु सरद न्या वि श्रें र वे तु न इत् श्री य र रायः नश्रमाध्यात्रमाद्वात्यमानिर्नित्रित्रहेर्स्यम् द्विन्द्रम् केत्रस्य ग्नु बुर सुर ख्र रायायगाय वर्षे अयथ। देर ग्री असी वेंद्र थ। बार्ने र ग्री ध्ययन् नुस्रिके ने मार्था सुके रहें कुषार्थे कुषे से कुषे ने मार्थ से स् ॻॖऀॱॾ॓ॣॺॱॺॱॻॖॱक़ॕ॔॔ॸॱय़ॕढ़ऀॱढ़॓ढ़ॱॺॺॱॸऄॕॱॸक़ॕॖॸॱढ़क़ॕॱॸॱढ़॓ऀॴॱॲ॔ॸॱय़ॺॱॸ॓ॱॸऄॣॕॱ नरःविश्वास्था द्रसःश्रयःश्रेरःर्श्रेद्राच्द्रनःन्नन्त्राःन् मुद्राद्राःन्यस्याः नगुनान्यान्यान्यायान्यम्भानम्भवान्यान्यान्यम् विस्रयान्याः ग्योर्स्स वर रु. द्रम्म अर नित्र अर नित्र रित्र नित्र के तर्म स्तिर रे वहें दर्शी अभे 'दग्र-'चगुर्या'द्र अप्यद 'डे या' वें द्र 'तु ' वें द्र अग्राद 'ह 'उद ' यदियाः क्षेत्रः कुः चरः चैरः बिरा श्वरः श्वाप्तवः श्वेतः क्षेत्रः याश्वरः ग्वीत्रः वार्षेत्रः चीत्रः वार्षेत्रः म्.थे.त्रार्यायाय्या भियाम्.वेशासंत्राया यतिषु.वेयातारटा व्यापक्षेत् नशे वनम् केनश लेख ही शेट मे प्टर नरुश हे श्वर् प्र मे प्रमूर पर

रेव में केश सूर्य प्रते भीट ग्रुप्य विव वर्ष सुर्ध क्रियर में द र जिंवा

र्स्न निर्मेत केत में श ही निर्मे हैं निवा है निया के ना न सुना श नेरः सरः धरः कुषः रें रेसः सरः नक्षस्य वः श्रुः गर्वा, पुः हें हे वे हे सः धरः। इस्रश्रमः श्रेवः गरेवः सदेः वें क्रुरान्दः वे नगरः सरः गहनः ग्रेः वें क्रुराः गहेशप्रे प्रमान्या प्रमान्य क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त विस्ति विस् नर्व भी न्ना अहं न नमय कुर्ने ने राषे वा मारा अर्के वा वी क्या वर्जे राजन र्रेवि:गुन:मवे:हग्रमाह्य, इत्र नहेश ने संसं र्येट नवदः ग्रुम्य स्विदः दर्गेविः रैग्रथं उद विग्राप्तर हु रविश्रासदे श्रुशं द्रम्य ग्री हैं है द्र र रेद हे दें यहिरायया यहरकुःयर्5्वेत व्राच्यसङ्ग्रियायास्त्रियायास्त्र ग्रेव मुंश सूर्य प्राम्य प्रम्य प्राम्य प्राम प् श्रेया ग्री त्रा मुना क्या क्या क्या स्वरायया स्वरा स स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा मःसेटमे ।

न्यश्रमः श्रीमः व्याप्त्रः स्ट्रास्त्रे स्ट्रास्त्रः स्ट्रास्त्र स्ट्रास्त्र

त्राह्मःवज्ञुनाः नृदान् । हे । नवे । नाधुः श्चेनः श्चेनः अविमः । नुन न । वर्त्रेरःग्रवसःमें रेर्द्र् श्रुर्या ग्रे स्यायह्र् त्वयायात्र स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्वाप्तर स्व नश्रभूतः हैं से श्रश्रुं दानि हैं ग्रश्रभुष्ट । यह स्वार्थ । वनावःविना हो अः श्वापदः धोवः वेदा धिवः हवः र्ह्वे अः श्रेः श्वार्थः हो स्वाययः वः न्द्रम् हे देव छेव पहिषा वदेव नुष कु न्द्र ल्या पा कु न्द्र है व न्द्र व न्या कु श्रमाधे ने महें है। देश मध्य द्वारा मियर हे सि से हैं दिया है प्रवेश मा याश्रश्रात्रे विवायश्रास्य स्वित्रासर्भावर त्रवा न्तर विवाय स्वाय स्वाय स्व व्रीवास्यार्थाः व्याद्याः व्याप्यार्थेषाः प्रिवार्थेषाः व्यायाः विवार्धेषाः विवार्धेषाः विवार्धेषाः विवार्धेषाः नन्गान्मयायिं स्परं के की अभान्त द्वास्या सुः सुर प्रदे रहत त्यसः कुः क्ष्याल्यान्या नार्यराष्ट्री। ध्रम्यान्ति हिर्मान्या स्याने हिर्मान्या नगुरःनशःसुःसुरःमीःधुःयदेःह्रसशःनतृत्य देरःदर्गेदःसः श्लेषाशायः सः नन्ना हैं से सकेया से विना प्रनाति का प्रमास्य साहें हैं माना साम प्रमास इं त्यर्य निष्ठेश विद्या ध्या श्रम्भ निष्ठा श्रम हैं स्वर्य स्वर्य स्वर् पि.श्रेयावेश श्राचित्र स्याचेया यह यो स्याप्त स्था स्थाप स्था स्थाप स्था पिट.स.ब्रे.सर.ब्र्या.सश.संश्वापट.ब्रे.सर.येयोश ट्र.ड्र.स्यर.ध्रे.क्रेटश.श्रे.

र्येग्'रम्भ'भूर'ष्ट्रर'नर'म्यम्भ। सकेर'मिहेश'ग्रीश'मिख'ई।र'गुव'र्माद' मित्र सक्षेत्र हें हे कुषा से रामार्श्व हैं हे प्यत्र साया सुरु हैं राप्त रामार्थ सुरु है राप्त रामार्थ सुरु है रामार्थ सुरु है रामार्थ सुरु है राप्त रामार्थ सुरु है रामार वेशन्त्रम्थायदे द्वाप्तर्भेर्यादर्भेर विष्युर्वे स्वाप्तर्मित्र विष्युर्वे स्वाप्तर्मित्र विष्युर्वे नमा दिर्भे केत् कुल रिमायम्य नमामेर पी गार्थ स्वाम हे सुत (६८२) इरमा ग्रम् वरमा साममा ग्री सहर ममा न हुता है सामे न मा देवे श्रभःर्द्रमः नगः भी भावनु अपद्राम्य स्वेतः केतः क्ष्यः प्रमः ना गिर्देशः यथ। अपितः केव्यान्यवाय्यवाद्वत्यायीः यात्राव्या श्रुव्यः यहः यहिषाने वित्रां केरः र्शे स्थर वर रादे सूँ सारा सर्वे सा नगाय न मुन्दे र रेत रें के दे वन के सासर र् म्यायाय विद्या श्रुव श्रुम्यायाय प्राप्तेय स्वाप्ता प्रवेश स्वाप्ता प्रवेश स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वाप सक्त्राविशामी न्यास्ति । त्रास्ति । याश्वराम्बित् तु न बदारी द्रान्य नियान स्थान मुद्रियाम्य मिद्रा शे दुवे विनय या पुराया हिन्य मारेव ही पार्थे या हिन्य मारेव ही स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप नगवः र्ह्मेन् ग्री नरायशास्त्र देशासरासहित द्रिन स्त्रेन स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र शे. हु. नर्डे व. ट्र. न बुट सदे अन्या न्यमा ने या नर्धे म्या सदे नर्भे र म्या पर यर र् जुर्य गुर्दे स्ट्रेस यह सुर न बुर विरा र्वे द के द र न र नर्हें व श्री अ वि नर्क्रे र न इ न श्रु अ श्री र अ न श्री र अ श्री न हे ना स र अ

ग्री से खेदे पद्मेर न त्या ही साये न सर्केर साये रहा रहे वा निव न रहें साम स् क्रॅनरावर्ट्टेर्नी:देवारायराश्चेरायदेररासूवेर्नितकेत्गुरःशुर्नेर्नि नर्यस्त्रार्थ्यायाः श्रीयायाः श्रीयायाः श्रीयाः व्याप्तिः व्यापतिः व्याप्तिः व्यापतिः विष्तिः विषतिः विषत इ.च.क्ष.येर.वैर.चन्ना भु.धेन्ना वाबूच.येन.श्रुट.चग्नेन्ना वाबच.यमन यत्यम्मी रुष्यान श्री अपने अपन्य मान्तर प्याप्त पार्व राष्ट्र अपने अपने स्व श्चन्द्रत्वत्रशः श्चें श्चें त्रान्त्रत्वश्चाः स्वतः देवाः तुः वर्षः वार्वितः तुः मुखासळ्या गुराद्यायद्रम्खानबद्या वसास्रावयः देव छेता द्रवदः धुवाः रेव छेव दर नवि हुर न इसस ग्रीस सुव स्र रेव से के दर में रास से (६५५) हुदे विनय पान नुगया कुष श्रेन श्लें र नदे र्से द रेदि गुन स्थय र्वेट्र अदे द्वेट्र अप्तर्द्य स्वर्ष्य स्वर्ष्य म्या गुवर्द्याय द्वार मि स्थान्यवाद्भित्रवाद्भी वर्षेत्वस्थान्यवाद्भी सर्यास्या न्गॅबर्डेगर्नेबर्डेबरविरवह्नम्या न्ययावर्डेम्यवर्धेयाळेयाविर ग्रभरः अपवे विवयः वात्राम्या १८ श्रूर् वय्याद्युवः हे दे हे र द्वितः न्ता क्षेत्रासुन्त्रयान्त्रें तायाङ्गेत्रायशन्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा यश्रीवर्रो प्यानीवर्षे १ वर्षे यन्त्रो वर्त्र ग्रुव द्राया स्ट्रिय स्ट्रिय प्रिया स्ट्रिय प्रिया स्ट्रिय स्ट्

यदे देट खुन्य राज्य राज्य व्या वयस हे द गुद्र सहिद नुदे सुना हो रा <u> ५८. श्रेचा. स्वाया पश्चित्र सदी न या पश्चित्र पश्चित्र स्वार हेत्र</u> गन्न इन्या गङ्गार्यस्य मुर्गार्थस्य मुर्गार्यस्य मुर्गार्थस्य मुर्गार्थस्य मुर्गार्थस्य मुर्गार्थस्य मुर्गार्यस्य स्यार्थस्य मुर्गार्थस्य स्यार्यस्य स्यार्थस्य स्यार्यस्य स्यार्यस्य स्यार्थस्य स्यार्यस्य स्यारस्य स्यार्यस्य स्यार्यस्य स्यार्यस्य स्यार्यस्य स्यार्यस्य स् यःगित्वार्य। हिन्दार्यरः वृदार्शे निर्मेवः केवा रेवः केवः वीदार्यये ख्यारायिका ग्री अह्र पा अवयर्ग श्रेया निये वर हिंव अह्र वि वें प्री हिंव में रिया स ठव्रक्तुव्यस्यव्युद्द्रप्तवे हेव्यवेषा ग्री दे विवेष्यद्रवश्रेषा द्रिष्ट्रप्तर स्ना हेवे नड व हें द स्वेद र्रेट हिर से प्राया नु वर्षे राया से नुराधे न नु न्वायः ध्रवः इयः धरः कुषः नवेः क्षेटः वयः क्षेयः हेः वः खः यः येवायः यः कुषः यक्षव्यान्वर्द्रया गुनेन्र्यस्ग्रीः भ्राव्यान्यम्भवर्यदे के या सहराम्यार्ने सहें हे के नहता सुन्या सुन्या भेगा से सार्था है से सिरा हे सार्था यद्र त्यया र्क्ष्याया प्राप्त नहेव वया कु विन हेर नक्ष्य प्राप्त मुन्य स्व मश्रान्यम्। न्स्राकेत्रास्य अर्थेत्। न्या हितायः (६५न) कुः सेन्यमः न्व्रस्थावकराम् क्षेत्रस्य स्थाया निर्देशस्य स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया थ्वर्नेशः भ्रेयान् ज्ञान्यायायावयारे सेयायर यहन र्नेर हैं हे के नहन न्नरःग्रम्थःयःवर्द्धरःम्बर्थःश्चःसकेर्ग्यः।वन्यःयःमहुम्यःद्यःनगवः

स्यान्यां केत्र स्यान्य स्थान्य स्थान

नहरःवर्गामा वर्रे कें रक्ते कुर है वर्ष विग हो र ग्रम हिंद रहा व्याप्त विग हो र यशर्देशसेन्यश्(६६व)र्स्नेनान्यनःग्रीःवनाने।विवशक्तिनासुन्नः र्शेग्राम् मुलार्भात्यमार्भेदार्भागार्थि र्सेट्रा र्थेट्राम्यार्थेदार्भायम् अर्था ग्री कें अर्थेर अर्केर ग्रिक अर्थिय अर्थ ग्री अर्थ वित्र में दर्गित अर लिय ग्री वित्र में नरे भुरित्री दर्भाव माय वर्षे दर्भाव माय प्रमाय स्थाय स्था स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स ह्रिण्यायायेराग्रीयायदी पायदा हिः संज्ञायाययायया मुखासेदी पार्वेदा मनुद्राचरा गर्रेषापानर्वेषाद्रशाक्षरायानुद्राधराहेराह्मेदानीयाह्यर नहुन्ते। न्रें अः गुनः श्रेरः नरः गशुर्यः यः निवेतः हैः यः गडिनाः वः हें रः नहुः गशुस्राञ्चरमा न्तुरुपार्वराची केरसानन्या सहन्त्रमा मुस्राप्तिम् क्रूॅन्'ख्र-स्नू र्श्रिम्शः श्रुम् गु'सक् रेत्या निवे स्राया स्राय सर्गेत्रमें। के न्यर या निस्ति हेत् हेत् के यहत हमा स्था पहित्रमें र यदे श्रुग्राय यन्न्याय प्रया द्वार्य स्त्रित स्त्र स्त न्मवावर्त्ते स्थून में विना क्रिंदावा वा विनामें विने वा वा विनामें विने वा वा विनाम चूतुःर्यरः श्रीयाः क्षेत्रः च्याः मृत्यः च्याः म्याः म्याः म्याः म्याः म्याः प्रमायः प यगाः इसानि वेते वि सके गाणिया कुराना पर इसानि वि नि स्थानि । मदेर्भ्यासुरम्यार्द्धमार्यमार्भरम्यार्थः मुम्बर्मास्य मुम्बर्भयः स्वर्भः मह्म्

अकेट्रान्त्रस्थायाञ्चात्रणाः भेशाद्मा कुशाचीः स्थार्थः देवः प्रेट्रान्स्य या स्टि र्रेर निवेश सर श्रेश र्हेर निर्शेत व्यय दर क्या रित क्या निर्मे हें गिरेशायमा गिरेतास्याम्यारेशाम्या विवासियाः याद्वा त्या सम्यान्या समिता स्वा शुन्दरक्ष्विदा विद्यास्यायम् स्त्रात्रम् स्त्रम् स्त्रम् र्देव-८८-अश्रुव-भवे-अविश्व-भवे-८वट-सॅ-८भव-विट-व्ये-४-ववे-५८-५-१श्रुव-श्रूट्रस्तर्रः द्रेवा सद्याव्य अध्यव (६६२) द्रवा त्या स्वयः द्रुट्रस्तरे स्वयः स्व राद्रःक्ष्राश्चीः नर्गेः भूषाः सुषा वाद्यरः प्रवित्रः नदे सुन् स्वायः स्वारः स्वारः स्वारः स्वारः स्वारः स्वारः निट्नी स्ट्रेट में स्ट्रिट विवास है। स्याप्य स्यामी स्यामी स्यामी स्थापित स्था मदे-द्यदः धुमा केव से र शुरा केंद्र न से दे हैं से से द्या द स्व से स श्चिर्निया नियार्या नहत्री सुयाश्चिरिके प्रारम् सुया नर्भेन्द्रस्थाः क्षेत्र्याः श्रीः कुषाः भी के न्वन्य नर्भेन्द्रस्थाः नक्ष्र्रः वहेत्। गृह्यः ग्रीयात्रयायाति ते रातुः या भ्रीट्याया भ्रीरायर त्याया वाध्ययारे राळ्या मदे-द्रम्-भूयाग्रीशः र्वेन कुषाः कु से दे हे दे हिंदा सदय विनशः द्रदान स्थान द्या. ध्या श्वा र्या श्वा या श्वा या या श्वा या या स्था या या न्यॅव नै में उ वदे मुग्य भुव गित्र मूंव के य न्य दें न ने म हैं न

नक्षेत्रत्रभा अप्टिन्द्रन्ययाची देखा ने ना अर्केन सुन परि वर्ष के निन् निराधित शुरानकु मा नियान्या मी मिराधिया । शेस्र सिर्दे प्रायार्थे इससामर्नु निवेदसा वर्त्युगान्सा सुवार्यदे सुग्तुन सिवेद रमान्यर हेर नुःश्रेषाश्चान्यःयःनुःश्चानुःनुन्यह्न। नुगानःश्चिषाशःह्निषाश्चानिशः यदे के अप्यान्यव में अपवाद वर्षे वे नगद क्रें व क्रें अपवक्ष निर्मेश अन् ग्री:र्र्ह्मेशयार त्ये दुः नक्कुर प्रदेश्केषा निष्ठा व्याप्त विष्ठा नहीं विष्ठा निष्ठा विष्ठा केत्रस्रेने नित्रवादाष्ट्रवार्शी अरामा के या है व्यायावर कुषायक्त वेया रेगा प्रदेश्याव्याया सार्हे द्याप्रदेश्याप्रयाप्ते सुव इद्याप्य से रेजिं वरे केव्रसेर्षिस्यास्य स्वरसेर्य स्वर्या स्वर्य विष्य स्वर्य विष्य स्वर्य स्वर्य नवे नमून मं (१२४) हो न्या विन्यम् के मारी हो या में से मिया के न रेंदिःनक्ष्र्वःपःषः अदः तुः चुदः नदेः नगुरः क्षेः ददः सुः तुदः सहं तु कुदः नः यदियाः तयाः हे अः ग्रीःयाबुदः ख्या अः वः अधिवः प्रवेः श्रुवः प्यद्यः श्री।

अविश्वास्त्र स्थान्य स्थान्त स्थान स्

मदेःश्रुवःप्यम्य। वक्रेःसेन्युवःमदेःसेन्युव्यम्यःमःक्रेयःक्रियःश्रिदः नर्व भी भेव क्रिया मान्य मान्य के व कि से मान्य ग्रभरक्रेत्राहें हे हे म्रापाया ह्या पुर्वेत्राध्या देशा गृहेश ग्री ह्या वर्वे राज्ञ । र्वे त्यः श्रुपार्यः न्यः श्रीः अद्ये व्यः नुः अद्या व्यः न्यः व्यः न्यः व्यः न्यः व्यः व्यः व्यः व्यः व्यः व्य र्वेन:मश्राक्षेत्रीत:इत्:दुर्विय:तुर्शामदेःस्र शुः क्षेत्रशः न्नदः धुमानी स्रुत्रः सः के विटा भूगा हे त्य लुग्राया गुर्ग्य विटा भूग्या भूग्राय क्या गुर्ग्य क्या गुर्ग्य नवदर्भूरः इस्रयः यः क्षेत्राः वेदा विषादग्रारः यः क्रवाः यः श्रेत्रायः वेदाः क्रव्यः न्दः श्रुवाशः हेते दें सळ दः हुः भ्रुवा तुः छे। सेते वार्वे दः यादि । पदा देवा या वहेत्र प्रवे न्वर धुना वरे हेन् ब हें र कुल में नाईना लगा वहेत् ही हो नदे सबद संभित्र प्रमाणमा ग्री हमा प्रमा भ्रीत पदि सबद न हुन। प्रज्ञ दिन ग्री मावयायमा इटायिं स्वाय विमाय क्षेत्र देव केवा र्रोदे म्हा बर विषा बर वा कर विष् व राजार वे व राजी वा विर विषा वा श्रीर नःक्षेत्रःस्रमाः हुःस्यानमा क्षेत्रः निषः स्रितः स्वान्यः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्याः स्या (६४न)ग्रे क्रेंन्य सहन्यदे वन्ने प्रतुराव वर्षा न्तु कुरावी या ग्रास्थे यर्देव-शुय-५ सहिव-सदे-चगाद-सुत्य-हैं।

गड्र-'ते बुद र्सेट नदे गड्या अया इससाय हैं र्सेस पर्निमर

इसायमःश्चित्। सर्हेन्श्चे दानकुष्यते प्रत्या के स्वायमःश्चित्रा के स्वयमःश्चित्रा के स्वयमःश्चित्र के स्वयमःश्चयः स्वयमःश्चयः स्वयमःश्चयः स्वयमःश्चयः स्वयमः स्वयमःश्चयः स्वयमः स्वयमःश्चयः स्वयमः स्वयमःश्चयः स्वयमः स्वयमःश्चयः

नित्रे शे पुत्रे र्ह्में द्वारा के देश की वार्या वारा में जी के वार्या है। र्श्रेट्य नर्द्व श्री नु रास्त्र र्श्वेन इस मिर्देश श्री र्श्वेन स्वापित रिवार धुगाःक्राःकेरावहेत्राव वरासेवे वातुरायकारेका यराव कुर्ना वर्षत्व वरा यागुन्ग्रामान्त्रेषा हित्र मूर्याच्यायान्यः न्टरः भूषाः भी वाहेयः ग्रीयायमः ग्रुट्यः सर्वो व व्याः वी स्थयः स्र नग्रक्ष्राभुद्रास्ट्रिस्स् स्त्रुद्रस्यायायाय्यस्य नुद्रास्त्रेत्रक्षेत्रक्षेत्रस्य न्या क्ष्री गुन्रज्ञान्यायायाया गुन्द्रित्रः निर्मेतः विष्यायाया विष्टेतः विष्टेतः न्सॅन्द्रा कुरावराहेशवरान् र्सेनामहेरासह्य नेशर्वावग्रानेश र्वे रि.सदे विन्याया निर्वाया या श्रुप्ता ह्या सामुद्रा साम्या हित्या सक्त प्रदा क्षामा ग्रायदान्य स्थान न्व्राचार्याचेत्यी क्रुं सळ्दात्त्वयान्य नेरान्यसायसासुसार्येना यानिक्षाना सेनामर हें र कुषा से हिंग्वा से सुर की दुर दुं हैं त्रा कु

अक्ष्य.परीका.श्रामश्रामश्रापत्राका.तीय.री.सय.सपु.पर्टवाया कु.सूर. ग्री:विन्याः हेवा हिःदशुरान शुरान्य राष्ट्राया यावियः (१४व) गाः त्रवार्गरा हिन् ने या रना नगा ने या थे। नकुन निरामक या या ने या खु न नो नगाय र्वेगागवरा नेवेश्वराद्वरमेव छेव नमय नि नगे ह्वेर गहिरायरा छे न'य'र्गेट'अ'र्केश'क्रुय'केद'र्भेश'र्हेट'ट्रिंद'र्ग्जे'यश'ग्रापवट्र। क्रुय'न' र्रेटावाराकेन्सेरिश्चेन्यन्यायी सम्रीयायेन्सह्य स्तर्भा रेसेंद्रयाय स्वर ग्री-न्नेविन्यायनेवयायवे समुवन्तेव स्टिन्य स्ट वशहें से अरम मुम्या मुरम पर स्था देव के त्युव में सूव गुन म म्यायायात्रम् यायाया न्यायाया गुवाद्यायात्रम् यायायाया के न र्वेट्स के वर्षे अर्ट्ट्र द्रेव र द्रेन्स निवा निव्या दे रे वे द्राव के विष्ट नवे श्रुव नन्या सहन ने देया वेदा सवे या सेवा ने विवास या निवास मार्थित स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स दे दिवा रव हु चुर क्षे वाश्वर रव व श्वर शव शक्त शे र वेवा केव श्वर वी र वी । गन्द्राया विष्ट्रिया के साथा साथा मुखा सक्तर मी पार्थिय निर्मेद न्दा ने देवा वेदिया गुव द्याय खेवा राष्ट्र हिंद में व की खरा गाया वदा मक्टेन्स्मरायाविरागानेत्सुत्रात्रात्रार्थास्य संस्थितं स्थाने व्यद्यायाया वर से प्रमेव स्वाय प्रमुद्द से से स्वय से प्रमेश के नशर्मा हुए। कुएनायाकेंश्याहिश्येन्त्रें केशाईएन्स्विन्तीयश

त्रक्षान्त्र व्हूक्षाञ्चरक्षात्र ((१८२) श्रक्षाक्षात्र व्हूक्षाञ्चर्या व्हूक्ष्णः व्हूक्षणः वह्णः वह

निविषागाञ्चेयायान्ना कुयायविमान्चेया देयावामास्मिषागुःस्मि

पविश्वानिक्ष्यान्ते। क्रेन्स्निन्ने क्रेन्स्निन्ने क्रियान्ते विश्वान्ते विश्वान्ते विश्वान्ते विश्वान्ते विश्वाने विश्

वि: अदे : क्षेट : तु : शे : यु : उ अ : वि अ अ : या कु र : यदे : द्या : शु या : यु या : यु या : यु या : यु या : यरः क्षेरः गुः नद्वाया धेवः नद्वाः क्षें नदेवे ख्रयः क्षें नदे क्षेत्र विषयः क्षे न्देविः संनिध्याध्वायत्याम् सुसार्दे स्यान्यायस्य न्दार्दे त्या सुत्या न रेव के वा इर वय यानव न बर में। महिरा मा पर्य र में व निय मा मा सुय रायान्ययाष्ट्रवाळे रार्श्वेटान्टा वर्शेन्यवस्था वद्यया थ्व कें रार्भेर में १९८ श्रूर नश्या गुरा हे दे हें र र र र व र र जा र व र र इट के दर्भेद म्याया अरम्भ में टर अदे विन अरम मात्राया शुक्र स् म्याया अरम ब्राट्स क्षेत्र द्वा क्षेत्र क ब्रेयुदे हें ८ ५ में ५ में भी में ८ ५ मा २ ५ भी अपने स्थान है से स्थान है । र्रे हेश बर देवी पश्चेत दर्ग या है आवत र्रे शाव हैं शाव दे द्या वी हैं र न्ययान्त्र्यः सह्दः वयात्वियायानयः क्रियः है। यास्रे सायवः (६६व) र्ययः गर्डे अर्धि से दुग दुर्ज अप्रायिष्य अर् नित्र । ने हे अर्थे न पायहरा न्ययः श्रीः र्वेषाः तुः न्युनः यनेषा । याद्यः यार्वेदः नुः यावेषः याः र्श्वेदः यापनः नक्षेत्रभा भुःभूतःभूषःमदेःगार्द्धगाःषमा।पदःमीःमुःभूनाः हैं गाठवःगार्थरः हेश विश्वश्र र दिर। वर वर्श्नेर क्षेर क्षेर विश्व वर्ष वेष केर वेश केर श

हिदे निवास हिंगाय श्री क्र्य हिंदा नगः क्रिय स्ट्रा चगावग । निवयः सेदः श्रीयश्चित्रभूत्भूत् भूत्रभूत् भूत्र भीत्र भूत्र भीत्र भीत्य नर्वाया नुस्रयार्केशयोर्मराम्ची नुरान्ते वित्राचित्रेश नुस्रया प्रभान्यान्वरुषान्ते म्बुद्र्यार्श्केत्राय्यान्दान्वरुषान्ते सुत्र नुद्रायर्केतः য়ৄ৴৽ৢঢ়৽য়৾৾৾য়য়৽য়য়৽ঢ়য়৽য়ৣ৾ঢ়৻য়৽য়ৣ৾৽৻য়য়৽য়ড়৽য়য়৽য়৽য়ৢ৽ कर्पानिभेर्ने वेतित्रभाविषाः भ्राचिष्ठाः भ्राचिष्ठभाविष्य रेव्यव्यान्याप्याप्या मुयानारेव्यवेव्स्यायकेन्त्रीः श्रीनाश्चित्या हिंतें इस्रामिश्राद्भारत्र्ञ्च स्वाप्ते विष्या मार्था विष्या स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वापत स्वापता स्वापता वर्त्रामी से क्यम शुरम्य श्रुत्र में त्र से प्राया मार्या प्राया मार्या प्राया भी विषय गडिगा हु ने के। इर के दादा सामदान वर में में र सदे खुर में रासे दिये हैं र र भें न र र हैं न

त्ते क्षेट्रक्ते अश्र स्वाद्य स्वयं स्वयं

वस्रशृह्म ही त्वान्तर वर्षेत्र वस्र मुस्य मुख्य वस्र स्था हिया विश्व वस्त स्था हिया विश्व वस्त है स्थान हिया है स्थान हिया है स्थान है स्था स्थान है स्थ

मुयासिम् हे मानी क्रिं प्रेंन पर्ने निस्म के क्रिंन निस्म के क्रिंन निस्म के क्रिंन निस्म के क्रिंग के क्र त्राना भूगाञ्चनाभानक्तृते वृत्यान क्रिंता हेन्। या भूमः तहे वा हेन्। विभा स्वायार्रे हे चेवा परे क्वें त्या गुनाया नहेया पानी ग्राया क्वें ना निया वयासियः भ्रुवः ग्रीन। देवेः ख्रुकाः श्लीनः द्वारासियः न वटः स्वारी देः वाः ख्रुकः नर्हेन्द्रच्युर्भार्हे है। य्यार्थान्यहेन्द्रच्युर्भा गर्वेन् नुःद्रयार्थानाशुर्थः यथा के.यथ.र्सर.वट.रे.रच.थे.वैटा केट.यथ.पे.रु.चार्याश.पूरे.राषु.लुवा. न्सॅन्यह्न नर्यायाश्रमाम्यास्रक्ताधिना न्द्री हेन् ग्रीस न इससा प्रदेशनगाय में न प्यान स्था प्रदेश हैं गा स मान्य वियाशायवियाके नशा अस्ट्रेस्प्रेरिव्यास्त्रियाके तार्वे प्रवासित्र में नश् नर्जे मुर्थाभूर्यात्र मिं र्वे यायत्त्र मी त्वाया में प्रदे रहे या मूर्य में रावे राव्या नमा श्रूपः भुवनामः रे मरम् मानमा वर्षमः याने ना खुः श्रूमः हैं से र त्रूरमः यर श्रमान्यया थ्रमान वार में। न्यया थ्रमाने में में में साम स्मान चन्नर्द्रा वस्त्राक्षात्रः स्वाक्षात्रः स्वाकष्ठः स्वाक्षात्रः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वाकष्ठः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वाकष्ठः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावकष्ठः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावक्षात्रः स्वावकष्ठः स्वावकष्

वसम्बार्थान्य प्रचारम् वात्राच्या स्वरं वात्रा स्वरं वा स यान्याधिया क्रिया अन्यापान्यया स्यान्य स्वापित्य स्वापित र्दार्द्यायदे म्वर्धेराया भुवया मूर्वित कर्दार्व के वावदा देवया नविः र्वेषाः हे वात्रशः श्रीः वीं स्थान बुद्या संस्थित् स्थाने स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थित इंट.रं.यइटश.तथा दर्श.सक्सश.योटश.ट्यार.स्.क्रंर.जेश.शं.यद्या. यदे प्रहत्य अपावदा वीं दाया शे हुते हुद र हु हैं वायमा क्षेत्र हरें वा क्ष मुया नेरपबरा यनेरनेर्विर(१००न)र्वेग इससाम्रेसरेन सूरसासु नर्भूरक्ष व्यक्षेंद्रावर्भाश्चात्रभुवाने द्रमाव्याव्याव्याव्यात्रभार्मे व षरः भ्रेंतः भ्रम्या देरः मुखः यें यद्या के वित्र मुख्या है। के वित्र प्राप्त के वित्र प्राप्त के वित्र प्राप्त यगारी ह्रा कुषा की हिंदा परिया का विषा है। श्रुप्ते हिंदा परिशाहिता विषा यात्र्ययानित्या हिराहे स्यायाहिरासरार् नहे वाया हे के वार्या यग्।वर:नह्ना

नन्ना केत्र तस्या अप्तान्य वाषा श्राक्षा अप्तान्तु व्याप्ता हैं कें अ

मॅिट्र अर्था श्रे तु मिर्टिट द्वाद खूद हे दे हे द मा श्रु अरह्म अर्थ ग्री दिट द अर न्सॅन्रन्नम्न्न्न्न्द्रःहेर्द्रन्द्र्र्न्यःवेन्।होर्यास्यास्या स्नान्नरः र्हे हे नित्र कुट अ विवा वुर्य प्रया विवाय प्रमाय के नित्र मान्य प्राप्त नित्र नेर-अर-अर-अर-कुल-हेते-के अन्ध्रावर-तु-वतुवाश-वित्वाकेर। वार्डर-र् द्वित्वर्श्याम्यायार्थात्रम् स्ट्रिस्याद्यायात्रम् यार्थित्रम् इसरास्त्रनः स्रे सळ्दः हुराये नाराया चुरा सामरा चुनः रेदः से स्रे प्राचीनः रेदः से स्रे स्र सर्केन् प्रेंत्रन्त्रा न्ययायिक्र वर्षे वर र्यात्रिक्षरार्यान्त्रीर्यो क्रुवार्यायाया मान्याने राष्ट्रीया न्दःम्बाराष्ट्री यावाववीरः मुवावह्यायास्यायविदायः स्वायान्यसः गर्डट मी से दर्भे तिवाल इस दगर ग्री सह द स दि है द के नर सहित् वर्देदे:श्रश्रास्य पह्रवागा (१०१व) विश्वाययाया देदे:श्रश्राद्देव ग्रुपः

में यर्दियाविन द्वी दुरके दार्ग ने यक्त या में भेर्ने र याचीयात्रासामुत्यायळंत्राचीयाहें दाद्यंत्राची त्ययागायात्रदा केंयाहे प्रवाद क्रिंदायश्वित्यात्रीत्वीद्रायात्रेत्रश्चात्रीत्रश्चित्रायदेश्चित्रायद्वात्रीयश्चित्यायद्वा रेव में केवे ति नश्चेश रावे नरे नर ग्रेने ग्राय रावे नगवे क्रोग्य स्तु । प नश्चर्म् रानदेखूँ रश्यु त्यु रार्टे केंग्य निवान निवान केंग्य स्था केंद्र केंद्र खा मुयाश्चेराक्रें यानविवार् प्रमुद्यानिया हेया शुरी प्रयानिया श्वेरा स्वा मन्दा र्केशहे मुलक्ष्यमित्र दुर्दु नश्रुव मते स्वार्थे स्वर्धि नवर्यान्ता कुःसर्के नासकेन्ग्रीयाश्चिन्यभूत्याकेन्थेयाकुःसर्के पा वार्वीटा अप्ते वर्षे अप्त अया प्रदेश स्था याववर है। वह्स्यरायायास्त्रेटास्त्र्रायाःग्रीःस्यान्टाय्वासून्।

 र्देर-नवर-कुःअर्ळे वेश-८८-सेंदे-अ८श-कुश-८५०-८ुश-ग्री-पर्दर-सेंदे-वाबिटाखेवाश्राक्र्यकटावाटशाव्यात्मश्राभ्यशाच्चित्राशाहेवाशायाट्टाज्याः धरःहिवाश्रायदे ने किंशामी द्वारा समय द्वार्य द्वार्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वय स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व केव में निया वस्र उर् सिंद्र मान्त्री पर्व मु सर्के मुस्य प्राप्ति स सक्रूर् सुर लेव लेट। (१०१न) हिर् सर ना सर न सामद दर्गे दे सुरा संदे वर्ळे निवे थे नुन्न न निव्योग निवे विष्य निक्ष मान्य निवे विषय ग्री नुवास वर्षा से दारि राय वी सा सु सबद से दारि दि दि राय दा सा सु द सूगारेंदि समय न्वय है। अस सुन र्सेंग्स न्व निम्स सर नहेत्। वयःरेवे नकुर्रेरन्यर्थः वुर्ण्या ध्रेशःशुःरेर्ग्यश्यः ननश्रायदे शः श्रुट्टाय द्वा हिन्या हेना यर शुराही

णरःक्रितःयते क्रिंशःक्रियः सं श्रीतः त्रात्ते स्थाः सं ते स्थाः स्याः स्थाः स

पश्रम्भार्थः श्रुप्ता । श्रिक्षेत्रः प्रक्षेत्रः प्रक्षेत्

क्रमः क्षेत्रः क्षेत्रः स्वति देवे स्वयः स्वता व्या विश्वयः स्वतः स्वतः

दश अश्चित्रश्वा व्याप्त स्वाप्त स्वाप

८गार हैं हे मान्व ५ मान्य ४ में । ८ में व श्रू श्रु मान्व ५ से । हे भे मा ह्या कुया ना श्रु श्रु मान्य । यदी हिन ग्री श्रु मान्य । यदी हिन ग्री श एक कु श्रु श्रु मान्य श्रु । ।

यालीतःश्चित्रं विश्वात्त्रं वि

द्वायामा श्रु दिन्त्वुना तहन्द्वा प्रयाप्त स्वायाम्य स्वयाम्य स्

च्यायाक्षी क्ष्यास्त्रास्त्रात्त्रें स्वायायात्त्रें स्वायायात्त्रात्त्रात्त्रें स्वायायात्त्रात्त्रात्त्रें स्वायायात्त्र व्यायायाय्यास्त्रें स्वायाय्वें स्वाय्वें स्वायाय्वें स्वायाय्वें स्वायाय्वें स्वयं स्वायं स्वायं स्वयं स्वयं

वर्दे हिंद्र ग्रीया वर्षा वया। विद्या स्वीया प्राप्त वर्षे व विद्या विद् गहेशनश्रद्धारेश्वर्यात्रः हेते सर्वेद्वात्रः हुत्या वेष्य विद्वर्त्व भूता श्रेष्ठ ते नार्शेत श्रुव व तत्र श्रामा व तः श्रेष्ठ त्र नार्श्व कुत श्री श्रेष्ठ त्र नार्शेष्ठ कुत श्री श्रेष्ठ नदे नदे इन्न नि न महिमार्दि हु धीव गुर्ग दर्शे नदे प्यश्र ग्री अश्रुश होतु र्वेर नश्रेश्राश्रुम्परन रा ग्रुटा त्रुया रेते त्या ग्रुर श्रूप हुं या हैं या हैं या हैं या हैं या हैं या हैं या यान्वाय विःर्रेटार्नायनाक्षेत्राची न्वायाचित्राक्षेत्राचा विदर अर्शेरी द्वाशर्अःववाशर्अःविद्य ग्रुर्वः मुः सर्वे सुवाःवादः श्रेः श्रेः विवः वृद्या देवायाग्री:य्रया वृद्ध्यया देवे:य्रयायदवा । देःवाय्ययः न्गे र्ह्सेट न इ ने के वा के या कुया न्यया न न स्थित श्रभःरेत्रः हेत्रः द्रम्या द्रवरः ध्रुवाःरेत्रः हेत्रः व वरः स्वा द्वाशः सः व वि द्वरः। न्वार्याम्याम्वयः वे स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं विश्वाना स्वरं

प्रभागुन श्री अपन्धेन प्रनामा विदेश श्री अपना गुन प्रमाय सेन हेन श्री अपना नवर प्रशादर्वे अर्वे व त्यवा श प्रते चुर र जेंद्रा भूर प्राग्व पर्वे र व र्श्वेन'न्रेव'नर्रेव'न्र्यामुन्न्ग्रुय'यव'न्न्'न्र्यर्य'म्(१०३व्) श्रुट्यायायह्न अथि। गुःववाची नुयायायटा हेर्ययविन्वातर सेवायायेन रादे क्षेट्र नु क्षूर्याद्वा त्यवा विट्र नु व्यवाया रादे यावर त्यया कु नक्षेत्र कु र्नेरःग्रीःर्नेरःश्वःसरःमें नसूर्यःत्रयःसर्दि द्वाः तृः क्रुयः नहन क्रुयः नदेः नगदःवशुरःगर्भरःवश्चानःयःनिद्य। क्रेंशःश्चेरःग्रीशःसर्वेःववेःवर्गेः क्वामा वर्तेत्रस्थागुन्द्वावः कुवासक्वा सम्ब केन श्रुवाः त्राचा सदयः नन्गः कें अः शेट वें न् नु मुन प्रान्य मुस्य अया यूरा में अपने में नु के न दिन् बेर शेट वो व्यव्द्र अनु द्वित्र लु वर वित्र हेतु रवे गु विहेर गुर वर्देवे सेट व जुट । अदय निषा कें अ ओट वेंद्र वर्दे जुट की भू कं पीत पर नहेवा वर्त्ते गुर्व मा गुर्द्व मा गुर्दे वा में में ने वे स्था मानव केवा कुलाविस्रान्त्र साम्यास्य केते स्मानम् द्र्भेव श्री में अर श्रेवा

য়ৢ৴য়ঀ৵৻য়ড়ৢয়৻য়ড়৾৾য়৻য়ৣয়৻য়ৢ৻য়৾য়৻ঢ়ঢ়য়য়য়য়ৢয়৻ र्स्याञ्चेतुःवार्देराक्चेत्रा वेदायाञ्चे श्चेत्र श्चेत्र श्चेत्र स्वाद्य श्चार्षाः र्मेर्ने के में अर्च में अर्च क्रिया के अर्च के अर्च के अर्च के अर्च के विषय र्ग गुःकें:न्नरःमुषःम्। श्रूषःनवरःकेंशःग्रे:मुःसकें। गुःर्नेरःनुःमुःसकेंः इस्रायात्रित्या ग्रह्मः भूगः न्यायायां वास्त्र स्वायत् केता प्रायत् । याम्यानु मुद्दा के विकायका क्षेत्राया सुमान्त्रमा स्वाप्ता स्वाप्त यायर.क्र्या.धे.यर्थेयाया सैकायवर.क्र्यामी.क्ये.यक्क्र्यं.यं.यंविका. भेर-भ्राम्थानभूत-वर्ष्ट्यासरा(१०३व) तुःसहर् छेराम्बुर-रवायः यायश्चरः यायाया ग्राच्याः भेयः द्रस्क्राः हेयः बदः द्रयः द्रिंदः यः हें हे रेव डेव नगर गे कुष रें राष्ट्रें कुन खर गे वि नरें व न नक्षेरा क्षर थर श्रेतु गर्देर हे दशर्मे दशरमानी द्वर धुमानी शनर्भे ह नवर में गुर्देश यम्बर्ग ग्रुप्राधिप्रस्ति ग्री विष्टे मार्थे मार्थ प्रमे हिप् ग्राम्य के विष् क्रिंश हे 'गाझ पा हे 'तु टार्के अ' या वा अ' क्रु अर्के 'त्य अर्के वा 'तु 'त्रा आ वा ओ र 'यी ' नगदःदशुरःश्रेशःर्वेषःइदशःश्लुःगश्रुरःश्रुषाशःश्लेरःन्वेदःनःश्रेषाशः क्यान्गराम् मित्रो त्यो त्यस्य स्टान् यहे केन मित्राहे में सान्गरास हें स्र्राम्बर्यायदे स्रमा गुर्ने र तु नग निया निया मानिया सर्वर धर्द्रमित्रवर्श्वरामित्रायास्त्र हैया सुत्रामानिक्याम्य पर्देया वे ब्रेयाश्वान्द्रित्वी वहरायावदा वहरायां स्थायां वहरायां स्थायां वहरायां स्थायां वहरायां स्थायां वहरायां वहरायां र्रे सही कर्ना वर्षेट्रे रेश्व हिट्टि जिन् हिन स्टिश्वर स्टिन् स्टि ग्रीश्रान्त्र्रीरान्ते क्रियाश्रान्त्रा यहेत् हें त्याहरान्य । क्रियान्य अपन्य विश्वान्य विष्य विष्य विश्वान्य विश्वान्य विश्वान्य विश्वान्य विश्वान्य विश्य यह्र वर्षा नविष्या । नविष्या नर्षे न् कृषा या यके न् ग्री ख्रा वरा से व्या यायदामितास्यायराभेययाक्षेत्र्वतास्य म्यायास्य स्थायदास्य स्थायदास्य स्थायदास्य स्थायदास्य स्थायदास्य स्थायदास्य वर क्रिंश नुश्र में तुर्श माने निस्त हो निस्ति में निस्ति हो निस्ति मानिन्। वयास्रावतः कुषारिते स्राया के नहत कुषारी निरा नर्से न्वस्रा गिहेशः यथा के न न न हि हु । कु र न य श्रेया म श्रु सके द ही द में र स र शे नदे न सर दु नुर न र नहेता देव श्रुर श देव प्यें द हैं श द्युर श्रुर र्वेद्र-दुन्यक्षाः भूनमा देवःश्रुद्याः सर्देः नातृद्र-प्रदेः द्यमाः मीः श्रेः नशुः सहरायश्रेषुप्रदार्थिन्यःश्रेष्यश्रेष्यः स्वाध्याप्रविष्ट्रम् । यगाम्ग्राशास्त्राशास्त्राम् भेरास्रे स्रे स्रित्स्रे सित्यस्य स्रित्स्य स्राम्य ने क्रा भी मेट प्रमा के प्रीत मिट सा के वर्षे वे प्राप्त मालु दर्श म्मा के वर्ष भ्रम्या सरम्बन्दिन देव देव नग्न निया के या ग्रीय प्रक्रिय स्थ्र म्या प्रमाय स्था यिष्ठेशः ग्रीशः विद्यार्थः विद्यार्ये विद्यार्थः विद्यार्थः विद्यार्थः विद्यार्थः विद्यार्थः विद्यार्थः विद्यार्थः विद्या श्चेर्-नेर्नाणमार्वे र्नाय्येन र्नायः स्वायः स्वार् केत्रः निर्मामार्थे

कु'र्बे, बिट. क्राका. देटा लर. के य. सर. के ये. हें ट. ट्राय की जारा गायदर। में दारा है। (१०८२) विनय हैं मारि हैं । विनय हैं ने नियं के नियं हैं । विनयं । वस्यासूरागेरागर्रेरासुर्नित्युरासदे विस्राप्तर्गानुस्रा गहन्। इ. लेया बया ग्री या केंद्रा यदे हिंदा ग्री ख्या र तु ख्या युर ग्री या मेंद्रा या केत्रस्य कुः विवाद् निवाद्य अन्या देत् श्रुट्य प्रदे द्यमा मे यापर नवरः नर-र-तु-धु-नशुर-मीश-पार्डिश-धश्राप-धुन-क्रे-नर-नन्द-नश्रा वीद-श वर्षान्यगान्धेवानर्थेन्वस्थाक्त्याधिते स्वेताव्या है ते से मा हे ते से भ नकुन्द्रम्यारम् राज्याद्रथ्वायान्द्रम् विवासीयान्यास्यास्या विद्यास्याम्बेयाकुराकुरादुर्या स्था स्थाके द्वराकुर्वा स्थान्य र्देर्न्यर्थर्प्यते हें से द्रा धुसर् द्राया से शेर् शेर् शेर् शेर शेर विषा दे द्यावर श्रेंद्र युव कुष र्ये अ यार अवश हें र प्रेंव की ख्या गा वुया है। रेट.चर.कें.श्रेट.बक.ट्र.बट.टे.श्रेक.बिचश्रस्थरचेवरतंत्र, रिंट. म्रीश्राभूरास्रात्याराष्ट्रिटान्सरायनेनश्रास्त्रान्ता क्षेत्रास्त्रान्द्रात्यस्य स्थापा ग्री: हिट अदय विषय स्था केर ह्या याद्य व्या सुर विषय स्वापन केन सर नगवःनर्ग्वेतःग्वरःनदेःन्ध्रःभे म्ह्यःस्न्वयःस्न र्टा ग्रॅटर्गरक्षाव्यकार्ट्रट्यार्यर्याक्षात्रः केवेरिष्ट्रेर्या विनयायनेवायायह्ना वाद्धराष्ट्रीयावयाःवियासवानह्न्यायया वीरासरा यरःक्रुनःव्यावनयःवर्वेवःव्याञ्जनयःश्चेत्रं वितःग्चेःत्र्राह्मस्ययःभ्वेःवरः नगरः शेः हेन्द्रितः वावनः। श्चितः श्चरः स्वयः स्वयः श्चरः वीः श्चरः वर्षेतः श्चरः यानरः त्र क्षेरगर्देरः परः क्रुनः श्रेग्राशः क्रुं क्रुन् ग्रीः त्रुरः क्रशः वर्धेरः प्रवेः ब्रेट्ट्या ब्रेप्यानग्राक्ष्यायाक्षेत्राग्रेक्ट्याया सहत्त्र्या (१०५व) सर्वेट्याया र्सेनायान्याचेन पुरस्ति सम्बे निर्दे न्यवः यान्या या श्रीया श्रीत सिर्दे कुषा से यरःगाः अर्थोवः वद्याः श्रीरशः राः श्रेरः वुशा न्यायः थ्वान् न्यायः विवादः विवादाः केर क्षें क्रुवा व्युवा सूर वार्ष्या व्या वी वार्येर क्रिया वर्षे वा देव हेव सूर र्-रेग्-रवे-र्नरःधुगि-क्रॅशःग्रे-ग्राग्शःसवे-रेर-सुग्रशःग्रे-न4र-ग्रुः वह्रवार्यायाः स्वाराज्यार्याराष्ठीः सहरायदेः त्रुः सूरावीर्यायायात्र्यायाः सुहः रे'गवि'र्ख्य'केश'केर'कुश'यर'यह्द'ठेर'। रेग्यार'र्याद्व'त्रया सर्विन्यर्स्सर्वे नदे खूरे नद्वारा नर्से न तस्य न स्वयः न स्वयः । मदेन्नरमें न्न्या कें शहे न्या यानदक्षण यक्त सेंग्रा में ने न्ये न वश्यानगुरःश्चेत्राञ्चवाः तुः सहित्। व्यवः स्ति द्वार्से दः प्राच्याः व्यवः स्वाः व्यवः स्वाः व्यवः स्वाः व्यवः स्वाः व्यवः स्वाः स्व मदेःग्रन्थःस्वदःन्गःयःइसःन्ध्रेन्ःग्रेःङ्यःसन्नुःग्रुनःनदेःर्पेनःन्नः

र्डे पु. कु. कु. कु. पु. प्रमानिक प्राचीता क्षेत्र क्

तर्ते।

तर्ते

रे ख्रिम में प्राप्त के से प्राप्त के स्था के

श्चेन् में रासदे श्वायाया निनाया भेरा सुरान्रायया गान्त्रा निया है। वयर। अःश्चिरःष्ट्रःकःरेन्त्रःवी मूरःवयास्यर्थरःयर्ष्टरःयाक्षरः अःष्ट्रेरःयः सम् हे दिवा वी कुय से म् कुर सं विवा है। दे प्यट से द के सा कुय की वा दूर नकुन्दे असेन्यम्बर्थे देन् सुर्या ग्रीस्य सरदानन्य न्या दिन् यश्रिमान्य विद्या दिन् भ्रीन्यन स्त्री श्रम्य विद्य स्त्रुव द्वा यश नकुन्ने। गन्नः शानेवानी अन्यानि स्वरं निर्मा विश्वासी निर्मन विगान्ययायगार्से ग्रामार्ने हे कुयारेदे नुसा ग्रुमाविमा ने वसारेसायमा नकुन्दर्शें सन्दर्भून्यम। भे र्भून्कुळ्द्रापवनमा शुःरेषा इकुर्ने भ्रेअप्य विवाद गवियागा न हेवाया यया मु मे विया थेट दु कवाया हे दया यशः इसः कुयः ग्रीशः कुः देः ह्रें टः ५ प्रत्याशा वसशः ठ५ सिविदः रः ५ गोः वर्त्रमु अर्के न्दर अर्के द र्षेत्र प्रतिया मु दे रे र्रेश्व पायम द रे रे रे यर्ट्र-क्रियःश्रियःश्रियःश्रियः वर्ष्यया द्यान्यः यथः यथः यथः यथः यथः वर्षः स्र ब्रियायास्य स्था स्थार् नियान् नियान् । १०६व) नियायि नियास्य स्थारान् । वृदःनम् धुयःभ्रः इसमःग्रीमः दमः सुद्दानयः देःसुवा व्रवेः दर्भवः दुः ग्रुदः है। रे.श्वॅ.चग्र.क्रिंगःक्रूरःह्रार्च.च्रारःचीःक्षे.च.सह्य देवराक्षःवहिषाः

हेव'न्नर'सुग'हि'र्चग'रु'सेनशहेश सु'तुस्रश'रा'र्नानहव'न्र'सु'ध्या वर्षिर:र्नर:स्माः भुः सकेर्मित्रेय: सुरा वर्षेत्र:रूपः शुः शुः सुरा ने केरः म्नीट-रामा छो-पी-वट-र्-। विया सर्के प्यव-यामुम-विया । कुय-र्मे गुम्म-रादे श्रीट उत् चु न त्वु हा । कु या से दे न ये से दा न कु या न या । वि या से वा या ग्री-देव-८८:अन्तर-अरदान्नर-वीट-५,प्रमेय। विट्र-सर-भ्राध्यायविरः नश्या गृदे में दा हिर्श्वा वर्षे श्राया क्षु नुते न उत् हें दारे वा विष्यु न हे सदरत्वदर्भान्दावरुभागान्दान्वदानु देवसाञ्चावर्भेन्वस्र र्यायह्रव्रञ्जायकेट्रायाशुक्षायम् वर्शेट्रव्यक्षार्यायह्रव्याधिः विष्येपार् कर्र्यारहेरिको हे तर्वस्थ शुर्वो तर्व विशेष है तह वास्य श्रिक्ष मेनसन्स्यामुयानदेनसूत्राम् श्रु प्रा हित्यर स्था है। कुया से नहें राष मक्तरमेंद्रिः नश्रून मायाश्चे लु सु श्वूना मु सहि

र्स्वाना इस् से नश्च निर्मेश में स्टाहि से से निष्मा में स्वान से स्वान स्वान

सहित्। वित्यस्य स्वर्धि स्वर्ये स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्

ने'यरमात्र्यान्त्र्रेत्राणे'क्यार्ये'वह्यान् ग्रुट्यार्ये केत्रम्यः विद्यान् ग्रुट्याय्यात्रेत्रम्यः विद्यान्य विद्यान विद्यान्य विद्या

ब्रिंग् क्रिया विस्रकार सम्बर्ग द्वार प्राया क्षेत्र क्षेत्र

ने त्र या ज्ञानि विशेष्ट विशेष्ट विश्व विष्य विश्व विष गैर्भाग्रम् नार्वेयानविषा त्रापिरो में भूत्र स्था से संस्था स्था से स्था स्था से स्था स्था से स्था स्था से स्थ यदे नर्से न त्रम्य ग्री न सुन पाउन्। यदे स्व स्य पा नदे से नु सुन सुन सुन सक्त मी सामावित देट से पहेंचा मदे दसद सह रस हुत से द से दस न्ध्रिन्'ग्रेअ'र्नेन्'यरअ'रावे'अ'गुक्'य'न्नर'श्रुर्न्'न्व्य'न्व्यान्वर' नुअ'युक् रेट रेदि नर रु र्पयायाया से वा प्रे से से से रामे प्राप्त विस्था वार्वास नगर से (१०२४) गरेग गेश देंग मुन्दिय छुं य क्रेंत मुन्दि स्था वर्ग पर ने क्षेत्रदर। वनशः इरमें राम्राके वर्षे विरापमभागविवः रुपे विरापमभागविवः रुपे नश्रव रावे सह्या है। सया गुवे अळव र्ने व से गुजा रान्या क्रें गुर गुरे कुयानाविषाप्रवृद्धानार्भेषायानुयायम्। वर्षेदायर्षीपानेरार्द्धेवा नेशस्तर्दिन् बेस् क्षे बुवाश हे के दिर्भ सहित निम् हुवा वी खुन न क्षेत्र नु शुःश्रुव वर् निर्वे माव्या श्रें रा वहिया हेव निर्वा श्रुवा श्रुवा भ्रवा विर श्रेरावहें त् तुरातुरातृ के क्रें तुरातें तुरातु वार्या ते नु क्षेत्राया क्रेरायें ते नस्त्रायात्र्वायाः भ्रात्रायाः स्त्रायाः वर्षेत्रः स्त्रीयाः स्त्रायाः स्त्रायः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायाः स्त्रायः स्त्राय

वेशक्षेपावर्षेत्यमें नदेशे देवियायी शर्ते नुर्ये कुष्ये हित्यदे सुर नश्रव दर्। नवर हे वया ग्री नायर नवे खर नश्रव द्वा नायर हिनाया कुया र्रे मङ्गदे सेट उत्त्वुट । सुर्के समर धेत नर्र न्ना सम्मा माञ्चन् न द्वापार्या सेवाव सेवा सुन्या मिते स्थापा स्वापार्या सामिता स्वापार्या स्वापार् कुषार्थे वेदायरावन्दायार्थेवायात्रे हेतायवेषायस्यायायार्थेवा हुया येत्रभा मज्ञते कुषाळ्ता अदय देशा मह केत दूर देवा अपदित येवा श विवासदी सःसानगदानम् नार्षेत्राचनुषान्तीः सुनानम् वान्यानीनः न्यः ब्रेंदे सेंग्रायळ्यया सु नर्र सें हैं सुर द्या सें यः र्राप्ती क्षेया वर्षातह्याम्नीरावहेरायः विराधरामेर्ग्यायारयाउवावरेरः यादेरया इयाडेवा वी यह दर्शे गुराय र्थे मुरार्ट (१००४ व) दिविष्ट डेया परि रुया ह्याश्चर्या हि। देव श्रुद्रश्चर्य देवे क्रिंद्र विद्या श्वर्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या ह्रिट्रिंद्रिं श्रेष्ट्रिंग । श्रूट्रिंग्य । द्वेर्ट्य वर्ष्ट्रिंग्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्र वर्ष्ट्य वर्य वर्ष्ट्य वर्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष्ट्य वर्ष वरम्य वर्ष्ट्य वर्य वर्य वरम्य वर्य वर्य वरम्य व न्स्य-स्यायाः सर्म्य-प्रम्यायाः स्थायाः स्थाया म्रोत्राचीया श्रेमा इराया स्थितिया स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स र्शेटास्री वाद्रटास्ट्रिट् कुलार्शे सुटावी याद्य याद्य टायवराद्या देया की या

कनर्देना हु न दुना परे सदय बद नी द्रमय सुन सुम कें न स द न । हि क्ष्र-हि'सदे'न्ग्रीय'वर्षेर-सेट'वो सेंदि'नुदे'सम्वेत्र'यर-सुन्। सददः वनम्भास्त्रवर्त्वा डेवा उर्तु रूट वीर वहें व पवे होट सें दी हैं दिया क्रॅन'र्रे'सेन'सून'रेदि'खुर'नक्ष्रन'प्या श्रेर'पर'सवद'न्सम्'यन'नर्न समयः साथः नहं सू हिते सूया प्रते कुया में विवा है में निस्सान में यार्श्वे राजायतुराः वेयान्यराजये जन्मार्थे सुमान् रे हे से वे से नायर क्रिंयान्य उत्राधित प्रमास्य विष्टा विष्टा क्षेत्र व्यवस्था विष्टा क्षेत्र विष्टा विष्टा क्षेत्र विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा क्षेत्र विष्टा वि हे निर्व र्रेव यम मी निर्वर में भावमें निर्वर में वर्ष निर्वर में वर्ष में वर्ष कुलार्सराञ्चे नान बुदाव्यायवानि वे के दिनान कुर्यान कुरान के नाम किया है। यादःवियाः वः सयः ग्रीः भ्रीः र्वे स्टाः हस्य शःग्री सः श्रीदः प्रवे ः सूदः रहे यः सुदः सः समय: द्वाः क्रुटः दुः नश्चेरसः यः दे विष्यः स्वाः या दे । प्यटः ग्रुटः श्वेषासः दे रः र्शेनानी कुयानिस्र सार है के दारी जार सारो दारा पेंदा रादे पा कुया के रेंदा र्कें प्राचित्रम्यम् राये वर क्वा र्हे वित्र ग्री न्यें द में प्राचित्र के त्या है से जा नृदेःनः श्रुवः सुरुषः धरः श्रुवः श्रुटः नदेः गुरुषः या श्रुवः या सुवः ये । वे निः वे निः वे । हते से त्य (१०४व) विष्ठ्रम्य। अळव चे में त्य प्रते कुम निष्य या राष्ट्री। न्ग्रान्या न्युया श्रुया व्यव स्वतः ये स्त्र्त्त्र विश्व वि

विवासिय प्रमामा केवान्या प्रित्स्य वरार्दे।

ग्र-१८मग्रासम्स्रास्त्रे माव्य-र्नेत्र-१.५शुर-क्रे-१ सुख-नदे से देवस ग्रद्रासर्वे देश ग्री द्वाद वदे रहे या विवेद दु पद्वा पर सह द पा दे रहे रा हिन्दी ने अन्यावरावर्तर अर्देन स्वर द्वान प्राया १००४ न) स्वया र्रे के न न अरु मित्र र्रे केश न्द्रश्रेन् सुन्तरे न्या स्त्रा स्त्र न्या स्त्र स्त्र न्या स्त्र न्या स्त्र न्या स्त्र स्त्र स्त्र न्या स्त्र स्त् नःयःनर्हेन्यःन्यायःन्भेषायःयःभेन्यवेःश्वेनःहे केन्यवेःवावनःन्ननः र्गुरने। वरावार्अर्देरायम् द्वाराय्यायारम् यापराह्ये रामेरा भ्रमभा नन्गानावम् नहे नदे भ्रेन् भ्रम्भ ग्रीभ में क्रिन दे भें में पिर पिरे वित्र र्जिस कें अभेर पर वित्र क्या वित्र र नाय कें पाय कर <u> 5 अ.च ब्ल</u>ुस्थायरास्ट्रां सार्या जेवायासंदेखार् स्थान् स्थित साक्षानुदेश्ह्या बर:र्रे। ।

विशास्त्रप्तम्भ्रम् ग्रेम् ग्रेम् वित्तम् व्यापार्थे ग्राम् विशास्त्रम् ग्रेम् वित्तम् विशास्त्रम् श्चर्तिःश्चेत्रान्याः सहत्राः र्रोग्यायाः नश्चरायतेः श्चेत्याः नहित्राः दे। हिरा क्किंट्र निवे किया में किंद्र निव्यक्षिया में यहिया या या यही मार्चे मार्चे विया थे इस्रमास्त्रीर हिं। स्रिम्स्यार्थि क्रिं केत्र त्रुवा याविर प्रम्केरमार्थित या इसमा कर्नारक्षयार्समाननेनारादेर्समानहेना वेंसार्स विषायः विषा । ष्रमायः विषे । विष्ठः विष्ठः । विष्ठः मुन्योश विस्वार्क्षिया शुस्र एपुरान्य स्था श्रुवारा है या राहे सर्के विस्वेर स्था स् श्रेगा उत्र श्रे । ध्यय पुरित दे । के दे । के दे । के दे । विग सद्यः बदः के वदः चुदः वस् ववा रेविः वर्षि सं ची सः धिदः इसः पदः वक्षस्यः मश नमून मं ही निर्वा मर हियान हैं रावा महेन (१०६न) माया र्य्यात्ररतियेत्रप्रश्राश्चित्रत्यात्रियात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या र्रे. पर्ने हेन ग्रीया नश्रवाय विवा श्रवाया श्रवाया श्रवाय श्रव्याय श्याय श्रव्याय श्याय श्रव्याय श्याय श्याय श्रव्याय श्रव्याय श्याय श्याय श्याय श्रव्याय श्रव्याय श्याय श्याय श्रव्याय श्याय श र्र्स्-सर्वे मिर्प्त्रिं रहे। क्रून्याथ्व ग्री कुष्यार्र्स् क्राया म्याये निष् र्रे खू मदे खया नु निहर न निविद्य के ना मुदे न्यमा वि म्यम निवे न्र न न करा रासिटानी खूना सर निहा । ११ सुँग शासा सर्वे ते सह तर्देन । १९ नसूर्याने के या श्रेन पाने या थ्वा श्री द्वा अरवा वन रया द्वा या ने प्रमा

नश्चुम्या नेयाग्रीयाष्ट्रीयान्त्रयाग्रीः मुयान्ययाशुः र्त्रेता नर्येन व्ययाग्रीः क्रियायाक्च क्रियायदे प्रयाद क्रियायक्षेत्र यक्षुयया विष्णुया क्री हैं हे या प्रयास राष्ट्रियाञ्चरावी वाद्धवायवा विरात्ता क्रिया ख्रवा गुवाकी केंद्रा प्रवात निर्वात होत् बुद हे नर वर्षेत् परि दय से र सहत परि के सारी कुयारे के दि र सक्त्र-१८-जम्मा-भ्राम्यास्त्र-सर्मिन्य-स्त्र-स्त र्रे प्राययम्ब स्थायम् कुषानदे स्री म् प्रायम् ने प्रायम् । धेव वदरा र्रेन् ग्रेन् श्रेन् श्रेन श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन श्रेन् श्रेन श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रेन श्रेन श्रेन् श्रेन श्रे नगरन वुरन्यम। नम्भन श्रेन अवयन्ता नगर यह सन् ववुर नवे हेन वर्तेषावर्तिम । दे अन्य अर्ते द दर्द के द के द से अवव द मा अदव दें मा हु कुमा सदि सक्षत्र स्थाने वा वा स्वार त्याय विवा हुत तर्वा । स्वार विवे देवा । सर्ळे विराधिराधिता दे प्याराचराविस्र सार्था चे रे देव प्याराधिता गुवा यदिवात्रास्यानिदायदे हे या शुः वृग्ययाया सम्यादान्या हे निस्य र्वेत्रवित्रञ्चेयानायानहेत्। याधियार्नेम् न्नायायवेत्रमानु न्युरः विषयः इस्रायनेव । सदयः दनद्रशासयः केरः त्रुर्य। (१०६न) स्वायायनुवाः त्वान्य द्वानेवा प्रदेष्ट्रेयाया ने मे प्रदेश स्वायायवा नद्रन्द्रम्भूश्राम्बर्धश्राम् योटाचीश्रानशूर्वश्रश्ची स्वाश्रामुद्र र्भ। विचाले वार्षे निचान म्यान माने वार्षे व र्रेर-पेर्यासुन सुन । सी निर्ने निर्मे मुन्यम् निर्मानिस निर्मानिस निर्मा यान्यो । गारावर्ष्या । स्र्याः स्ट्राराः स्यायाः श्रीः सः न्येत् । विस्रयः ने न्यः क्रम्भायहें व हे स्टायाव्यास्य स्थाय स्ट्रास्य त्या स्ट्रास्य स्ट् इस्र भी अर्दे र में प्राध्य स्वा वेर गुरु वर्त्त सुर सुर स्वर स्व न्तुअःग्रह्मा र्स्तिम्अःन्स्मा केंग्रियायः यन्ययः सम्स्मिन् नुस्ति वायः स वै। अदयःदेशःश्चः अळेदःग्रेःगित्रेरःश्वदःद्य श्वदःसरःगद्गारः श्रुवःग्रेःवेः न्तरातुषः वात्रयाह्यायादेत्।त्याराञ्चारेत्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्यायाद्याया विष्या हिर श्री र स्थापित स्थापित स्थापित स्था में व श्री स्थापित स्था र्युश्राचार्यरक्षेत्रविचात्र्ये. इस्रश्रक्षात्रचात्रच्यू ३ श्राचाय्यात्र श्राच्या व्याम्बार्याक्षेत्रात्विदाः व्याप्तम् वित्त्रात्वे न्यान्यः न्यायः न्यान्यः न्यान्यः न्यान्यः न्यायः विया यी कर मार्थे निर्वाचर दु त्वन विश्व है सार्टा ल्या है या सुदी या है रा श्रुवावाश्रुवानुत्रावितानु वर्षितः ने श्रीतावितान्य वर्षात्रा श्रीतावितान्य वर्षात्रा । रुषाह्रम्या या प्रदार सक्ष्र स्था सम् । प्रदार स्थित स्था स्था । या स्था । य नन्यमाने। क्रें सेंग्रामानेन हेरे सबर मुगाम छंन ननर नुम्मा छ हात्वानानिकारावे हेराया नेंद्र नेंद्र केंद्र ग्राम्याक्तियान्त्री मिर्मे मिर्मे स्थान में मिर्मे स्थान में मिर्मे स्थान स्य स्थ्रियाशास्त्रम् स्थ्रियास्य स्थ्रियास्य स्थ्रियास्य स्थ्रियास्य स्थ्रियाः स्थ्रियास्य स्थिते स्य स्थिते स्य स्थिते स्थि

देश्यद्रम्भ्रम् प्राप्ते क्षेत्र क्ष

ने प्यत् कुषान र्हें त्रावाय के त्रिति श्रुवाय हेते न तुन् हे वात वीया वाया न वाया न वाया के त्रावाय के त्रित्व क्ष्य के त्रित्व क्षय क्ष्य क्ष

अ**द्य**5'55'1

स्वास्त्रम् । विद्यान्यस्य स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्यास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास

णान् हुन्द्रन्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर

रि. खेश क्षेत्र शर्ते र खेश्रयाययात मिटा त्यारा के या स्वर देगा परे छ । या र ग्वियाकें भ्रेप्ट्राया प्रवेश्यवया प्रयाप्त स्वेप्त्र्य या प्राप्त स्वेप्त नशः अन्यन् वर्त्ती नः नेव पुर्ने वि । इं में र पी खुश वरेवा हैं पी श नेश हुदे अपिद ल दर्शेन के ल में है निवेद अधुन्द हुल अदि स्वापि से र ही व्यास्त्र विवासीया । क्षावेराया श्रीवाया वारा द्विताया या विदा वर्ते श्वर इस न्ध्रें न रहे वा निर्देश रें न प्रवासी में न प्रवासी में निर्देश रें न प्रवासी में वर्षिव देवाया क्षत्या र्याचाया या सूव व उत् श्रेत प्रवे हे से गुव हु भ निवे केंद्र वहीं व स्वाय केंवाय हम्म श्रीय । स्वाय केंद्र केंद्र केंद्र स्वाय केंद्र क য়ৢয়৻য়য়ৢয়৻য়য়৻য়য়ৄয়ৢয়৻য়ৼৄ৾ঀ৻য়ৣঢ়ৢয়ৼয়৻য়৻য়৻য়য়য়য়৻ঢ়য়য়য়ৢয়৻ भूतरागशुरापाइरायायायायायाः धेरा हो राक्तुं भूर हिंया हो या हो या हो या विकार शकेत्।(१११त)श्चिरः निर्देशकेशाध्व कुषानाषा शृङ्घाषी खूँव पदि निर्देश मुलास्रवःगुवःग्रेशः ह्वः ज्ञाना । ५:२:गाः धः अग्रेवः ८ ग्रुट्यः विस्रयः परिस्रः ८. र्स्साका स्रोते : व्याप्त स्वाप्त स न्र-नव्र-प्रवे सुया हुर-न्गव क्रूँ व नवर में या आही न जी खेर में दे वे व न्नः सुः वः सेन्।।

श्रीन् विदे विस्तर्भ ग्री स्थायस्य प्राप्त स्था । मुलान्तर पो भी सा विस्रभाद्यो प्रदेश्च दुवा क्रान्था हिस्रभाद्य गुरुषा स्राप्त सहिरा यद्र-यद्वेद-रमाया । व्यानमृद्यः दयायायदे र्भ्रेद्राचे से व्याचा । व्यान हैंग्रथाविषासंदेश्वरास्ट्रिन्थ्यायाणुःधेया ।सर्वानदेवे दिन्द्रान्यारागर्वेदः वु देर व्याप्यायाया । श्रेर प्रचंत प्रो प्र इते येवाय प्रथ ह्या है ये उद्या व्यवाश्चित्रस्तिः देश्या श्वराविः विवाया श्वरास्य स्वराक्षेत्र स्वराधितः र्क्रेन क्या । या स्वेते र्क्रेन या शुर्य दिन या स्वेत्र स्वया स्वेता । विष्य श्वेत्र या स्वेत्र नक्षर्याः भूवाः भूवेः श्रेयरा तकटः देवाया विवायः ग्रुयः सूटः नः वर्वे वाः केः विः ब्रूटाञ्चेश विचयास्त्रियास्त्रीयास्त्रीयाचयाद्वी विचरा मुलायरमारवे मालागुन हु त्वम् । मलायवे बुम सुन सुन हो माने माने कुषायळ्वाव्यायाची से हिराद्या । याद्याय्वर राचवे देयायया ही रेवा नम्या । सन्त्रान्त्र्यान्त्र्रम् तस्त्रम् होत् न्यान्त्रेते । सन्ति सम्पर्वा यदे नर्र रे के में द्राया में द्राया में प्रमान के मार्थ क्रेंनशक्ष्वःभ्राम्वरमावेशःमाश्रादिनःभ्रूमा । देवःवेवःनत्वः ग्रीःदर्निः (१११२) मुरः सददः श्रुरः नदी । सः द्वरः कुषः रेदिः में सरः म्वयः ग्रीः

सर्वेदमा । श्चिं त्यम् प्यद्यापि श्चें त्या त्या त्या । श्चें वें मान्या नभूर भे शेर्पा से गु। । के स भूत तुं त स शें र भूत सम्मा गीय। । नेर वनरमायन्यान् मान्यान्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विष्यत्य विषय्य विषयः विषयः विषयः मैशक्तिन विश्व विष्य विश्व विश्य विश्व विष यिष्ठेशःश्रवःग्रीशःशःवाद्धवाःनेदशःपदिःयष्ठम। । ५८:विवाःवह्रशःतुःवाशेमः शुःलिर्दर्स्यःधेश । अववःक्रें प्रवृत्तिः भुः दिरे प्रवाः प्रव्याः । प्रयोशः भूँ अ'ग्रन्द्र-नर्भ'अवर्रासुर्भाहे'निवेदासुर्भा निक्र्या'तुर्भ'य्य अ'य्द्र्यास' र्रेयार्क्नेयारावे नाध्या । इसारारान्डेसारावे सर्वे त्ये दाविनानी सानक्ष्या। यव डेवा सेव पर वा नेर वि दसर दिन ग्री शा विन साम ने मु सर्वेदे सबयः सुः धिनश्रा विशेषः सद्यः हूँ नशः यः सुविशः वहें सः वहें सः प्रदेः सहित। विश्वताः प्रिन्ध्यायहतेः श्रीत्र गुव्यत्वोः श्रीव्ययः श्री विश्वरः वयः इयः श्चेत्रन्गर्सदेश्चेग्रायायत्या विह्मान्तेन्न्यायदेश्चेन्त्रंवास्त्र वुरा । अर्वेद रेदि अदय वद सुद र्के वार्य दर्वे र गुदा । नर्गे द पर्य हिन्द्रयाश्वास्त्रम् विन्द्रम् विन्द्रस्य श्रुश्वा । क्रेन्द्रम् स्राप्तर्मा विन्द्रस्य विन्द्रम् विन्द्रम् गर्द्वास्त्र-उद्या । धःरवराद्वादः स्र्र्वः इस्राचग्रदेः गर्नेवाः क्रवरादेस्या । ग्रेः अर्चेशन्यश्वाचित्रः द्वा । । त्वापि वट वेट हैं वाश्वाचित्र नवदान हुट मेश । द्वें न विट्यायदे देग्या थ्व सर्वे देवे विट्याया

लूटशावर्षु कुंचारा भिया सर् विदालदा । कु कि विवाय पुरा कुंचा थी। नेशन्ता विशेरःश्चेतिशःश्चेत्रः दुन्तःश्चेत्राशःश्चित्रः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः न्दान्यन्तिः भ्री न्यान्यात्रके (१११व) न्या । तक्ष्यः स्ति स्ति स्ति म्राया विष्या विष्य र्यतः विस्तु सन्दाविन सम् दे। सि सहन स्रेन्स पर्वे मानिम या सहयः श्चरणरा विदे श्वेदे सुद र्क्षेष्य राज्य नुवास दे स्थान् श्वेद्र स्थान विद्या स्थान र्यादिया वात्र रायदे सुर्वे वार्य प्राप्त । श्राम्य विद्या के विश्व व्याप्त विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व वर्तेत्। विरम्भः स्वार्थः क्रुम्भः सर्वेतः वर्षः वर्षः । वर्तेवः पवेः इसः वर्तेन् नेशन्त्रास्य स्थापा । न्स्रश्यार्य न्यारेगा स्रम् कु नदे में सम्मार नविया वियायायन्ति सिम् श्री अस्थि नवे स्रोग्यायस्य अम्। वि स्यायावि यः इटारेंदि कुट्रइटशावशा विग्राशायन्त्र विद्यार्थ विश्वास्त्र । उवा । शे. ने शः झें र अ प्रते श्वेर त्यः से वा शेर ग्राम् । वा श्वर वा व श साव श मश्याम् स्थान्य । विष्याम् । विषयाम् । विषया इयाग्रुसार्धेरम्भः सुः हैं गमापि सर्वे सर्वे देश कुयार्वे गिर्दे प्यूरे द्वरा रेसामर:बुँदायानसूनाया:क्षेत्राःसुदेःसुप्तानानुनःसेयावियानयापाः रवश्यत्व अदे।व क्व श्वेय येवाश वदी। विश विदे स र्सेट धेट अर्दे र

यहिर्स्सित्रीय। सि.यन्यायाशुर्यो रि.वे.स्रम्इ.र.धेस्यम्भूत्यःक्षरः न्धन्याशुस्रान्यायि वक्के सेन् सुरायि यहि नश्चन । यान्या उत्तरहेत यदे-दिश्चे-शी-यद्यास्य-त्यमा । भू म्यू मायायद्य प्रदेश-विमाय्य इसमा दिस्मळरमान्यामी लेग्यान्यन्तर भ्रेयावर्दे न वा दिन मेर निम् ग्री मु अ रेवि द ग्रुट्य प्रदेश । श्रुट्य प्रस्त गुत्र ग्राय यहे या यदे । र्तिरःश्वाःश्वा । उदःसञ्चतः विशःश्वीः श्ववः सळस्य सः विशः विश्वा । देशः याश्वराह्याराद्यःलटा हेर् हें हे शिकातयशा लिट्या ही वायटा (११४२) ये छ या सदि ग्याध्य । वि श्वास्त्र । वि श्वस्त्र । वि श्वास्त्र । वि श्वस्त्र । न्यासंदेख्युन् स्थाने । क्रिया । क्रियामान क्रियामान क्रियामाने देवासंदेश र्यः न्यारः देः व्याः धेर् श्रीः अपिर्। विश्वतः वर्षे श्रः खुः खुदेः वुः धेः श्रः श्राशा । श्चे मुदे हें व से स्थापन पानियायाय प्रेय वन् । यो यायाय पन स्थाय प्रमान प्रमान र्भे अ-दुरुअ-वर्द्धेद-रेटा | वर्ष्ट्र अ-तुवे-व्यट-र्क्ट-दूर-वर्ष-वि-वि-वी अ । हेर्स्यळॅव्याप्रमाये वेर्र्यायहेव श्रुरिया गुवा इतायगुराद्या स्थारी हेर ८स्यानित्रमा । प्रोप्त द्वारे विस्रमा श्री मार्के प्रमानित्रमा । यव निर्वेशन निर्वाय निर्वेश स्थित स्

नक्त्री विर्मे निर्मे निर्मे

डेश'ग्राट्य'रेय'नर्भेर'नदे'र्बे्ट्य'शु'यर्केग्'ग्राश्य'द्य'पर गित्रामी भूत्रा शुरदे वा इसायदेव वसाय दिए सुरा सेवा प रेव-र्य-के-व-सुन-तुन-र्यम्थान्न-न्य-न्य-न्य-वि-र्य-व-र्युन-प्य-अर्चि देश ग्री मुल र्सेन स्थया पर्चि र्नेन प्रमेन प्रमेन स्था भून गर्वेव वृते नगर द्वेव नधेन ग्रेन ग्र र्द्गेनशःग्रीःन्नरःसुगाःनसूनःवहेत्रःकेशःग्रीःकुषःसेवैःनग्राशःनसूषःनरः नहेता नगवः केससः नगवः विवास हि । केतः से विः क्रें मा सामसः मिरेः न्नर सें वर्षे अ वें नार्वे व वु न्रथण न्र । क्या प्रवे ने न बेर सें न अ । सुर अ व्या ग्रे भेगा रहर इससाया विवासे रात्या विवासे स्वाप्त से सारेग साम से वारी हिर्यासेन् सुरिक्ता में से नाया स्याप्त स्थया स्थया नाया नावना इर वर नसूत्रायालुग्रायायाकु अळत् नेयात्रायी देंगापदे न्रायां वितायामा तवर क्षेत्र ग्री ग्रीय राष्ट्र शवद इस्र शत्य क्षेत्र श्रीय राष्ट्र शास्त्र शास्त्र या श्रीय श निद्रा नडुः श्रमा देना प्रदे मान्या वा क्षें के का भी प्रह्मा प्राप्त क्षें निर्मा प्रदेश बर्देराग्रीशरेग्रायशर्थे कुश्रुशतिये पद्वापार्याप्यराह्वे प्रवारम् स्त्री श्री विषय स्त्री । । स्त्री स

सर्च.जू॥॥

वसुवानेन स्वेनाम में सेर सून नसर वहसान ग्रम्स नस्या